बेचारे ने जवाब देकर फंसाया इस्लाम को!

प्रमाणिक तथ्यों पर आधारित

लेखक: पण्डित महेन्द्रपाल आर्य

वेचारे ने जबाव देकर फसाया इस्लाम को

-:लेखक:-

पं. महेन्द्र पाल आर्य (पूर्व मौलवी महबूब अली)

इमाम बड़ी मस्जिद, बरवाला जिला-बागपत, उत्तर प्रदेश

वर्तमान पता

26-ए मीठापानी, अग्रनगर प्रेस नगर-3

नांगलोई, दिल्ली -110086

महर्षि दयानन्द के देहान्त के पश्चात् आर्य समाज में अनेक विद्वान और शास्त्रार्थ महारथी हुए और वेद के, दर्शन के और इतिहास आदि के विद्वान आज भी अनेक हैं। परन्तु अमर स्वामी जी और रामचन्द्र देहलवी जी के पश्चात् कुरान और बाइबिल के विद्वानों का लगभग अभाव सा हों गया था। कोई ऐसा व्यक्ति नजर नहीं आ रहा था जो मौलवी और पादरियों को शास्त्रार्थ की चुनौति दे सके। परम पिता परमेश्वर की असीम कृपा से आर्य समाज को पं. महेन्द्र पाल जी जैसे विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी मिले। जिनके व्याख्यानों और शास्त्रार्थों को सुनकर आर्य जगत् ऐसा अनुभव कर रहा है कि जैसे ईश्वर ने महेन्द्र पाल जी के रूप में रामचन्द्र देहलवी जी को भेज दिया हो। वर्त्तमान समय में आर्य जगत् में ये मात्र पं. महेन्द्र पाल जी ऐसे व्यक्ति हैं जिनके नाम से ही मौलवी और पादरियों के होश उड़ जाते हैं। पं. जी की यह पुस्तक **वेचारे ने जबाब देकर फंसाया इस्लाम को** यह पुस्तक को लिखकर पंडित जी ने मौलवी के होश उड़ा दिये और इस्लाम के आलिमों को उनके सवालो से ही उनको घेराबन्दी कर दिया जिससे इस्लाम निकलने के दिशाविहीन हो गये। यह पुस्तक अनेक लोगों के लिये मार्ग दर्शक सिद्ध हुई है। कुछ आर्य विद्वान् जो लकीर के फकीर बने हुए थे, इस पुस्तक को पढ़कर वे सोचने को विवश हो गये हैं। और कई मुस्लिम युवक आर्य समाज की ओर आकर्षित हुए हैं। वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार के लिये ऐसे विद्वानों की आवश्यकता सदा से रही है और सदा रहेगी। आर्य समाज के विद्वानों की समझोतावाद की नीति के कारण मुल्ला-मौलवी सर उठाने लगे हैं। ऐसे सभी सर उठाने वालों को पं. महेन्द्रपाल जी ने चुनौति दी हुई है।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि महेन्द्रपाल जी को आपकी कृपा से जहाँ वेद और कुरान का ज्ञान कुशल वक्तृत्व कला और शास्त्रार्थ की कला प्राप्त हुई है। वहीं आप महेन्द्रपाल जी को दीर्घायु भी प्रदान करें । जिससे वेद के शत्रुओं और कुतर्कियों की जुवान पर ताला लगा रहे ।

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

पुस्तक सहयोग में आभार

मैं ईश्वर की कृपा से 22-23 वर्ष पहले ही विभिन्न पत्रिकाओं के माध्यम से अपने विचार समग्र आर्य जगत् को देता रहा। ऋषि सिद्धान्त रक्षक पत्रिका मासिक का मैं पाँच वर्ष तक सम्पादन करता रहा आर्य जगत् में स्पष्ट वक्ता व लेखक के रूप में लोग मुझे जानते हैं।

इस काम में आज सफलता हाथ लगी है। मुझे लेखन कार्य व इस लेखनी को समस्त नर-नारियों तक पहुँचाने में सहयोग ब्र. विमलेश आर्य एवं स्वामी ओमेन्द्र कृष्ण जी , श्री आचार्य भवभूति जी की देख रेख में यह पुस्तक को मैं आप सभी के समक्ष रख सका । सभी सहयोगियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

यदि पुस्तक में किसी प्रकार की त्रुटी हो तो कृप्या निःसंकोच सुझाव देकर कृतार्थ करें और इन त्रुटियों के लिए मुझे क्षमा करें।

पं. महेन्द्रपाल आर्य

दो शब्द

आज से कई वर्ष पहिले मेरे द्वारा तैयार प्रश्नावली **"इस्लाम जगत के विद्वानों से कतिपय प्रश्न! सही जवाब मिलने पर इस्लाम स्वीकार"**, इस लेख को हमारे जानकारों ने नेट पर डाला था. कुछ दिनों के बाद मेरे पास, इस्लाम एंड हिंदूइस्म साईट की ओर से मुशिफक सुल्तान का फोन आया, जिस में उस ने कहा "मैं आप के प्रश्नों का उत्तर दे रहा हूँ"।३ सितम्बर २०११ को नेट पर ईमेल द्वारा, जवाब कई पृष्टों में मिला. मैं हस्त लिखित जवाब अग्निवीर साईट पर भेज दिया. उन्होंने टाइप कराकर अपनी साईट पर डाला और मुझे भी भेजा. बहुत अच्छी टाइप न होने हेतु कई लोगों ने मुझसे पूछा और हापुड़ के अनवर अहमद जवाब देने हेतु, मुझ पर दबाव बनाता रहा. यह सवाल मेरे थे. जवाब उन्होंने दिया, फिर भी मुझसे ही जवाब मांगने लगे. अनवर अहमद ने उसी जवाब नामा को UP तथा दिल्ली के कई आर्यसमाजों में बताने लगे कि "महेंद्र पाल को क्या आप लोग विद्वान मानते हैं. जिन से यह जवाब नहीं दिया गया" अर्थात मेरे खिलाफ आर्यसमाजों में गलत प्रचार करने लगे. इस के बीच कई बार मुझसे मिलकर भी इन्ही बातों को दोहराते रहे ...कि "आप वेद नहीं जानते हो" आदि...

मैं अपने कार्यक्रम में व्यस्त रहने व कंप्यूटर की जानकारी कम होने के कारण पुस्तक का रूप देने में समय लग गया. लिखित रूप में जवाब देने में भले ही देर लगी पर, डांवीडी में मैं उत्तर कब का दे चुका हूँ ..जो यू टूब में देख सकते हैं. फिर भी मैंने अपने प्रयास से टाइप किया उत्तर कई पोस्टों में, फेसबुक और वैदिक ज्ञान साईट पर इस्लाम एंड हिंदूइस्म को दे चुका हूँ . इस के बाद भी, मुशिफक और नीर मुहम्मद दोनों ने नेट पर आनलाइन

प्रोग्राम रखा. जो एकतरफा होने के कारण, मैं उसे रोकने में विफल रहा. फिर मनमानी प्रोग्राम उनका चला. मुझे इस का जवाब देने के लिए, कई लोगों ने कहा. उन लोगों से मैंने वादा किया. इसे पुस्तक बना कर जल्द पेश करूँ गा..

अतः मेरे एक घनिष्ठ मित्र के अथक प्रयास और सहयोग के बल पर यह पुस्तक आप की सेवा में प्रस्तुत है. इस पुस्तक में कुरान और हदीस के जितने भी प्रमाण हैं, वह मौलाना थानवी, मौलाना मौदूदी, मौलाना फारूख खान, मौलाना अहमद अली एवं मौलाना जूनागढ़ी और अनेक इस्लामी जगत के विद्वानों के हैं. अर्थात इस पुस्तक पर दोषारोपण करने से पहले उन लेखकों पर दोष लगाएं जिन से मैंने प्रमाण लिए हैं. इस पुस्तक लिखने का उदेश्य मात्र यह दर्शाना है कि "कुरान से मैंने खुद को अलग क्यूँ किया" पाठकगण से प्रार्थना है, इसे ध्यान से पढ़ें. अगर इस में कुछ कमी रह गई हो तो, सुझाव देकर कृतार्थ करें।

पं. महेन्द्र पाल आर्य

मेरे पास यह जवाब आया, नेट की मार्फ़त सितम्बर 03/2011 सुबह 9:13 मिनट पर। मैंने जवाब सितम्बर में ही दिया, अग्निवीर साईट को हस्त लिखित भेजा उन्होंने टाइप कर ईमेल कर दिया मुझ को और अपनी अग्निवीर साईट में भी लगा दिया जो मेरी साईट www.vaidikgyan.in में आजभी है,फिर मैंने DVD में भी जवाब दिया,किन्तु निरंतर कुछ लोगों के फ़ोन आते रहे मेरे पास, कि आप ने जवाब नहीं दिया, जो मतांध लोग देखते नहीं और खामखा प्रलाप करते रहते हैं, इन मतांधों में पहिला नाम हापुढ़ से अनवर अहमद का है। मैं किताब के रूप में जवाब दे रहाहूँ। मेरे सवाल क्या हैं उसने जवाब क्या दिए, मैं दोनों लिख रहा हूँ। जिससे कि दुनिया वालों को भी पता लगे,सही क्या है और गलत क्या है? यह जो डींग हांक रहे हैं, कि महेन्द्रपाल ने जवाब नहीं दिया, जिसका हेडिंग है "पंडित महेन्द्रपाल आर्य के प्रश्नों के उत्तर" लेखक: मुश्फिक सुल्तान। यह कापी उन्हों ने सार्वदेशिक सभा,अग्निवीर,आर्य समाज जामनगर को भेज दिये हैं,उस में यह लिखा....

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

(شروع کرتا ہوں میں اللہ تعالیٰ کے نام سے جو نہایت مہربان بڑا رحم والا ہے)

"अर्थ: (उसने जो लिखा)अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील और अत्यंत दयावान है।"

इन्होंने इसका अर्थ ही गलत लिखा। यह लिखा अल्लाह के नाम से? पर अल्लाह के नामसे क्या! उद्देश नहीं बोलेंगे तो वाक्य पूरा कैसे

होगा,यानि अल्लाह के नाम से हम क्या करने जा रहे हैं, नहीं बोलेंगे तो बोलने की सार्थकता कहाँ? तो इस वाक्य का सही अर्थ है शुरू करते हैं अल्लाह के नामसे जो रहम करने वाला, महरबान है(इस लिए ऊपर मौलाना थानवी का उर्दू में अर्थ दिया गया है)। कारण कि हम क्या कर रहे हैं, अगर नहीं बोलेंगे तो करने का मतलब नहीं निकले गा। किन्तु ऋषि दयानंद ने जब सवाल उठाया, कि एक अल्लाह ने दूसरे अल्लाह के नामसे शुरू किया तो अब इस्लाम के विद्वान अर्थ बदलने लगे। यही अर्थ फारुख खान ने भी किया है, किन्तु यह अर्थ गलत कैसे है वह मैं बता दिया हूँ। आगे लिखा...

"प्रिय मित्रो कुछ समय से इंटरनेट पर पंडित महेंद्र पाल आर्य के १५ प्रश्नों कि अधिक चर्चा थी, आर्य समाज कि विचार धारा के लोग इस प्रश्न पत्र को प्रचारित कर रहे है,और इस प्रश्न पत्र के उत्तर कि मांग कर रहे है,जब हमने इन प्रश्नों का अध्ययन किया तो पता चला कि अधिकतर प्रश्न स्वामी दयानंद सरस्वती कि पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के १४ समुल्लासऔर बाबु धर्मपाल आर्य कि पुस्तक तरके इस्लाम कि ही नकल हैं।बाबु धर्मपाल ने भी पंडित जी कि तरह इस्लाम को छोड़ कर आर्य समाज को अपनाया था,लेकिन बाद में मुस्लिम विद्वानों के उत्तर से संतुष्ट हो कर उन्होंने फिर से इस्लाम स्वीकार कर लिया और अपना नाम गाजी महमूद रखा। प्रश्न पत्र के आरम्भ में पंडित महेंद्र पाल ने लिखा । इस्लाम जगत के विद्वानों से [illegible] प्रश्न सही जवाब मिलने पर इस्लाम स्वीकार।आगे मैं पूरा विस्तार से लिख रहा हूँ जो मेरा सवाल था,उसने जो जवाब दिया,उसका उत्तर मैंने क्या दिया है। जवाब देने से पहले लिखा,हालांकि सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास १४ का इस्लाम के विद्वानो ने पहले ही विस्तृत उत्तर दे दिया है और हम भी अपनी वेबसाइट पर नए तथ्यों के साथ उसका उत्तर देरहे हैं;इस के बावजूद हम

पंडित जी के प्रश्नों का उत्तर देने जा रहे हैं, ताकि वो ये न कहें कि मुस्लमान इनके उत्तर नही दे सकता। इसके अतिरिक्त पंडित जी किघोषणा में हमें विरोध दिख रहा है।प्रश्नों के आरम्भ में वो स्पष्ट रूप से कह रहे हैं कि यदि उनके प्रश्नों के सही उत्तर मिलेंगे तो वह इस्लाम स्वीकार करेंगे।लेकिन प्रश्न पत्र के अंत में वह कहते हैं,सभी प्रश्नों का सही जवाब मिलने पर इस्लाम स्वीकार करने को विचार किया जा सकता है।"

इसका जवाब है,यह कैसी अक्ल मंदी, सही बात को गलत ठहराना। मैंने क्या गलत लिखा? सही जवाब मिलने पर विचार किया जा सकता है,जवाब मिलने पर विचार करेंगे या बहकी बातों को जवाब मान लिया जायेगा? मुश्फिक लिखते हैं कि

"उत्तर मिलने पर विचार क्या करना है? सीधा इस्लाम स्वीकार करलें, मै आशा करता हूँ कि महेंद्र पाल जी इस उत्तर से संतुष्ट हो कर इस्लाम स्वीकार करेंगे।"

अब देखें उसने अपने जवाब पर ही विश्वास नहीं किया,"*मैं आशा करता हूँ कि इस उत्तर से संतुष्ट हो कर इस्लाम स्वीकार करेंगे।"* इसमें फिर सवाल आ गया कि आपका उत्तर सही है या नहीं आप को पता नहीं चला,तभी तो आपने शायद लिखा,अगर जवाब सही न हो तो, इस्लाम किसलिये स्वीकार करें? अतः मैंने कोई गलत नहीं लिखा, आप ने ही गलत फहमी पाली है। आप का जवाब न सही है और न हो सकता है मैं इसका एक-एक कर जवाब दे रहा हूँ । पहले तो आपने गलत लिखा कि मेरा सवाल सत्यार्थ प्रकाश,और धर्मपाल जी के**तर्कइस्लाम** का नक़ल है, इसका जवाब पहले सुनलें।अगर मेरा सवाल किसी की नक़ल है तो जनाब आप यह बताएं कि जिन हुर्फों में आपने लिखा है यह हुर्फ किसने बनाये, या किसकी नकल है? रही बात धर्मपाल जी की तो धर्मपाल इस्लाम में लौट गये हमें नहीं मालूम,पर पंडित शांति

प्रकाश जी ने मुझे सुनाया,"उन्होंने आर्यसमाजी को चुनौती दीथी मैं लाहोर सभा की ओर से गया तो धर्मपाल जी ने कहा पंडित जी आपतो आर्य हैं,मैं इन समाजीयों से शास्त्रार्थ करना चाहताहूँ।" दूसरी बात जोमुश्फिक ने लिखी कि *"उनका नाम महमूद गाजी पड़ा"*यह कैसे सही माना जाय? कारण जो नाम उनका था मुंशी अब्दुल गफूर उसे रखने में क्या गुरेज? फिर गाजी भी रखवा दिया यह किसलिए? गाजी का अर्थ है फतहयाब,बहादुर,काफिरों से लड़ने वाला,किसी मुस्लिम ने काफिर को मारा हो तब वह मुस्लमान गाजी कहलाता है, तो उनके हाथ से कभी कोई काफिर मरा ही नहीं तो गाजी का होना झूठ है। बहादुर भी इसलिय नहीं कि इस्लाम छोड़ फिर लौट जाना बहादुर नहीं कायर कहलाते हैं।अगर लौटना था तो मुस्लमान किसलिए? इन्सान बनते,एक हाई स्कूल के हेडमास्टर का यह काम कैसे हो सकता था? फिर मेरा विषय यह नहीं कि कोई मुस्लमान बनगया या गैर मुस्लिम? रही बात मुस्लिम विद्वानों के जवाब देने वाली,तो सवाल आज भी वही हैं जवाब दें तो जरा? मैं पूछता हूँ.... जवाब देना!धर्मपाल जी पढ़ाते वक्त बच्चोंको इब्राहीम और इस्माइल की कहानी सुनारहे थे, कि हजरत इब्राहीम खलिलुल्लाह(अल्लाह का दोस्त)ने ख्वाब देखा तुम्हारी प्यारी चीज को मेरे रास्ते में कुर्बान करो।१०० ऊंट कीकुर्बानी दी,फिर ख्वाब देखा, यह सिलसिला ३ दिन तक चलता रहा और१००-१०० ऊंट कीकुर्बानी३ दिनतक चलती रही।अल्लाह खुश नहीं हुवे,फिर ख्वाब देखा कि जो तुम्हारी सबसे प्यारी चीजहै उसकी मेरे रास्ते में कुर्बानी दो। अगर यही अल्लाह है तो तांत्रिक किसका नाम है? यहाँ इस्लाम वालों की मान्यता है, कि अल्लाह अपने पैगम्बर का इम्तेहान ले रहेथे। यहाँ भी इस्लाम के मानने वाले नहीं जानते कि जो अल्लाह सर्वज्ञ (सब जानने वाला) होगा उसे इम्तेहान लेना नहीं पड़ेगाकुरान में अल्लाह ने कहा...

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ

यानिगैब की बातों को जानने वाला। तो अल्लाह अगर अदृश्य बातों को जानते तो इम्तेहान किसलिये लेना पड़ता? सवाल तो अब भी ज्यों का त्यों बना है!

अल्लाह अपने दोस्त इब्राहीम पर यकीन नहीं कर पाए,कि वह अपने बेटे कीकुर्बानी दे सकता है या नहीं! यही तो देखने को अल्लाह ने हुकुम दिया? फिर वह अल्लाह सबकुछ जानने वाला कैसे? फिर दोस्त भी कहा गया तो अल्लाह बिना जानकारी के इब्राहीम से दोस्ती की? जिसका इम्तेहान लेना अल्लाह के लिये जरुरी होगया? अगर यही बात है तो अल्लाह सबकुछ जानने वाला मिथ्या प्रमाणित होगया! अल्लाह सवालों के घेरेमें है! आगे देखिएतो इब्राहीम ने शादी वाली बीवी के बेटे को नहीं, बलकि यमन के बादशाह ने जो औरत इब्राहीम को भेंट की थी जिनका नाम हाजरा था, जिसकी गोदमें छोटा बच्चा था, जो इब्राहीम जिस माँबेटे को अपने से अलग कर जंगल में छोड़ आये थे, जिसके पास न खाना और न पानी था तन्हाई में अपने से अलग कर आये थे। यह काम अल्लाह के दोस्त का है!इस से भी अल्लाह की पहचान मिलती है किएक दोस्त जब अपनी पत्नी (भलेही शादी न की हुई हो)पर बच्चे तो इब्राहीम के ही थेजिस माँ बेटे पर कठोर और निष्ठुर बन कर ब्याबान में अकेले छोड़ देना कौन सी मानवता की बात थी?यह तो अल्लाह और अल्लाह के दोस्त इब्राहीम या उनके वंशजो को ही पता होगाउस के बाद कीघटना को भी ध्यान से पढ़ते जाना, जब माँ बेटा पानी की प्यास से परेशान बेटे को सुला कर माता पानी के लिये निकली मरीचिका (रेत)को पानी समझ कर सफा, और मरवा, दोनों पहाड़ के बीच सात बार दौड़ती रही ***यही सिलसिला आज भी हर हाजी को करना पड़ता है, यही परिक्रमा।*** तो अब माता हाजरा जब बेटे इस्माइल के पास आयी तो देखा कि बेटे ने जहां पांव पटका था, उसी जगह से पानी का फवारा (चश्मा) निकलना शुरू हो गया।अब कोई इनसे पूछें! कि बच्चे के पांव

पटकने से पानी निकलना यह कौन सी विज्ञान कि बात है? यह क्यों और कैसे संभव होसकता है? इस्लाम का जवाब होगा मानो बस सवाल मतकरो? मुश्फिक मियां! आप तो कहरहे थे कि"*इस्लाम के आलिमों ने जवाब दिया है, और मैं कुछ नए तथ्यों के साथ जवाब दे रहा हूँ*"मतलब यह हुवा कि आप अपने को किस तरह अपनी ज्ञान का प्रदर्शन कर रहे हैं? यह धमंड हैयाद रखना जिन्होंने गर्व किया है मिट गये उनके वंश, उन तीनों कुलोंको तुम याद करो रावण, कौरव और कंस। यानि मौलवी सना उल्लाह से आप अपने को ज्यादा विद्वान मानते हैं? जो उनसे भी अलग तथ्य दे रहे हैं? आपने लिखा *जवाब दिया है!* फिर मैं सवाल कर रहा हूँ कि बच्चे के पावं पटकने से पानी का निकलना!वह भी मरूस्थलमें कैसे हुआ?क्या यह मुनासिब नहीं कि माता के सात बार दौड़ने में वक्त लगा इतनी देर में बच्चे ने मूत्र पात किया हो?और यह कुछ हदतक सही भी होसकता है बच्चों में जल्द जल्द यह काम होता भी है, यही तो अन्ध विश्वास कहलाता है।चलो आगे! अब इस्माइल जब बड़ा हो गया तो अल्लाह ने उसे कुर्बानी देने का हुकुम दे डाला।अब इस कुर्बानी से अल्लाह का क्या वास्ता? किसी के कुर्बानी देने न देनेसे अल्लाह का बनता क्या और बिगड़ता क्या है? इन्सान कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में प्रतंतर है, जो जैसा कर्म करेगा उसे वैसाही फल मिलेगा। चलो आगे! बहुत कुछ छोड़ कर आगे गये तो पता चला कि इब्राहीम हाजरा के कलेज़े के टुकड़े को माँ से अलग कर कुर्बानी देने को ले गये।इधर जो माँ इतने दिनों से उस बच्चे को कलेजे से लगा कर रखते पालते आई उन माँ से कोई पूछे उसके दिलका हाल?जो बच्चा अब तक बाप को सही से जानभी नहीं पाया बाप के प्यार से भी वंचित रहा! अब वही बाप अल्लाह का हुकुम मानकर उसी बेटे को कुर्बानी देने को ले गया। जब काटने लगे तो छुरी काट

न सकी। बाप ने बेटे से कहा वह कुरान की भाषा में सुने, जो अल्लाह ने कहा ।

सूरा अस.सापफात १०२-११०

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ إِنِّيٓ أَرٰى فِي الْمَنَامِ أَنِّيٓ أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰٓأَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِيٓ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ فَلَمَّآ أَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿۱۰۳﴾ وَنَادَيْنٰهُ أَنْ يّٰٓإِبْرٰهِيْمُ ﴿۱۰۴﴾ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۰۵﴾ إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿۱۰۶﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۰۷﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى إِبْرٰهِيْمَ ﴿۱۰۹﴾ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۰﴾

جب وہ لڑکا ایسی عمر کو پہنچا کہ ابر ھیمؑ کے ساتھ چلنے پھر نے لگا تو ابراھیمؑ نے فرمایا کہ برخوردار میں خواب میں دیکھتا ہوں کہ میں تم کو (بامر الٰہی) ذبح کر رہا ہوں سو تم بھی سوچ لو کہ تمہاری کیا رائے ہے وہ بولے کہ ابا جان آپ کو جو حکم ہوا ہے آپ (بلا تامل) کیجیئے انشااللہ آپ مجھ کو سہار کرنے والوں میں سے دیکھیں گے۔(۱۰۲) غرض دونوں نے (خدا کے حکم کو) تسلیم کر لیا اور باپ نے بیٹے کو (ذبح کرنے کے لیے) کروٹ پر لٹادیا۔ (۱۰۳) اور (چاہتے تھے کہ گلا کاٹ ڈالیں اس وقت) ہم نے ان کو آواز دی کہ ابراھیمؑ! (۱۰۴) (شاباش ہے) تم نے خواب کو سچا کر دکھایا (وہ وقت بھی عجیب تھا) ہم مخلصین کو ایسا ہی صلہ دیا کرتے ہیں۔(۱۰۵) حقیقت میں یہ تھا بھی بڑا امتحان۔(۱۰۶) اور ہم نے ایک بڑا ذبیحہ اس کے عوض دے دیا۔ (۱۰۷) اور ہم نے پیچھے آنے والوں میں یہ بات ان کے لیے رہنے دی۔ (۱۰۸) کہ ابراھیمؑ پر سلام ہو۔(۱۰۹) ہم مخاصین کو ایسا ہی صلہ دیا کرتے ہیں۔(۱۱۰)

अर्थ: फिर जब उसके साथ पहुंचा,कहा ए बेटे! मैंने ख्वाब देखा है तुझ को ज़बह करता हूँ, इस पर तुम क्या कहते हो? तो अल्लाह की भाषा में बेटे इस्माइल ने कहा ए बाप! कर डाल, जो तुझको हुकुम होता है, पायेगा अल्लाह ने चाहा तो सबर करने वालो में से। फिर जब दोनो ने हुकुम माना, पछाड़ा इस्माइल को। यहाँ दोनों में कुछ वार्तालाप हुई गले की ओर से काटें या गर्दन की ओर से आदि। लेकिन छुरी ने काटा ही नहीं,इब्राहीम ने छुरी को जमीन में फेंक दी छुरी बोल उठी किए हजरते खुदा! अल्लाह तुम्हें एकबार कहता है काटो,मुझे दसबार मना करता है मत काट? इब्राहीम आंख में पट्टी बांध कर काट रहे थे,तो अब इब्राहीम अपने इम्तेहान में पास होगये,वहां एक दुम्बा कटा मिला. इब्राहीम ने पट्टी खोल कर देखा कि बेटा सही सलामत है। अब इस अन्ध-विश्वास को मानव समाज के पढ़े लिखे लोगों में कहाँ रखा जाये? छुरी से बात करवाना कौनसी तकनिकी है विज्ञान की?हायरे! बुद्धि रखने वाले मानव! क्या तू इन्सान जैसे अकल मंद कहलाने वाला है? यहाँ कई सवाल सामने आगये? जब अल्लाह ने इब्राहीम को काटने को कहा और वह काटने लगे तो इस्माइल को हटा कर दुंबा कटा पाया तो इब्राहीम को पता किसलिए नहीं लग पाया? दूसरा सवाल दुंबा आया कहाँ से? खरीदा गया तो मूल्य कितनी चुकाई गई?अगर दाम नहीं दिया गया तो माल चोरी की था?अब पीछे से आवाज आने लगी ***अल्लाहू अकबर अल्लाहू अकबर ला इलाहा इल्लल्लाह, अल्लाहू अकबर अल्लाहू अकबर वलिल्लाहिल हम्द।*** *(कुरान के अल्लाह में खूबी है कि अल्लाह खुद पैगम्बर हजरत इब्राहीम पर सलाम भेज रहे हैं जो इसी सूरा के १०९ नंबर आयत में पढ़ें*

الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله و الله أكبر الله أكبر و لله الحمد

(ईद-उज्जुहा के नवीं तारीख फजर की नमाज से लेकर बारह तारीख के अस्सर की नमाज तक यह तकबीर पढ़ी जाती है और ता.कयामत पढ़ी जाये गी)

इस दुंबे को मरवाने से क्या लाभ मिला? अब अल्लाह ने क्या बोला? देखें!***और पुकारा हमने इसको यूँ कि ए इब्राहीम! तहकीक सच किया तुने ख्वाब को, तहकीक इसी तरह जज़ा देते हैं हम, अहसान करने वालों को।ऐसे मुश्किल हुकुम कर-कर के आजमाते हैं, हम फिर उसको कायम रखते है, तब दर्जे बुलंद देते हैं। बेशक यही है सरीह आजमाना और छुटा किया हमने इसको बदले कुर्बानी के।*** अब कुरान की इस मन घढ़ंत कहानी का क्या दाद दिया जाये? कुरान से ही पता लगा कि अल्लाह सब कुछ जानने वाला नहीं? कारण अगर जानते सब कुछ फिर अल्लाह को आजमाना किसलिये पड़ता? जीव हत्या का दोष किसपर लगा? अल्लाह पर या अल्लाह के दोस्त पर? उस दुंबे की क्या गलती थी? जो अपना प्राण गंवाना पड़ गया?दुनिया जानना चाहती है इस्लाम के आलिमों से? इसमें सवाल और भी हैं,मैं पूछना चाहता हूँ कि इस्लाम ने इन सभी सवालों का क्या जवाब दिया था मुंशी अब्दुल गफूर साहब को? जिस कारण वह पुन: इस्लाम को कुबूल किया?कारण आर्य समाज में आकर वह दिमागी विकास कर चुके थे? मानव समाज में जीने के लिये कब, क्या, क्यूं,कैसे और यह भी जान चुके थे कि मानव, किसको कहा गया?**"मत्त्वा कर्मणि सिब्बते"** मानव वही है जो विचार शील होकर काम करे तर्क के कसौटी पर काम करे उसे मानव कहा जाता है।इन सभी बातों को वह आर्य समाज में आकर जान चुके थे,और इन्ही बातों को जान कर ही उन्होंने सत्य को अपनाया था फिर मतान्धो के मकड़ जाल में किस लिये फंसते भला?कारण मानव मात्र के सत्य को धारण करना और असत्य को छोड़ देना मानवता है। जो एक हाई स्कूल के प्रधान अद्यापक होने से इस जिम्मेदारी को उन्होंने जान और

समझ कर ही सत्य सनातन वैदिक धर्म को स्वीकारा था। क्या आज भी यही सवाल नहीं है? हमें जवाब देंभले वह मुसलमान तो बन सकते है। किन्तु मनुष्य की जो परिभाषा विद्वानों ने दी है वह कहाँ चरितार्थ हो रही है?

मेरा जो मूल प्रश्न था वह यहाँ से शुरू हो रहा है,कि अल्लाह ने मुसलमानों को गैर मुस्लिमों से दिली और जुबानी दोस्तीतक रखने को मना किया, और कहा तुम्हारी उनसे दोस्ती रखने पर मैं अल्लाह तुमसे दोस्ती नहीं रखूँगा,*(सूरा इमरान २८, निसा१४४, मायदा ५७)*यही बात कुरान में और जगह पर भी है.....

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۗ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨﴾

مسلمان مسلمانوں کو چھوڑ کر کافروں کو دوست نہ بنائیں ا ور جو کوئی یہ کام کرے اسے اللہ سے کوئی تعلق نہیں مگر اس صورت میں کہ تم ان سے بچاؤ کرنا چاہو اور اللہ تمہیں اپنے سے ڈراتا ہے اور اللہ ہی کی طرف لوٹ کر جانا ہے(۲۸)

अल्लाह ने मानव को मुस्लिम व गैर मुस्लिमों में बाँटा है. क्या मुसलमान ही अल्लाह के बंदे हैं? गैर मुस्लिम नहीं? फिर अल्लाह ने किसलिये कहा "***वल्लाहो रऊफुम बिलइबाद***"कि अल्लाह महरबान है हर बंदों पर। सूरा बकर २०७

وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ

जब अल्लाह खुद महरबान सब बंदों पर है । तो क्या सिर्फ मुसलमान ही अल्लाह के बंदे हैं? फिर गैर मुस्लिमों को हैवान कहना चाहिये!! तो क्या अल्लाह कायहपक्षपातनहीं? मुश्फिक का उत्तर देखें!

जिस आयत पर आपने आक्षेप किया है उसका सही अनुवाद यह है। "ईमानवालों को चाहिए कि वे ईमानवालों के विरुद्ध काफिरों को अपना संरक्षक मित्र न बनाएँ, और जो ऐसा करेगा, उसका अल्लाह से कोई सम्बन्ध नहीं..." सूरह आले इमरान, आयत २८ ,

मैंने जो कमकरके बोला आपने उसे विस्तार से बताया।इस का सही अर्थ तो यही हुवा जो लिखा, वह गलत कैसे है?मैं कहने को मजबूर हो रहा हूँ कि ***हाथी, घोड़ा डूबे, बकरी पानी के थाह लगाने में जुटी है!***।आपने लिखा कि कुरान अरबी में है तो फारसी में किसने बतादिया?आप को अरबी की जानकारी होती तो सूरह आले इमरान नहीं लिखते? पहले अरबी पढ़ना सीखें? यहाँ अलइमरान है"آل عمران"।आपका उस्ताद जाकिर नाइक भी यही कर रहा था जिसको कलमा पढ़ना नहीं आता जो दुनिया ने देखा है कहाँ गया वह तामझाम? याद रखना पाप कभी भी छुपता नहीं?आगे लिखता है.....

"आयत में जो अरबी शब्द अवलिया आया है उसका मूल वली है, जिसका अर्थ संरक्षक है ना कि साधारण मित्र।अंग्रेजी में इसको Ally कहा जाता है।"

जिन सवाल को पूछा उसका जवाब न देकर बहकने लगे। मैंने कब पूछा अवलिया का अर्थ?अवलिया का अर्थ, मुझे जानकारी नहीं है क्या?दोस्त, साथी,मक्रबेइलाही, रफीक,खुदारसीदा,इससे क्या मतलब है मुद्दे पर बात न कर पूरी तरह गोलमोल बातें करना आलिम का काम नहीं।

"काफिरों के बारे में ये कहा जा रहा है उनका हाल तो इसी सुरा में अल्लाह ने स्वयं बताया है गौर से सुनें!

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا
وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِيْ
صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١١٨﴾

"ऐ ईमान लानेवालो! अपनों को छोड़कर दूसरों को अपना अंतरंग मित्र न बनाओ, वे तुम्हें नुक़सान पहुँचाने में कोई कमी नहीं करते। जितनी भी तुम कठिनाई में पड़ो, वही उनको प्रिय है। उनका द्वेष तो उनके मुँह से व्यक्त हो चुका है और जो कुछ उनके मन छिपाए हुए है, वह तो इससे भी बढ़कर है। यदि तुम बुद्धि से काम लो, तो हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोलकर बयान कर दी हैं।" सूरह आले इमरान, आयत ११८

पंडित जी, आप ही कहिए, ऐसे काफिरों से किस प्रकार मित्रता हो सकती है? यह तो एक स्वाभाविक बात है कि जो लोग हमसे हमारे धर्म के कारण द्वेष करें और हमें हर प्रकार से नुकसान पहुंचाना चाहें उन से कोई भी मित्रता नहीं हो सकती। कुरआन में ग़ैर धर्म के भले लोगों से दोस्ती हरगिज़ मना नहीं है। लेकिन कुरआन तो खुले शब्दों में कहता है।

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ
مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٨﴾ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ
وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ وَمَنْ
يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩﴾

"अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करो और उनके साथ न्याय करो, जिन्होंने तुमसे धर्म के मामले में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे अपने घरो से निकाला। निस्संदेह अल्लाह न्याय करनेवालों को पसन्द करता है अल्लाह तो तुम्हें केवल उन लोगों से मित्रता करने से रोकता है जिन्होंने धर्म के मामले में तुमसे युद्ध किया और तुम्हें तुम्हारे अपने घरों से निकाला और तुम्हारे निकाले जाने के सम्बन्ध में सहायता की। जो लोग उनसे मित्रता करें वही ज़ालिम है।" सूरह मुम्ताहना; आयत -९८-९"

मेरा जवाब है।भाई मैं तो शुरू से बोल रहा हूँ कि कुरान को ईश्वरीय ज्ञान मानना सम्भव ही नहीं,आप ने जो हवाला दिया उसमें भी विरोधाभास है! फिर आप को सवाल का जवाब देना है या अटकल बताना है?थोड़ाबहुत दिमाग मैं भी रखता हूँ। मेरा सवाल क्या था?अल्लाह ने मुसलमानों को गैर मुस्लिमों से मित्रता रखने को मना किया?चर्चा क्या हो रही है कहा क्या जा रहा है! जब अल्लाह ने कह दिया कि अपनों को छोड़ गैर को दोस्त न बनाओ? फिर अल्लाह ने गैर मुस्लिमों को अच्छा भी कह दिया! तो अल्लाह की कौन सी बात सही है पहले या बाद की?पूरी कुरान में इसी प्रकार दोहरेपन की बातें हैं यहाँ गैर मुस्लिमों से दोस्ती रखने को मना किया, नाकि गैर मुस्लिमों में कौन अच्छा कौनभला देखने की बात कही गई? आप दूसरी आयत का हवाला किसलिये दे रहे हैं?इसका मतलब यह हुवा कि मैंने जो हवाला दिया वह गलत है? आप ने मेरे विरोध में अपना हवाला दिया है...तो पहले वाली आयत ही गलत हो गयी!आप के अल्लाह भी समझ नहीं पाएकि दोनों आयतेंएक दुसरे के विरोध में हो जायें गी? दूसरी बात आप ने समझदारी से नहीं कही!कि अगर अल्लाह ने कहा कि जो तुमसे लड़ा और जो तुमको तुम्हारे घर से निकाला हो उस से दोस्ती न रखो,तो

यहाँ फिरफँस गये! कि आजके दिनों में अरब से न मुसलमनों को कोई निकाल रहा है और न कोई लड़ रहा हैफिर इस आयत की सार्थकता क्या रही?और उल्टा अल्लाह के ज्ञान में भी भट्टा लग गया,कि अल्लाह को पता ही नहीं लग पाया किदयानन्द के युग में इस आयत की आवश्यकता नहीं होगी? जब इस आयत की कोई उपयोग नहीं तो फिर इसको मनसूख कर लेनी चाहिए। आज के दिनों में अरब में मुसलमानों को कोई मार नहीं रहा है,और नं तो अरब से मुसलमनों को कोई भगा रहा है?क्या अल्लाह को यह ज्ञान नहीं था कि आगे जा कर इस आयत की जरूरत ख़त्म हो जाए गी फिर अल्लाह ज्ञानी है या अज्ञानी?इस किस्म कि बातें कुरान में अनेक हैं एक दो जगह हो तो प्रमाण दे कर हटूं। फिर आपने लिखा......

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ
شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا اِعْدِلُوْا هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى وَاتَّقُوا
اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑧ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ⑨

"ऐ ईमानवालो! अल्लाह के लिए ख़ूब उठनेवाले, इनसाफ़ की निगरानी करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इनसाफ़ करना छोड़ दो। इनसाफ़ करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी ख़बर हैं।" सूरह माइदह !आयत ५-९ ,

अल्लाह कभी लोगों को नहीं बाँटते। सब अल्लाह के बन्दे हैं। लोग अपनी मूर्खता और हठ से बट जाते हैं। जो लोग सत्य को

स्वीकार नहीं करते वह स्वयं अलग हो जाते हैं। इसमें अल्लाह का क्या दोष?

इन आयात से स्पष्ट होता है कि कुरआन सभी गैर मुस्लिमों से मित्रता करने से नहीं रोकता। तो यह है इस्लाम की शिक्षा जो सुलह, अमन और इन्साफ की शिक्षा है।"

जब अल्लाह ने कहा कि ए ईमान लाने वालो! फिर तो उससे बाहर के लोग सब बेईमान हो गये या नहीं?तो कुरान ईमानदार और बेईमान,में मानव को बाँट दिया या नहीं?कारण ईमानदार वही है जो इस्लाम के अर्कानो को मानता है!बाकी सब को अल्लाह ने क्या बोला?यह आयात ही एक दुसरे की विरोधी हैं?आपने ही लिखा ***ए ईमान लाने वालो!*** मैं आप से ही पूछता हूँ कि वह कौन है जो ईमान ले आये?क्या वह आपकीया अल्लाह की नजर में इन्सान हैं?या मुस्लमान? या ईमानदार?और जो ईमान नहीं लाये वह क्या हैं? इसलिय मुश्फिक मियां! याद रखना ईमानदार तो कोई भी हो सकता है किन्तु हर इन्सान ईमानदार नहीं हो सकता! यह है अल्लाह का फरमान। अब कुरान की बातें दुनिया वालों ने देख ही लीं,किकभी कुछ और कभी कुछ,जब अल्लाह की यही दशा है तो, उनके बंदों की दशा क्या होगी?इस लिये किसी ने खूब कहा.....

बन्दोंको देख कर मुनकिर हुई हैदुनिया!
किऐसें बंदे हैं जिस खुदा के वह कोई अच्छा खुदा न होगा ।

अल्लाह यह पता नहीं लगा पाए कि लोगों के सामने अगर बात खुले गी तो बुद्धिमान लोग जरूर विचार करेंगे, और यह बात दोगलेपनकी निकले गी?जो एक भले आदमी भी नहीं कर सकता लोक लाज से वह डरेंगे?पर अल्लाह को लोक लाज से कोई मतलब ही नहीं,कारण अल्लाह जो ठहरे!ठीक इसी प्रकार की बातें कुरान में खूब देखने और पढ़ने को मिलती हैं । अब यह सूरा मायदा:८ का जो आप

ने हवाला दीहै।"*ऐ ईमान वालो अल्लाह के लिये खूब उठने वालो इंसाफ की निगरानी करने वाले बनो और ऐसा न हो की किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हे इस बात पर उभार दे की तुम इंसाफ करना छोड़ दो (इंसाफ करो यही धर्म परायणता से अधिक निकट है)अल्लाह का डर रखो निश्चय ही जो कुछ तुम करते अल्लाह को उसकी खबर है (मायदा अ:८)*"

मुश्फिक मियां! आपने ही लिखा है, यहीमैं आपसे और इस्लाम जगतसे ले कर अल्लाह से पूछता हूँ कि धर्म परायण का अर्थ बताएं?अब तो दूध का दूध और पानी का पानी अलग होता नजर आ रहा है। क्या इस्लाम को छोड़ किसी और को धर्म माना है कुरान ने? अल्लाहने साफ कहा.. अलइमरान: आ०१९,८५

إِنَّ الدِّينَ عِندَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ وَمَن يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾ وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٨٥﴾

بلاشبہ دین (حق اور مقبول) اللہ تعالیٰ کے نزدیک صرف اسلام ہے۔ اور اہل کتاب نے جو اختلاف کیا (کہ اسلام کو باطل کہا) تو ایسی حالت کے بعد کہ ان کو دلیل پہنچ چکی تھی محض ایک دوسرے سے بڑھنے کے سبب سے اور جو شخص اللہ تعالیٰ کے احکام کا انکار کرے گا تو بلاشبہ اللہ تعالیٰ بہت جلد اس کا حساب لینے والے ہیں۔ (۱۹) اور جو شخص اسلام کے سوا کسی دوسرے دین کو طلب کرے گا تو وہ اس سے مقبول نہ ہوگا اور وہ آخرت میں تباہ کاروں میں سے ہوگا۔ (۸۵)

मानव समाज में यह बटवारा किसने किया? आपने लिखा *अल्लाह ने मानव को बांटा नहीं,* जो प्रमाण मैं दे रहा हूँ कुरान से,क्या

यह कुरान की आयत गलत है?अगर नहीं,तो कुरानसे जो हवाला आप देरहे वह सही है,या कुरान से जो हवाला मैं दे रहाहूं वह सही है? जो ईमान की परिभाषा कुरान की है वह है "कुरान, मुहम्मद,इस्लाम,और जितने इसके नियम बनाये गए सबपर अमल करने वाला इमानदार,बाकी दुनिया के लोग सब बेईमान?कुरान में अल्लाह ने अनेक बार कहा! *या आई यो हल्लाजिना आमानु*

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

अर्थ:ऐ ईमान लाने वालो! जो अल्लाह, कुरान, मुहम्मद,इस्लाम के अर्कानो को माने, ६ कलमा, नमाज, रोज़ा,जकात, हज, इमाने मुफ़स्सल,इमाने मुज़म्मल को जुबान से इकरार करे और दिल से मान ले, वह है ईमानदार।मैं आप से पूछता हूँ बाकी लोग क्या हैं अल्लाह की नजर में? मैं आपकी बात से हैरान हो रहा हूँ कि आपने धर्म परायण शब्द लिखा है?कुरान के अनुसार जब इस्लाम को छोड़ कर कोई धर्म ही नहीं है फिर धर्म परायण का मतलब क्या है और किसके लिये है? फिर आपने इंसाफ शब्द लिखा है?तो क्या अल्लाह इंसाफ जानते भी हैं? मैं पूछता हूँ कुरान में अल्लाह ने कहा *"मैं जिसको चाहता हूँ बे हिसाब देता हूँ और जिसको चाहता हूँ नहीं देता हूँ"* क्या इसी का नाम इंसाफ है? सूरा अल इमरान आयत: ३७

إِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

मुश्फिक जी! आपतो नहीं बता सकते कि यह काम इंसाफ वाले का होगा या बिना इन्साफ वाले का?पर कोई पढ़े लिखे आदमी से पूछने पर यह पता लगेगा आप को,कि यह काम इंसाफ का है तो ना-इंसाफी किसको बोलेंग? यही कहेंगे सब। पर कोई मुसलमान नहीं कह सकता इसका कारण है कि सही को गलत कहने केलिए ही आप ईमानदार कहलायें!और हम अधिकतर लोग इसको गलत मानने के कारण अल्लाह,

कुरान और इस्लाम ने हमें बेईमान कहा!! सारा मामला साफ शीशा जैसा दिखने लगा है।मुश्फिक मियां! आप जवाब कहाँ से लाएं गे? जिस दिन आपने नेट पर बोला मेरी आवाज आप को सुनाई न दे आप ने वन-वे कर रखा था वरना उसी दिन ही मैं आपको दो टुक में निरुत्तर करता। अभी हमारे मित्र मण्डली नीर मोहम्मद को छका रहे हैं।अब जनाब मुश्फिक साहब कुरान छोड़ वेद में चले गये किसलिए?मेरा सवाल कुरान पर है या वेदपर?जब मेरा सवाल वेद पर नहीं है तो वेद पर बोलना मुर्खता है या बुद्धिमानी?कोई भी पढ़ा लिखा सभ्य व्यक्ति इसे सही नहीं मान सकता है। बात तो यही हुई न,*कि बहरे आदमी से किसी ने पूछा आज दिन कौन सी है?जवाब मिला अभी सो कर उठा हूँ फिर पूछा आपका नाम? जवाब दिया दादा का नाम अबदुल्ला है।* इससे तो दिमागी स्तर का पता लगता है। अगर यह कहा जाएकि जो दोष कुरान में दिखाया गया वही दोष वेद में है,फिर तो कुरान का दोष स्वीकार कर लिया गया!! पड़ताल करना होगा कुरान और वेद में परमात्मा का दिया ज्ञान कौन है?इस ने वेद पर जो दोष लगाया वह सही है या गलत? यह देखना और समझ ना जरुरी है। वेद की बातों को समझने के लिये दिमाग का होना जरूरी है,और वह बुद्धि की शुद्धि होती है ज्ञान से,और ज्ञान है वेद अथवा वेद का अर्थ है ज्ञान।अब जो वेद को नहीं मानते तो वह ज्ञान कहाँ से पाएंगे? इस लिये जानना होगा वेद है क्या?

वेद का अर्थ है ज्ञान। ज्ञान किसका?परमात्मा का। किसके लिये? जवाब मानव मात्र के लिये। कितना ज्ञान है?मानव मात्र को जितना चाहिए। ज्ञान है कबसे? आदि सृष्टी से। किस भाषा में? जवाब है मानव मात्र की भाषा में। इस कसौटी को किसी भी मज़हबी किताब के साथ मिला कर देखें कोई भी खरा नहीं उतर सकता!कोई भी मज़हबी किताब परमात्मा का ज्ञान होना संभव नहीं। कारण वह किसी जाति वर्ग,सम्प्रदाय और मुल्क वालों के लिए और मुल्क वालों की भाषा में

है,जैसा कुरान अरबी में है,अरबी भाषा अरब वालों का है,अल्लाह ने कुरान में भी कहा कि"***मैं अरबी भाषा में कुरान दे रहा हूँ अरब वालों को, समझने के लिये, अरब के आस पास वालों को, समझने के लिये, डराने और धमकाने के लिये"***। देखें सूरा यूसुफ़ आयत २-३

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ قُرْءَٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝٢ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ هَٰذَا الْقُرْءَانَ وَإِن كُنتَ مِن قَبْلِهِۦ لَمِنَ الْغَٰفِلِينَ ۝٣

ہم نے اس کو اتارا ہے قرآن عربی زبان کا تاکہ تم (بوجہ اہل لسان ہونے کے اوّلاً) سمجھو (اور تمہارے واسطے سے اور لوگ سمجھیں) ۔(۲) ہم نے جو یہ قرآن آپ کے پاس بھیجا ہے (اس کے بھیجنے) کے ذریعے سے ہم آپ سے ایک بڑا عمدہ قصہ بیان کرتے ہیں اور اس (ہمارے بیان کرنے) کے قبل آپ (اس سے) محض بے خبر تھے۔(۳)

कुरान की इन अयतों से पता लगा कि कुरान में अल्लाह ने मनोरम किस्सा बयान किया जिस किस्से से तुम गाफ़िल थे। और भी कई प्रमाण हैं। इस प्रकार किसी भी मज़हबी किताब को, वेद से मिलाने पर पता लगेगा कि ईश ग्रन्थ नहीं हैं। कारण परमात्मा के ज्ञान होने की जो कसौटी है, उसको जानना जरूरी है अगर परमात्मा अपना ज्ञान किसी मुल्क वालों की भाषा में दे तो परमात्मा पर दोष लगेगा। दूसरी बात है कि परमात्मा प्रदत्त जो सामान है, वह पहले है, जरूरत बाद में। जैसे देखने से पहले सूरज,प्यास से पहले पानी,भूख से पहले खुराक,या खाना, बच्चा जन्म लेने से पहले माता के शिकम में दूध,चलने से पहले धरती और धरती पर चलने के लिये ज्ञान. किसी भी मजहबी किताब से यह प्रमाण मिलना सम्भव नहीं। कुरान से यह प्रमाण दें जरा!!!कुरान में जो उपदेश हैं, वह जरूरत पड़ने पर सामान बनाया अल्लाह ने।

जो प्रमाण मैं ऊपर दे आया,कि हजरत इस्माईल के पावं पटकने पर पानी निकला,जो महज़ गप्प प्रतीत होता है,परमात्मा पर दोष लगेगा। यही सब दोष अल्लाह पर लगा है, रही बात वेद की जो आरोप वेद पर आप ने लगाया वह आपकी ना समझी ही है,कारण वेद में किसको नष्ट करने की बात है?वेद निन्दक,जब यह सारा प्रमाण मिलगया वेद ही परमात्मा का ज्ञान है उसे न मानना ही वेद की निन्दा है! तो जो सत्य को इन्कार करे वह निन्दनीय है,दोषी है उसे सजा देना पाप नहीं है। हम लोकाचार से भी इसको ले सकते है देख सकते है, कोर्ट फाँसी किसको देती है?जो अन्यायकरे, सत्य को न माने गलती करे, कोर्ट का आदेश न माने, वे सभी सजा पाने के हकदार हैं,इसमें गलती क्या देख रहे हैं मुश्फिक मियां? अगर आप कहेंगे कि जो कुरान पर ईमान नहीं लाते तो कुरान में उसे मारने की बात कही तो क्या गलती है? जब कि मैं प्रमाण ऊपर दे चुका हूँ फिर भी लिख रहा हूँ,कि कुरान तो ईश्वरीय ज्ञान है ही नहीं, जो दोष लग रहा है वह परमात्मा का ज्ञान होना संभव नहीं?यह दोष वेद पर लगायें तब विचार किया जा सकता है।यही सब सवाल तो कुरान के ऊपर हैं जो मैं लिखा,सवाल मैंने क्या लिखा, फिर सुनें!कि*अल्लाह ने सभी फरिश्तों से कहा मैं एक खलीफा बनाना चाहता हूँ,फरिश्तों ने कहा आप किसलिये खलीफा बनाना चाहते हैं?अल्लाह ने कहा हमारी इबादत के लिये,तो फरिश्तों ने कहा हम तो आप कि इबादत करते हैं आप इन्सान किसलिए बनाना चाहते हैं, जो दुनिया में खुरेजी करे?अल्लाहने कहा मैं जो जनता हूँ वह तुम नहीं जानते। मिटटी लाओ! सबने मना किया,अजाज़िल नामी फ़रिश्ता मिटटी लाया,उसी मिटटी से अल्लाह ने पुतला बनाया,जिसका नाम आदम रखा,और सबको उसे सिजदा करने को कहा सभी ने सिजदा किया, मिटटी लाने वाले को छोड़ कर,और कहा कि आपने तो किसी और को सिजदा करनेसे मना किया*

था?अल्लाह ने कहा यह मेरा हुकुम है,अजाज़िल ने कहा कि यह कैसा आदेश!कभी मना करना, फिर आदेश देना?कभी कुछ कभी कुछ कहना!यह क्या बात है? जैसा कुरान का कहना है।सूरा बकर आयत ३०-३५ देखें!(कुरान में और जगह भी हैं)

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً ؕ قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَیَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّیْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَی الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿۳۲﴾ قَالَ یٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّیْٓ اَعْلَمُ غَیْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِیْسَ ؕ اَبٰی وَاسْتَكْبَرَ ۫ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۴﴾ وَقُلْنَا یٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَیْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۳۵﴾

اور جس وقت ارشاد فرمایا آپ کے رب نے فرشتوں سے کہ ضرور میں بناؤں گا زمین میں ایک نائب (فرشتے) کہنے لگے کیا آپ پیدا کرینگے زمین میں ایسے لوگوں کو جو فساد کرینگے اور خونریزیاں کرینگے اور ہم برابر تسبیح کرتے رہتے ہیں بحمد اللہ اور تقدیس کرتے رہتے ہیں آپ کی .(حق تعالی نے)ارشاد فرمایا کہ میں

جانتاہوں اس بات کو جس کو تم نہیں جانتے۔ (۳۰) اور علم دیدیا اللہ تعالٰی نے (حضرت) آدم(ؑ) کو (ان کو پیدا کر کے) سب چیزوں کے اسماء کا پھر وہ چیزیں فرشتوں کے روبرو کر دیں پھر فرمایا کہ بتلاؤ مجھ کو اسماء ان چیزوں کے (یعنی مع ان کے آثار و خواص کے) اگر تم سچے ہو۔(۳۱) (فرشتوں نے) عرض کیا آپ تو پاک ہیں ہم کو علم ہی نہیں مگر وہی جو کچھ ہم کو آپ نے علم دیا بے شک آپ بڑے علم والے ہیں حکمت والے ہیں۔(۳۲) (کہ جسقدر جس کے لیے مصلحت جانا اسی قدر فہم و علم عطا فرمایا) حق تعالٰی نے ارشاد فرمایا کہ اے آدم انکو ان چیزوں کے اسماء بتادو سو جب بتلادیے انکو آدم نے ان چیزوں کے اسماء تو (حق تعالٰی نے) فرمایا (دیکھو) میں تم سے کہتا نہ تھا کہ بے شک میں جانتا ہوں تمام پوشیدہ چیزیں آسمانوں اور زمین کی اور جانتا ہوں جس (بات) کو تم ظاہر کر دیتے ہو اور جس (بات) کو دل میں رکھتے ہو۔ (۳۳) اور جس وقت حکم دیا ہم نے فرشتوں کو (اور جنوں کو بھی) کہ سجدے میں گر جاؤ آدم کے سامنے سو سب سجدے میں گر پڑے بجز ابلیس کے اُس نے کہنا نہ مانا اور غرور میں آگیا اور ہو گیا کافروں میں سے۔ (۳۴) اور ہم نے حکم دیا کہ اے آدم رہا کرو تم اور تمھاری بیوی بہشت میں پھر کھاؤ دونوں اس میں سے بافراغت جس جگہ سے چاہو اور نزدیک نہ جائیو اس درخت کے ورنہ تم بھی ان ہی میں (شمار) ہو جاؤ گے جو اپنا نقصان کر بیٹھتے ہیں۔(۳۵)

फिर अल्लाह की मन मानी देखे, जो अज़ाजील जमीन से लेकर सातवें आसमान तक कोई जगह खाली नहीं छोड़ी सिजदा करने में,जो अल्लाह ने खुश होकर कई नामों से उपाधि दी, आबिद, ज़ाहिद,सालेह, खाशेयआदि नामों से पुकारा उसे दुनिया की चीजों के बारे में नहीं बताया?और उसी की लाई ग़ई मिटटी से आदम को बना कर हर चीजों के बारे में जानकारी देना क्या यह पक्षपात नहीं? कुरान से सुनें!***अब उन्हीं से पूछा कि दुनिया में क्या सामान है उनका नाम बताओ अगर तुम सत्य वादी होतो?***इन अल्लाह मियां को क्या दाद दिया जाए? जिसने इतनी इबादत की उससे तो नाम बताये बिना ही पूछा कि सत्य वादी होतो नामबताओ!वह तो सत्य वादी ही थे,सत्य बोला कि***मैं तो***

*उतना नही जानता हूँ कि जितना आप ने सिखाया!*फिर अल्लाह ने कहा देखो! *जिस आदम को बनाने के लिये तुम ने मना किया था उसीसे पूछते हैं। जब आदम से पूछा तो उसने बता दिये सब चीजों का नाम।* पर अल्लाह की ना इंसाफी तो दुनिया वालों ने देख ही ली,कि जिसने सातों आसमानों,और ज़मीनों में कोई जगह खाली नहीं छोड़ी अल्लाह की इबादत करने में, उसको न बता कर उसी की लाई मिटटी से बने पुतले को सारा नाम बताना, यह अल्लाह का कौनसा न्याय है? मुश्फिक मियां! आप तो अल्लाह के धर्म परायणता की बात कर रहे थे? क्या यही अल्लाह और उसके बंदों का न्याय है? फिर दुनिया अन्याय किसको कहेगी?इसी और ऐसी दोषी को वेद सजा सुनाती है। कारण, वेद वही है जो मानव मात्र को आदेश और निषेध का बोध,हक और नाहक का सारा उपदेश दे,यही कारण है कि वेद निन्दक को नास्तिक कहा है।किन्तु आप लोगों ने सत्य न मानने कि**क़सम कुरान से खाई है** तो यह गले के नीचे किसलिये उतरे भला? आप तो धर्मपरायण की बात कर रहे थे क्या कुरान कर्ता,और कुरान के मानने वाले जानते भी हैं, धर्म क्या है और धर्म कहते किसे हैं? वेद ही ने सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, कर्तव्य-अकर्तव्य का बोध मानव मात्र को कराया है। किन्तु कुरान तो सत्य को सुनना नहीं चाहता, जो अजाज़ील के साथ घटी है,जिसने अल्लाह को यही सत्य दर्शाते हुए चुनौती दी और अल्लाह के सामने ही अंगुली नचा कर कहा *गुमराह किया तूने मुझको,मैं भी उसे गुमराह करूंगा जो तेरे रास्ते पर होंगे, उसको दांएं-बांएं और आगे-पीछे से मैं गुमराह करूंगा और तू देखेगा कि अधिकांश लोग मेरी तरफ ही होंगे*। मुश्फिक मियां! उस शैतान ने बोला कि यह वरदान भी तुझे देना पड़ेगा। कुरान गवाह है, जैसा अल्लाह ने कहा,जो दोनों की बातें हुईं देखें!

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۭ قَلِيْلًا مَّا
تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا
لِاٰدَمَ ڰ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾ قَالَ مَا
مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۭ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ
وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ
فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿١٣﴾ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ
﴿١٤﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ
صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ
وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَاۗىِٕلِهِمْ ۭ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾ قَالَ
اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۭ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ
مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ
حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾
فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا
وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ
تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾

اور بے شک ہم نے تم کو زمین پر رہنے کی جگہ دی اور ہم نے تمھارے لیے اس میں سامانِ زندگانی پیدا کیا تم لوگ بہت ہی کم شکر کرتے ہو۔ (۱۰) اور ہم نے تم کو پیدا کیا پھر ہم نے ہی تمھاری صورت بنائی پھر ہم نے فرشتوں سے فرمایا کہ آدمؑ کو سجدہ کرو سو سب نے سجدہ کیا بجز ابلیس کے وہ سجدہ کرنے والوں میں شامل نہ ہوا۔ (۱۱) حق تعالٰی نے فرمایا تو جو سجدہ نہیں کرتا تجھ کو اس سے کون امر مانع ہے جبکہ میں تجھ کو حکم دے چکا کہنے لگا میں اس سے بہتر ہوں آپ نے مجھ کو آگ سے پیدا کیا ہے اور اس کو آپ نے خاک سے پیدا کیا ہے۔ (۱۲) حق تعالٰی نے فرمایا تو اس (آسمان) سے اُتر تجھ کو کوئی حق حاصل نہیں کہ تو تکبر کرے اس (آسمان) میں (رہ کر) سو نکل بیشک تو ذلیلوں میں (شمار) ہونے لگا۔ (۱۳) وہ کہنے لگا کہ مجھ کو مہلت دیجئیے قیامت کے دن تک۔ (۱۴) اللہ تعالٰی نے فرمایا کہ تجھ کو مہلت دی گئی۔ (۱۵) وہ کہنے لگا بسبب اس کے کہ آپ نے مجھ کو گمراہ کیا ہے (میں قسم کھاتا ہوں کہ) میں ان کے لیے آپ کی سیدھی راہ پر ضرور بیٹھوں گا۔ (۱۶) پھر ان پر ضرور حملہ کروں گا ان کے آگے سے بھی اور ان کے پیچھے سے بھی اور ان کے داہنی جانب سے بھی اور ان کی بائیں جانب سے بھی اور آپ ان میں اکثروں کو احسان ماننے والے نہ پائیے گا۔ (۱۷) اللہ تعالٰی نے فرمایا کہ یہاں سے ذلیل و خوار ہو کر نکل جو شخص ان میں سے تیرا کہنا مانے گا میں ضرور تم سب سے جہنم کو بھر دوں گا۔ (۱۸) اور (ہم نے حکم دیا کہ) اے آدمؑ تم اور تمھاری بی بی جنت میں رہو پھر جس جگہ سے چاہو دونوں آدمی کھاؤ اور اس درخت کے پاس مت جاؤ کبھی ان لوگوں کے (شمار) میں آجاؤ جن سے نامناسب کام ہو جایا کرتا ہے۔ (۱۹) پھر شیطان نے ان دونوں کے دل میں وسوسہ ڈالا تا کہ ان کا پردہ کا بدن جو ایک دوسرے سے پوشیدہ تھا دونوں کے روبرو بے پردہ کر دے اور کہنے لگا کہ تمھارے رب نے تم دونوں کو اس درخت سے اور کسی سبب سے منع نہیں فرمایا مگر محض اس وجہ سے کہ تم دونوں فرشتے ہو جاؤ یا ہمیشہ زندہ رہنے والوں میں سے ہو جاؤ۔ (۲۰)

यहाँ अल्लाह को चुनौती दे रहा है,जिसको आप सभी इब्लीस कह रहे हैं किन्तु आप लोग इसपर विचार करही नहीं सकते कि अल्लाह को जो चुनौती दे वह अल्लाह से बड़ा है या तो समतुल्य जरूर है?भले ही

इस्लाम और ईसाइयत उसे कुछभी कहे या माने! किन्तु उसकी हिम्मत की तो दाद देनी ही पड़ेगी।उत्तर में मुश्फिक साहब ने लिखा!
"पंडित जी के दुसरे प्रश्न में भी काफी गलतियाँ हैं।
गलती १. फरिश्तों ने मिटटी लाने से मना किया। इस का कोई प्रमाण कुरआन से दीजिए। यदि पंडित के पास इसका प्रमाण नहीं दिखाएँ गे तो पंडित जी झूटे साबित हो जाएँ गे।

गलती २. यह अजाजील नाम आप कहाँ से ले आए? कुरआन में इब्लीस का वर्णन है। और यह भी आपने गलत कहा है कि वह फरिश्ता था। कुरआन तो स्पष्ट कहता हे कि इब्लीस जिन था देखो सूरह १८:आयत ५०"

यह अजाजीलशब्द का अर्थ जो इस्लामिक इन्साइक्लोपीडिया ने कीया है..
'Azāzīl

(A.), the Biblical עֲזָאזֵל (Azazel) also used as a name of the Devil. Cf. Grünbaum, *Neue Beiträge zur semitischen Sagenkunde*, p. 261.

Citation
"'Azāzīl." *Encyclopaedia of Islam, First Edition (1913-1936)*. Brill Online,
From the Quranic Arabic Corpus - Ontology of Quranic Concepts
Iblis (إبليس) is another name for Satan (***the devil***) who was the

jinn that refused to prostrate before Adam.

This concept is part of the following classification in

the ontology:

Concept (root)
↳ Living Creation
↳ Sentient Creation
↳ Jinn (الجن)
↳ Iblis (إبليس)

नोट : उपर दिए प्रमाणों के अतिरिक्त अज़ाज़ील की घटना कसासुल अम्बिया से फिर कुरान मजीद उर्दु तरजुमा शाह रफीउदीन और मौलाना अशरफ अली थानवी का दिया। मुश्फिक मियां!दुनिया के आगे झूठ कौन बोल रहा है?

शायद आप को यह पता भी न हो कि मिट्टी कहां-कहां से और किस-किस रंग की लाई गई? इनको आंख खोल कर पढ़ लीजिए गा! आप सारे साथी संगी मिलकर मुझे मिथ्या प्रमाणित करने में लगे हैं!
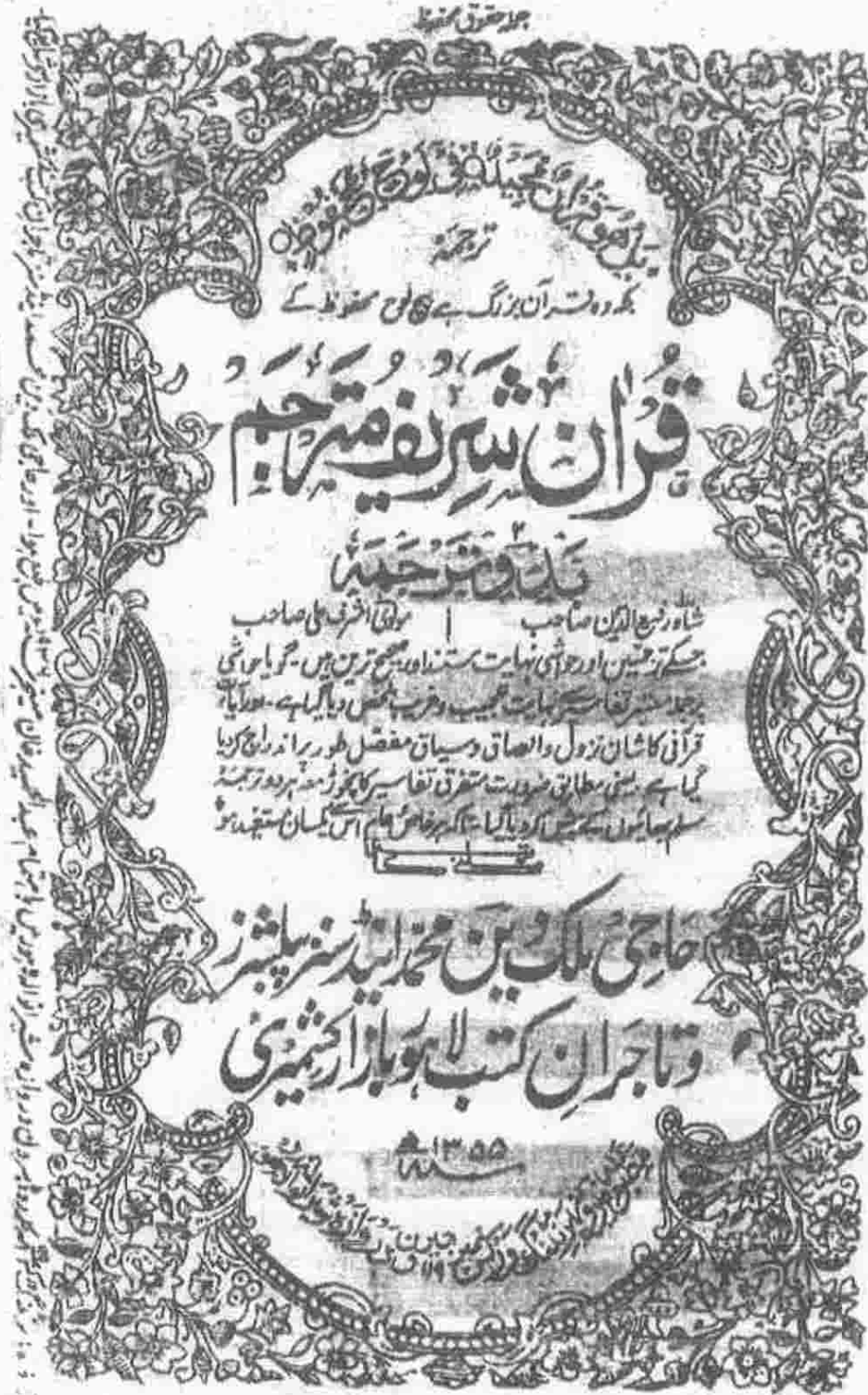
جملہ حقوق محفوظ

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ

ترجمہ

بلکہ وہ قرآن بزرگ ہے بیچ لوح محفوظ کے

قرآن شریف مترجم

بدو ترجمہ

شاہ رفیع الدین صاحب | مولوی اشرف علی صاحب

جسکے ترجمیں اور حواشی نہایت مستند اور صحیح ترین ہیں۔

قرآنی کا شان نزول والصاق وسیاق مفصل طور پر اندراج کردیا گیا ہے

حاجی ملک دین محمد اینڈ سنز پبلشرز

وتاجران کتب لاہور بازار کشمیری

سنہ ۱۳۵۵ھ

حضرت حوا اور ابلیس لعین کا فریب

حضرت آدمؑ کی ولادت

جنت سے اخراج اور نسل انسانی کا ظہور

गलती ३.- अजाजील ने कहा की अल्लाह आपने तो आपको छोड़ दुसरे को सिजदा करने को मना किया था, यह भी गलत है। इब्लीस ने ऐसा कभी नहीं कहा। पंडित जी पया कुरआन से अपने दावों का प्रमाण भी दिया करें। सजदा यहाँ सम्मान का प्रतीक है न कि इबादत का सजदा "

मुश्फिक जी इसका उत्तर।कि आप को पता नहीं कि सिजदा न करने पर उसका नाम इब्लीस पड़ा। इससे पहले उसका नाम क्या था?आपको कसासुल अम्बिया से जानकारी मिली होगी? जिस किताब में नबी या अम्बिया कि कहानी लिखी गई,कैसा विचित्र है देखा!

हक सुबहाना तायला ने दो सूरतें दोजख केअन्दर पैदा किये, एकशेरदूसरा गर्ग (भेड़िया), यह दोनों सिज्जीन नामी दोज़ख में जा कर जुफ्त (एक दुसरे पर चढ़ना) किया। इन दोनों के मिलने से अजाजील पैदा हुवा।उसने वहां हज़ार वर्ष तक अल्लाह के नाम सिजदा किया।फिर हर तबका जमीन पर हज़ार साल तक इबादत की,फिर दुनिया में आया तो अल्लाह ने उसको दो बाजू इनायत कीं। वहां से उड़ कर पहले आसमान पर गया,यहाँ भी हज़ार साल तक अल्लाह की इबादत की।इससे अल्लाहने उसे खाशेय नाम दिया।फिर दुसरे आसमान पर गया और ह्ज़ार साल तक इबादत की,तो आबिद नाम मिला। अब तीसरे आसमान पर गया हज़ार साल यहाँ इबादत की तो, सालेह नाम मिला।और चौथे आसमान पर गया यहाँ भी हज़ार साल तक इबादत की,तो वली की उपाधि मिली। फिर पांचवें आसमानमें हज़ार साल तक इबादत की, तो यहाँ नाम उसका अज़ाजील रखा गया। फिर वह छठे आसमान पर गया यहाँ भी हज़ार साल तक इबादत की। फिर सातवें आसमान पर गया वहाँ भी हज़ार साल तक इबादत की, यानि जमीन से लेकर सातवें आसमान तक कोई जगह खाली नहीं छोड़ी जहाँ उसने सिजदा न किया हो। उसके बाद अर्शे मुअल्ला पर जा कर ६ हज़ार साल तक इबादत

की,यहाँ सिजदा से सर उठा कर अल्लाह से फरयाद किया किऐ खुदाया! मुझे लौहे महफूज पर उठा ले और अपनी कुदरत दिखा दे, मैं खूब तेरी इबादत करूं गा।अल्लाह ने इस्राफील नामी फ़रिश्ते को कहा कि इसे उठा लाओ और जब वह लौहे महफूज पर गया,तो उसकी नजर नोश्ते (लिखाहुवा), पर जा गिरी जिसमें लिखा था,कि कोई होगा जो ६ लाख वर्ष तक बारगाहे इलाही में इबादत के बाद, सिर्फ एक सिजदा न करने पर उसकी सारी इबादत खत्म करदी जाएगी।और उसका नाम इब्लीस,मरदूद व मजरूम रखा जायेगा। अजाजील इसको पढ़ कर ६ लाख वर्ष तक खड़ा रोता रहा। अब जनाब बारी से आवाज आई,. किऐ अज़ाजील जो बंदा मेरी इबादत न करे और हुकुम बजा न लाये उसकी सजा क्या है? अजाज़ील ने कहा खुदावंद जो शख्स आपकी इबादत न करे,उसकी सजा लानत है। अल्लाहने कहा ऐ अंजाजील! तू इसको लिख कर रख। इसी को एक हदीसमें,अबदुल्ला इब्ने अब्बासने रवायत की है,कि अजाज़ील के मरदूद होनेसे बारह हज़ार वर्षपहले यह वाकिया हुवा था अज़ाजील ने कहा!

لعنت الله على من ما أطاع الله

"लय नातुल्लाह अला मिम्मा अता अल्लाहो" अर्थ: लानत अल्लाह की उसपर है जो, इतायत न करे अल्लाह की।इसी को हुकुम था आदम को सिजदा करने का और न करने पर उसे अल्लाहने फिर नाम दिया इब्लीस, जिसे यह शैतान कह रहे हैं।यह है इब्लीस और उसकी कहानी, यहाँ कई सवाल सामने आगये!इसे इब्लीस कहें या अज़ाजील इसका जन्म कैसे हुवा!एक शेर और भेड़िये के क्रोस से न मालूम अल्लाह का यह विज्ञानकैसा है?कि पशु के बच्चे से अल्लाहने इबादत करवा ली?
(पाठको! इसीअज़ाज़ील को कुरआन में अग्नि से पैदा हुआ माना गया है)
अब जो प्रमाण मुश्फिक्क ने दिया है सूरा अल-कह्फ़ अयात:५०-५१

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿۵۰﴾ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿۵۱﴾

اور جب ملائکہ کو ہم نے حکم دیا کہ آدمؑ کے سامنے سجدہ کرو سو سب نے سجدہ کیا بجز ابلیس کے وہ جنات میں سے تھا سو اس نے اپنے رب کے حکم سے عدول کیا سو کیا پھر بھی تم اس کو اور اس کے چیلے چانٹوں کو دوست بناتے ہو مجھ کو چھوڑ کر حالانکہ وہ تمہارے دشمن ہیں یہ ظالموں کے لیے بہت برا بدل ہے۔ (۵۰) میں نے ان کو نہ تو آسمان اور زمین پیدا کرنے کے وقت بلایا اور نہ خود ان کے پیدا کرنے کے وقت (بلایا) اور میں ایسا (عاجز) نہ تھا کہ (کسی کو خصوص) گمراہ کرنے والوں کو اپنا (دست و) بازو بناتا۔ (۵۱)

अर्थ: याद करो जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सिजदा करो तो उन्होंने सिजदा किया, मगर इब्लीस ने न किया। वह जिन्नों मेसे था इसलिए अपने रबके आदेश का उलंघन किया। अब क्या तुम मुझे छोड़ कर उसको और उनकी संतति को अपना संरक्षक बनाते हो वह तुम्हारे शत्रु हैं। बड़ा ही बुरा विकल्प है जिसे ज़ालिम लोग अपना रहे हैं।

नोट: यह अनुवाद फारुख खानका है। सवाल यहाँ भी वही है, सिजदा इब्लीसने न किया जो जिन्नों में से था।इसलिये मुश्फिक ने कहा कि वह फ़रिश्ता नहीं था यह बात अपने आप में झूठ साबित होगयी देखिये! आयात की शुरू में अल्लाह ने क्या कहा,**"जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सिजदा करो"**तो यहाँ जिन्न कहाँ से आगया?दूसरी बात है कि इब्लीस नाम तो सिजदा न करने पर पड़ा,या हुवा!इससे पहले

उसका नाम क्या था?मुश्फिक मियां आप कयामत तक जवाब नहीं दे सकते मुझे जवाब देकर इस्लाम कुबूल करवाएँगे या जवाब दिए बिना ही इस्लाम की दावत देनें लगेंगे? आप ने तो लिखा इस्लाम के विद्वानों ने बाबु धर्म पाल को जवाब दिया था।फिर आप कुछ नए तथ्यों के साथ जवाब देरहे हैं। पर यहाँ तो आप का कोई तथ्य काम नहीं करता नजर आ रहा है? दूसरी बात है कि वह कौन था जिसको अल्लाह ने,आबिद,जाहिद,खाशेय,सालेह, वली आदि खिताब दिया और जमीनसे लेकर सातवां आसमान तक जो सिजदा करता रहा उसका नामतो बताएं जरा? कौन था वह जिसको अल्लाह ने इब्लीस नाम दिया।यहाँ बात चल रही इस्लाम और कुरान की यह जनाब अब फिर चले गये वेद में कि वेद में भी नमन शब्द ईश्वर के इलावा अन्य के लिये प्रयोग किया गया है। हुजूर! यह बताएं कि मैंने आप से कब पूछा था कि नमन की बात किस-किस किताब में है? भाई खानदानी परिवार में बच्चों को तमीज सिखाई जाती है यह उनके दिल और दिमाग में भरा जाता है कि जब बड़े लोग बात करें,तो बीच में न बोलना,जब कोई बात पूछे तो उतना ही बोलना जितना पूछा गया आदि।मुझे लगता हैकि मुश्फिक सुल्तान को या नीर मोहम्मद को यह तालीम घर से मिली ही नहीं? यह सभी बातें बचपन से ही घरमें माता पिता और गुरुजनों से मिलती हैं।

पर यह गलती और अमानुषिकतालीम तो अल्लाह कीदी हुई है जो ऊपर बताया गया है।कि अजाजील जब अर्शे मुअल्ला में सिजदा से उठा तो देखा कि ६ हज़ार साल की इबादत उसकी बेकार होगी जो एक सिजदा अल्लाह के कहने पर न करे?जबयहफैसला अल्लाह का पहले से किया हुवा है या था?तो उस बेचारे को पहले ही बता देतेयादिखा देते तो उस का वक्त बेकार नहीं जाता? यह अल्लाह की गलती थी यही गलतीकोही इब्लीस ने अहसास कराया और अपनी ६ हज़ार सालकीइबादत कि मजदूरी वसूल की। और अल्लाह को निरुत्तर हो कर

उसको उसकी इच्छा की मुताबिक मजदूरी देनी पड़ी। इधर इन्सान के साथ भी अल्लाह ने दोहरी नीति को अपनाया, जो पहले लिख चुका हूँ कि आदम को कहा **शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है उसके बहकावे में मत आना, और इधर शैतान को खुली छूट देदी कि मेरे रास्ते में चलने वालों को छोड़ तू सबको बहका सकेगा।** इब्लीस बनने के बाद वह भी कठोर हो उठा और बोला नहीं यह चलने वाली नहीं,जो तेरे सीधे रास्ते पर हो उसेही मैं बहकाऊँगा,आगे से, पीछे से, दाहिने से, बाएं सेऔर तू देखेगा कि अक्सर लोग मेरेही साथ होंगे।और उसने जैसा बोला ठीक वैसा ही कर दिखया। जो आदम को उसने जन्नत से निकलवा दिया,अल्लाह के समझाने पर भी आदम ने,अल्लाह के आदेश का उलंघन किया। और इब्लीस का कहना मान लिया,मुश्फिक मियां! आप यह बताएं कि आदम अल्लाह के रास्ते पर थे या नहीं? यदि अल्लाह के रास्ते पर होते, तो गुमराह होने का क्या मतलब?और अगर अल्लाह के रास्ते पर नहीं थे?तोकुरान से हवाला दें, यहाँ अल्लाह पर इब्लीस भारी है या नहीं? यहाँ एक बात और भी है,मुश्फिक जी आपने कहा वह इब्लीस फ़रिश्ता नहीं था तो आपने कुरान को जाना ही नहीं,और मेरे सही सवालों को गलत बतादिया जरा गौर से देखें सूरा बकर की आयत ३० से ३५ तक।यहाँ भी अल्लाह ने फरिश्तों से कहा कि मैं धरती पर एक खलीफा बनाना चाहता हूँ।तो उन्हों ने उत्तर क्या दिया कि आप धरती पर ऐसे को नियुक्त किस लिये करना चाहते जो व्यवस्था को बिगाड़े और रक्तपात करे?आपकी तारीफ और प्रशंसा तो हम करही रहे हैं।

ونحن نسبح بحمدك ونقدس لك

आप यह बताए! कि अल्लाह यह बात फरिश्तों से कर रहे थे क्या उनमें यह इब्लीस नामी भी कोई शामिल था? अगर हॉ! तो कहाँ?और वह पात्र कौन है? आप अभी जनकारी आलिमों से लें।

आपको जानकारी कुछ भी नहीं यही कारण है कि मेरे सवालों को आजतक किसी आलिम ने छू कर भी नहीं देखा। आप कुछ दिन हो सके तो मेरे पास आकर पढ़ लें मुझे खर्चा देना नहीं है।मैं फ्री में पढ़ा दूंगा, हमारे आर्य समाज में आप जैसे अनेक पढ़ते हैं और पूर्ण विद्वान बन कर निकलते हैं। आपको पूर्ण विद्वान बना दूंगा,आप संस्कृत पढ़े बिना वेदको नहीं समझ पाएंगे। फिर आप गलत लोगों के भाष्य को देख रहे हैं और भ्रमित हो रहे हैं। सूरा स्वाद आयत ७०-८२ को देखें

اِنْ يُّوْحٰۤى اِلَيَّ اِلَّاۤ اَنَّمَاۤ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧٠ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ۝٧١ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۝٧٢ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ۝٧٣ اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٧٤ قَالَ يٰۤاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ؕ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ۝٧٥ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ؕ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝٧٦ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۝٧٧ وَّاِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْۤ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٧٨ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝٧٩ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝٨٠ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ۝٨١ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٨٢

میرے پاس (جو) وحی (آتی ہے تو) اس سبب سے آتی ہے کہ میں (منجانب اللہ) صاف صاف ڈرانے والا ہوں۔ (۷۰) جب کہ آپ کے رب نے فرشتوں سے ارشاد فرمایا کہ میں گارے سے ایک انسان (یعنی اس کے پتلے کو) بنانے والا ہوں۔ (۷۱) سو میں جب اس کو پورا بنا چکوں اور اس میں (اپنی طرف

ے) جان ڈال دوں تو تم سب اس کے آگے سجدے میں گر پڑنا۔ (۷۲) سو (جب اللہ نے اس کو بنالیا) تو سارے کے سارے فرشتوں نے آدم کو سجدہ کیا۔ (۷۳) مگر ابلیس نے کہ وہ غرور میں آگیا اور کافروں میں سے ہو گیا۔ (۷۴) حق تعالیٰ نے فرمایا کہ اے ابلیس جس چیز کو میں نے اپنے ہاتھوں سے بنایا اس کو سجدہ کرنے سے تجھ کو کون چیز مانع ہوئی کیا تو غرور میں آگیا یا یہ کہ تو (واقع میں ایسے) بڑے درجے والوں میں سے ہے۔ (۷۵) کہنے لگا کہ (شق ثانی واقع ہے یعنی) میں آدم سے بہتر ہوں (کیون کہ) آپ نے مجھ کو آگ سے پیدا کیا ہے اور اس آدم کو خاک سے پیدا کیا ہے۔ (۷۶) ارشاد ہوا کہ (اچھا پھر) آسمان سے نکل کیوں کہ بے شک تو (اس حرکت سے) مردود ہو گیا۔ (۷۷) اور بے شک تجھ پر میری لعنت رہے گی قیامت کے دن تک۔ (۷۸)

अर्थ: जब तेरे रबने फरिश्तों से कहा मैं मिटटी से एक इन्सान बनाने वाला हूँ, फिर जब मैं उसे पूरी तरह बना दूँ और उसमें अपनी रूह फूंक दूँ तो तुम उसके आगे सिजदेमें गिर जाओ। इस आदेश के अनुसार फ़रिश्ते,सब के सब सिजदे में गिर गये, मगर इब्लीस ने अपनी बड़ाई का घमंड किया और वह इन्कार करने वालों में से हो गया। रब ने कहा ऐ इब्लीस! तुझे क्या चीज इसे सिजदा करने से रोक रही है जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया है?तू बड़ा बन रहा है या तू है कुछ उच्च हस्तियों में से?उसने जवाब दिया मैं इससे अच्छा हूँ आपने मुझ को आग से पैदा किया है और इसको मिट्टी से।

मुशिफक मियां! क्या आप अब भी बताएँगे कि अजाज़ील जिन्न था?जब कि अल्लाह ने हुकुम फरिश्तों को दिया?दूसरी बात कुरान की, इब्लीसने खुद कहा कि आपने हमें आग से बनाया,मैं अफजल हूँ यह मिटटी से बना है। फिर क्या अल्लाह को यह समझदारी नहीं कि बड़े सिजदा करे छोटे को?पहले जो बना वह बड़ा है बाद में जो बना वह छोटा तो सिजदा किसको करना चाहिए? क्या अल्लाह के पास बड़े छोटे की भी तमीज नहीं?अब देखें सूरा शुअरा आय.४ को

إِنْ نَّشَأْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ۝

اگر ہم چاہتے تو ان پر آسمان سے کوئی ایسی نشانی اتارتے کہ جس کے سامنے ان کی گردنیں خم ہو جاتیں (۴)

अर्थ: हम चाहें तो आसमान से ऐसी निशानी उतार सकते है कि इनकी गर्दने उसके आगे झुक जाएँ।

मियां जी!फिर आप ही बताएं कि अल्लाह अगर चाहते तो इब्लीस कि गर्दन आदम के आगे झुक्वा लेते!क्या यह अल्लाह की असफलता मानी जाये?यह काम तो अल्लाह के जिम्मे ही जरुर था,कि जिसको चाहते जैसे चाहते किसी को किसीके सामने झुकवा लेते!अल्लाह इतना शक्ति शाली होने के बाद भी इब्लीस की फटकार!!!कि गुमराह किया तूने मुझको यह सुनना सर्व शक्तिमान के लिये कैसा संभव हो सका?यह गले के नीचे नहीं उतर सकती!मियां जी! अल्लाह ने साफ कहा तू उच्च हस्तियों में से है? यानि अल्लाह से बड़ी हस्ती है इब्लीस? जो अनुवाद फारुख खान ने किया है देखलें ।अब मेरे सवालों से हट कर लिखा

"स्वामी दयानंद सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश में ब्रह्मोसमाज और प्रर्थ्नासमाज की आलोचना करते हुए लिखते हैं,

"अँगरेज़, यवन, अन्त्याजादी से भी खाने पीने का अंतर नहीं रखा। उन्होंने यही समझा कि खाने और जात पात का भेद भाव तोड़ने से हम और हमारा देश सुधर जाएगा लेकिन ऐसी बातों से सुधार कहाँ उल्टा बिगाड़ होता हे।"(सत्यार्थ-प्रकाश, समुलास-११प्रकाशक: श्रीमद दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर, जुलाई २०१०)"

दुनिया वालो जरा सोचें! साल भर से यह ढोल बजा रहा हैंकि मैंने महेन्द्र पालके १५ सवालों का जवाब दिया है।अब इसको पढ़ कर बताएं कि यह जवाब है या सवाल? मेरा जो सवाल है वह मात्र कुरान पर आधारित है और शीर्षक है **इस्लाम जगत के विद्वानों से कतीपय प्रशन सही जवाब मिलने पर इस्लाम स्वीकार** यह जनाब उसी कागज को आर्य समाजों में दिखाते फिर रहे हैं,कि देखो! महेंद्र पाल जवाब नहीं

दे पाए, पर इन अकल के दुशमनों को क्या दाद दिया जाये?कि यह मेरे सवालों का जवाब दिया है या अनर्गल प्रलाप कर रहे हैं?इसी को कहते **खिसयानी बिल्ली,खम्भा नोचे**। आगे आगे देखते जाइए! इन्हों ने जवाब क्या दिया है,इस सत्यार्थ प्रकाश का जो उद्हारण ११ समुल्लास का दिया फिर उस पर टिप्पणी क्या लिखा है देखें!

"पंडित जी मुस्लमान और ईसाई,कितने ही सदाचारी हो,स्वामीजी के अनुसार उनके साथ खाना उचित नहीं।यह पक्षपात नहीं तो और क्या है?क्या आप अब भी ऐसेआर्य समाज में रहना पसंद करेंगे?"

मुश्फिक मियां! पहले तो आप यह बताएं कि यह मेरे कौनसे सवाल का जवाब है?मेरे सवालों के जवाब देने का इल्म है आपके पास? जब यह मेरा कोई सवाल ही नहीं तो आपने किस सवाल का जवाब दिया? और इंटरनेट पर भी एकतरफा झूठ बोले जा रहे थे, दुनिया को और बता रहे थे कि महेन्द्र पाल के सवालों का जवाब दे रहे हैं?मैं आज भी उसी जगह रुका हूँ जो मैंने लिखा है।

आपने जो सवाल किया है सत्यार्थ प्रकाश पर,कि मुस्लमान और ईसाई,कितना ही सदाचारी हो स्वामी जी ने उनके साथ खाना उचित नहीं लिखा। जवाब में मैं आपसे पूछता हूँ कि आप सदाचारी किसको कहते हैं?क्या इस्लाम और ईसाइयत जानती है कि सदाचार क्या है?क्या मत को धर्म मानना सदाचार है? क्या मानव कृत ग्रंथों को ईशें कृत मानना सदाचार है?क्या अपनी सगे चाचा की लड़की से शादी करना सदाचार है?सगी मौसी की लड़की को पत्नी बनाना सदाचार है? अपने मामा की बेटी से शादी करना सदाचार है? अपने मुँहबोले बेटे की पत्नी को अपनी पत्नी बनालेना सदाचार है?अपनी ही पत्नी को तीन बार तलाक देकर,किसी परपुरुष से निकाह कर रात भर उसके बिस्तर का, शरीरका आधा हिस्सेदार बना देनेका नाम सदाचार है? जो मानव

की स्वभाविक खुराक नहीं उसे खाना सदाचार है? विज्ञान विरुद्ध बातों को मानना सदाचार है? इब्राहीम और इस्माईल की कहानी को सच मानना सदाचार है? एक स्त्री और पुरुष से दुनिया बनी को मानना सदाचार है?किसी पुरुष की पसली तोड़ कर महिला को बनाया यह सच मानना सदाचार है?हजरत लूत ने अपनी बेटी से वंश चलाया को सच मानना सदाचार है?कुवांरी लड़की से संतान उत्पत्ति को सच मानना सदाचार है?क्या ५२ वर्ष वाला इन्सान का, ६ सालकी अबोध से शादी रचाना यह काम सदाचारियों का है?मानवता विरोधी काम करना सदाचार है?मैं अपनी बची जिंदगी आपको सदाचार का प्रमाण देसकता हूँ,मांस खाने वालों के शरीर से जो प्रदूशन निकलते हैं उससे बचने के लिये स्वामी जी ने इनके यहाँ खाना मना लिखा है। इसको समझने के लिये भेजा होना चाहिये,जो आप लोगों के पास नहीं है। इसका मूल कारण है "बुद्धिर्ज्ञानेनशुद्धयति"अर्थात बुद्धि कि शुद्धि होती है ज्ञान सेऔर ज्ञान है वेद, जिसे आपलोग नहीं मानते,तो ज्ञान किशुद्धिहोगी कहांसे?और इस बुद्धि का प्रयोग करना आप के यहाँ मना लिखा है,जो कहते हैं लोकचार में किअक़ल में दखल नहीं और वेद की मान्यता है,"यस्तर्केणानुसंधत्ते स:धर्मं वेद नेतर:"। अर्थात तर्क की कसौटी में जो खरा उतरे उसे मान लेना,जो न उतरे उसको नहीं मानना यह धर्म है।आगे उसने मेरे सवालों उत्तर का दिया!

"अल्लाह के मार्ग पर रहने का अर्थ समझ लीजियह। जब इंसान अल्लाह के उपदेश का पालन करे गा वह गुमराह नहीं होगा। और जब अल्लाह के उपदेशों से मुंह मोड़ लेगा तो गुमराह होगा। यदि वह पश्चाताप करके अपनी भूल को सुधारना चाहे तो वह फिर से सीधे मार्ग पर लोट आएगा। यदि सीधे मार्ग पर जल्दी से न लोटे तो गुमराही बढ जायह गी।"

मेरा सवाल था,कि आदम अल्लाह के रास्ते में थे या नहीं?इसी का जवाब दिया है। भाई आप का उत्तर अपने आप में सवालों में घिरा है। आपने लिखा जब इन्सान अल्लाह के उपदेश का पालन करेगा, वह गुमराह नहीं होगा?मेरा सवाल भी तो यही है कि आदम अल्लाह के रास्ते पर था या नहीं?अगर रहा होता, तो गुमराह कैसे होता?पाठको!**मुशिफक ने क्या लिखा है देखें!**

*"आदम अल्लाह के रास्ते पर थे लेकिन **क्षण** भर के लिए **इब्लीस के बहकावे में आगए।** उन्हों ने उस क्षण में अल्लाह की चेतावनी को भुला दिया। लेकिन फिर अपनी गलती का एहसास हुआ और अल्लाह से क्षमा चाही।"*

यानि मेरे दिये विचार कोआप ने स्वीकार किया है,कि**क्षण भर के लिये इब्लीस के बहकावे मे आगये**,मतलब यह निकला कि**कुछ देर के लिये ही सही इब्लीस ने अल्लाह को पीछे छोड़ दिया**? यानि उतनी देर के लिये ही अल्लाह का प्लान फेल कर दिया। तो अल्लाह का यह कहना झूठ हो गया कि**जो मेरे रास्ते पर होगा उसे तू गुमराह नहीं कर सकता।** मगर यहां पर तो कुरान ने झूठा साबित कर दिया आप को... देखिए! कैसे........

فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ
فَتَشْقَىٰ ﴿١١٧﴾ إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ﴿١١٨﴾ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا
وَلَا تَضْحَىٰ ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ
شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلَىٰ ﴿١٢٠﴾ فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْآتُهُمَا

وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿۱۲۱﴾ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿۱۲۲﴾

پھر ہم نے آدمؑ سے کہا کہ آدم (یاد رکھو) یہ بلاشبہ تمہارا اور تمہاری بی بی کا دشمن ہے سو کہیں تم دونوں کو جنت ہی سے نہ نکلوا دے پھر تم مصیبت میں پڑ جاؤ۔ (۱۱۷) یہاں جنت میں تو تمہارے لیے (آرام) ہے کہ تم نہ کبھی بھوکے رہو گے اور نہ ننگے ہو گے۔ (۱۱۸) اور نہ یہاں پیاسے ہو گے اور نہ دھوپ میں تپو گے۔ (۱۱۹) پھر ان کو شیطان نے بہکایا کہنے لگا کہ آدم کیا میں تم کو ہمیشگی (کی خاصیت) کا درخت بتلاؤں اور ایسی بادشاہی کہ جس میں کبھی ضعف نہ آوے۔ (۱۲۰) سو (اس کے بہکانے سے) دونوں نے اس درخت سے کھا لیا تو ان دونوں کے ستر ایک دوسرے کے سامنے کھل گئے اور (اپنا بدن ڈھانپنے کو) دونوں اپنے اوپر جنت کے (درختوں کے) پتے چپکانے لگے اور آدمؑ سے اپنے رب کا قصور ہو گیا سو غلطی میں پڑ گئے۔ (۱۲۱) پھر ان کو ان کے رب نے (زیادہ) مقبول بنا لیا سو اس پر توجہ فرمائی اور راہ (راست) پر (ہمیشہ) قائم رکھا۔ (۱۲۲)

मुश्फिक मियां!अल्लाहने क्या कहाजो इब्लीस का कहना मानेगा उसके लिये? अगर आप को कुरान पढ़ना आता है तो देख लें,सुरह स्वाद अ०८५

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۸۵﴾

کہ میں تجھ سے اور جو ان میں تیرا ساتھ دے ان سب سے دوزخ کو بھر دوں گا۔ (۸۵)

कहा"तो सत्य यह है और मैं सत्य ही कहा करता हूँ कि मैं जहन्नुम को तुझसे और उनसब लोगों से भर दूंगा जो इन इन्सानों में से तेरा अनुसरण करेगा"

जी हुजूर! आप ही बताएं,हजरत आदम जहन्नुम में जायेंगे या नहीं?क्या अल्लाह के ऊपर आप अपनी कलम चला सकते हैं?आपने

लिखा कि"वह अगर गलती करके सुधारना चाहे तो वह फिर से सीधे मार्ग पर लौट आए गा,जल्दी न लौटे तू गुमराही बढ़ जायेगी"मियां जी! आपने यह नहीं बताया कि कितना जल्दी लौटना चाहिए?और हजरत आदम इस गलती के लिये कितने साल तक रोते रहे? कुरान गवाह है।आपने लिखा है,सूरा अल आराफ आ०२३

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۲۳﴾

دونوں کہنے لگے کہ اے ہمارے رب ہم نے اپنا بڑا نقصان کیا اور اگر آپ ہماری مغفرت نہ کریں گے اور ہم پر رحم نہ کرینگے تو واقعی ہمارا بڑا نقصان ہو جائے گا۔(۲۳)

अब आप ही बताएं! हजरत आदम को यह कितने सालों तक कहना पड़ गया कि मैंने अपने ऊपर जुल्म किया। आदम अल्लाह का ख़ास बंदा था खूब अरमान से बनाया था और खासकर अपनी रूह भी डाली थी! फिर इब्लीस के बहकावे से बचा नहीं सके? मियां जी और देखें! अल्लाह ने सूरा बनी इस्राईल की आयात ६३-६६में क्या कहा...

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿۶۳﴾ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۶۴﴾ اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿۶۵﴾ رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۶۶﴾

ارشاد ہوا جا جو شخص ان میں سے تیرے ساتھ ہولے گا سو تم سب کی سزا جہنم ہے سزا پوری۔ (۶۳) اور ان میں سے جس جس پر تیرا قابو چلے اپنی چیخ پکار سے اس کا قدم اکھاڑ دینا اور ان پر اپنے سوار اور پیادے چڑھا لانا اور ان کے مال اور اولاد میں اپنا ساجھا کر لینا اور ان سے وعدہ کرنا اور شیطان ان لوگوں سے بالکل جھوٹے وعدے کرتا ہے۔ (۶۴) میرے خاص بندوں پر تیرا ذرا قابو نہ چلے گا اور آپ کا رب کافی کارساز ہے۔ (۶۵) تمہارا رب ایسا (منعم) ہے کہ تمہارے لیے کشتی کو دریا میں لے چلتا ہے تاکہ تم اس کے رزق کی تلاش کرو بے شک وہ تمہارے حال پر بہت مہربان ہے۔ (۶۶)

अर्थ: अल्लाह ने कहा अच्छा तो जा उनमें से जो भी तेरा अनुसरण करे तुझ सहित उन सब के लिये जहन्नुम ही भरपूर बदला है।तू जिस जिसको अपने आमंत्रण से फिसला सकता है फिसला ले उनपर अपने सवार और पैदल चढ़ा ला,उनको धन और संतान में उनके साथ साझा लगाऔर उनको वादे के जाल में फांस। और शैतान के वादे एक धोखे के सिवा और कुछ भी नहीं।यकीनन मेरे बन्दोंपर तुझे कोई प्रभुत्व प्राप्त न होगा और भरोसे के लिए तेरा रब काफी है।

मुश्फिक्क साहब! क्या अब भी कोई कसर रह गया कुरान से **प्रमाण** मिलने में? यहाँ अल्लाह की ना इंसाफी का प्रमाण भी मिल गयाकहा शैतान को,**किंतु जिसको चाहता** है दावत दे कर फिसलाले, अल्लाह अपने आगे फिसलाने की ताक़त इब्लीस को दी। और फिर **कहरहे** हैं मेरे बन्दों पर तुझे कोई प्रभुत्व प्राप्त ना होगा। यहाँ अल्लाह **का कौनसा कहना सही है शैतान** को जो वरदान दिया वह सही है?या **आदम को जो** अपना बंदा बताया वह सही है?पाठको! एक बात जरा **सोच कर मुझे** बताना कि जब,**शैतानऔर** आदम दोनों एक जगह होंगे **और शैतान** कहेगा कि अल्लाहने तो वरदान मुझे दिया है,तुम्हें गुमराह **करने** का। इधरआदम कहेगा कि यार अल्लाह ने मुझे कहा था कि **शैतान** तुम्हारा खुला दुश्मन है उसके बहकावे में मत आओ। पर भाई

तुम तो आल्लाह के भी बाप ठहरे!कि अल्लाह को मात देकर जन्नत से मुझे निकलवा दिया। इस प्रकार अल्लाह केझूठ की कलाई खुलेगी जो दोनों को दो प्रकार कि बातें कही गई,आदम कहेगा कि तुम्हारे बहकावे में मुझे आने को अल्लाह ने मना किया था।और इब्लीस कहेगा भाई तुम्हें मैं बहका सकूँ यह वरदान भी मैंने आल्लाह से ही ली है। ना मालूम उस वक्त अल्लाह की गर्दन नीची हो जाए गी? यही कारण है कि अल्लाह ने कुरान में कहा,"व मकारू व माकराल्लाहो,वल्लाहु खैरुल माकेरीन"कि मकर करते हो तुम, और मैं भी मकर करता हूँ। मैं तुमसे बड़ा मकर करने वाला हूँ।पाठको! अल्लाह को समझेंअल्लाह के काम को भी देखें! यह काम परमात्मा का है ही नहीं,यानि परमात्मा पर दोष लगे तो वह परमात्मा नहीं होसकते। इसी कसौटी को हर जगह लगाते जाएँ तो वेद में परमात्मा पर दोष लगे ऐसी कोई बात नहीं, कारण वह परमात्मा नहीं हो सकते।पर मुशफिक ने इन सभी बातों को जाने बिनाही वेदों पर दोष लगाना शुरू करदिया,जो काम जाकिर नाईक ने किया है। मुश्फिक मियां! आप कुरान को पहले संभालें,वेद को फिर देख लिया जायेगा,आपने मेरे द्वारा दिये"मकर" का अर्थ गलत कह दिया....

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۝۵۴

اور ان لوگوں نے خفیہ تدبیر کی اور اللہ تعالیٰ نے خفیہ تدبیر فرمائی اور اللہ تعالیٰ سب تدبیریں کرنیوالوں سے اچھے ہیں۔(۵۴)

आपने जो हवाला दिया है सूरा अल इमरानअ० ५४ का इसका अनुवाद फारुख खान ने किया है उसे देखें! ***"फिर इसराईली (मसीह के विरुद्ध) गुप्त उपाय करने लगे।उसके उत्तर में अल्लाह ने भी अपना गुप्त उपाय कियाऔर ऐसे उपायों में अल्लाह सबसे बढ़कर है।"***मियां जी! कहनेके लिये आपने लिख तो दिया पर विचार नहीं किया! और न आप के अल्लाह ने इसपर सोचा! यहाँ साफ लिखा कि इसराईली गुप्त

उपाय करने लगे मसीह के विरुद्ध तो अल्लाह ने भी अपना गुप्त उपाय किया! यह है मकर जो आपने योजना,तदबीर,प्लानलिखा अल्लाह कैसे फंसे देखें! यहाँ दोनों कौम में युद्ध चल रही है, मसीह और इस्राईली में।और तदबीर बतारहे हैं अल्लाह? क्या अल्लाह इन जैसे इन्सान हैं?जो किसी कौम की तरफदारी कर तदबीर बता रहे हैं? यही तो मकर है जो अल्लाह ने इसराईली से किया है।यहाँ एक और अज्ञानता की बात है वह यह है कि अगर मसीह और इसराईल की युद्ध ना होती तो कुरान की यह आयत अल्लाह को उतारना ही नहीं पड़ती? तो अल्लाह ज्ञानी हैं या अज्ञानी? और आज तक अल्लाह को पता नहीं लगा कि इस आयत की जरूरत आगे भी रहे गी या नहीं?अगर जरूरत होने पर अल्लाह ज्ञान दे तो ज्ञानी होना समभव नहीं।

अरबी शब्दकोष मिसबाहुल्लुगात को देखें मकर का अर्थ धोखा ही लिखा है।
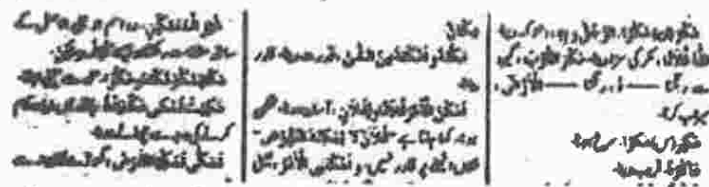
इस किताब का लेखक मैं नहीं हूँ,आप ने सत्य को नकारने का काम किया है।आप लोगों को सत्य पसंद नहींऔर आप लोग न सत्य को जानना चाहते हैं। अगर सत्य को धारण करते तो आज यह धरती मनुष्यों के खून से न रंगी होती।आप लोगों की आदत बनी है सत्य को कुबूल ना करनाऔर अपनी गलत बातों को सहीबताना।आगे आप ने फिर कहा!

"यदि आपको यह समझ में नहीं आए तो आपको इसी दुनिया से कुछ उदाहरण आपके सामने रखता हूँ। multiple choice question paper के बारे में शायद आपने सुना हो। यह अधिकतर परीक्षाओं में अपनाया जाता है, जिन से एक विद्यार्थी की वास्तविक योग्यता की जांच की जाती है। इस तरह की परीक्षा की विशेषता

यह होती है कि विद्यार्थी को विकाल्प दिए जाते हैं, जिन में से तीन गलत और एक सही होता है। जो विद्यार्थी इन में मे अपने अध्ययन के आधार पर गलत जवाब से बच कर सही उत्तर दे, वह ही चयन के योग्य है। प्रश्न पत्र में नकारात्मक अंक(negative marking) भी होता है। हर गलत उत्तर के लिए ०.२५ अंक काटे जाते हैं। यदि आपने multiple choice questions नहीं देखे हैं, तो में एक उदाहरण आपके समक्ष रखता हूँ।

प्रश्न: किसने यह आह्वान किया की "पुन: वेदों को अपनाएं"?

(a) रामें कृष्ण परमहंस

(b) विवेकानंद

(c) ज्योतिबा फूले

(d) दयानन्द सरस्वती

अब इसका उत्तर तो आपको मालूम ही होगा। लेकिन सही उत्तर के साथ इसमें -गलत उत्तर भी रख दिए गए हैं। अब इस में सोचने की बात यह है की चयन करता ने जानते बूझते गलत विकल्प उत्तर मे क्यों डाले? और गलत विकल्प चुनने पर ०.२५ अंक क्यों काटे? आप भी थोड़ा सा सोचिए। आपको स्वयं उत्तर मिल जाए गा।"

मुश्फिक मीयां! आप फिर यहां फंस गए! ....क्योंकि पहले बिना ज्ञान दिये, विद्यार्थी से परीक्षा लेना मूर्खता रहे गी, तो कुरान आने के पहले वालों से परीक्षा कैसे ली गई होगी? जब अल्लाह को ही सच्च पसंद नहीं तो उसके बंदो को भी सच्च कहां नज़र आएगा? और कुरान में इब्लीस ने तो अल्लाह को झूठा सिद्ध कर दिखाया.... मेरे झूठा होने को तो छोड़ो...पहले अल्लाह को बचालो! जिसे इब्लीस ने तो झूठा ही बना दिया! और आप भी तो उसी के ही बंदे हो ना!!!

मेरा सवाल था सूरा नुह आयत २६-२८.मेरे सही किये गए अर्थ को आपने गलत तर्जुमा करनेकी आदत बताया....

وَقَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾ إِنَّكَ إِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۖ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

اور نوحؑ (علیہ السلام) نے (یہ بھی) کہا کہ اے میرے پروردگار کافروں میں سے زمین پر ایک باشندہ بھی مت چھوڑ۔(۲۶) (کیونکہ) اگر آپ ان کو (روئے زمین پر) رہنے دیںگے تو آپ کے بندوں کو گمراہ کر دیںگے اور (آگے بھی) ان کے محض فاجر اور کافر ہی اولاد پیدا ہو گی۔ (۲۷) اے میرے رب مجھ کو اور میرے ماں باپ کو اور جو مومن ہونے کی حالت میں میرے گھر میں داخل ہیں ان کو (یعنی اہل وعیال باستثناء زوجہ وکنعان) اور تمام مسلمان مردوں اور مسلمان عورتوں کو بخش دیجئے اور ان ظالموں کی ہلاکت اور بڑھائیے۔(۲۸)

मैं फारुख खान के अनुवाद को फिर लिख रहा हूँ। *"और नूह ने कहा! मेरे रब! इन इन्कार करने वालों में से कोई, जमीन पर बसने वाला न छोड़। अगर तूने इनको छोड़ दिया तो यह तेरे बन्दों को गुमराह करेंगेऔर इनकी नसल से जो भी पैदा होगा दुराचारी और बड़ा इन्कार करने वाला ही होगा, मेरे रब! मुझे और मेरे माँ बाप कोऔर हर उस व्यक्ति को जिसने मेरे घर में ईमानवाले की हैसियत से प्रवेश किया हैऔर सबईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों को माफ़ कर दे और ज़ालिमों के लिए तबाही के सिवा किसी चीज में भी वृद्धि न कर।"*

मैं आप को चुनौति दे रहा हूँ कि मैंने जो अर्थ लिखा वह गलत कैसे, कौन सी गलती है? और अगर गलती है भी तो फारुख खान को गलत बताते, मुझे ही गलत बता दिया!! मैं शुरू से कह रहा हूँ आप लोगों की आदत है **सही को गलत कहने की**। आप लोगों को यह विरासत में मिली है जिसको आप मानते हैं। विचारणीय बात है किएक पैग़म्बर हो कर यह दुआ मांगना क्या यह मानवता विरोधी नहीं? और वह अल्लाह कैसे जो किसीको हलाक करने की दुआ को कुबूल करे? एक साधारण इन्सान भी इस काम को नहीं कर सकता?इस्लामिक तालीम भी यही है कि हम जियेंगे हमारी पत्नी जियेगी तो हम दुनिया दुबारा बनालेंगे।हजरत नूह ने अल्लाह से दुआ यही मांगी।यही तो वह तालीम है,"हमिअस्त हमिअस्त"मैं ही हूँ... मैं ही हूँ। इस्लाम तो जन्म काल से इसी प्रयास में लगा है। कुरान की इस आयत में भी यही बात कही गयी जो नूह ने अल्लाह से दुआ मांगी,कि**ईमान लाने वालेमर्दऔर ईमान लाने वाली औरतें,इनसब को माफ़ करदे**।मेरा सवाल है कि अल्लाह ने यहाँ ईमानदार मर्दऔरऔरत किसको कहा? और जो ईमानदार नहीं क्या वह सब बेईमान हैं? क्या किसीको बेईमान कहना इस्लाम ने गाली समझा है कभी?इससे तो इस्लाम के दिमागी स्तरका पता लगता है? इस्लाम ने अपने जन्म काल से इस ईमानदारी के नाम से जितना खून बहाया इतिहास गवाह है,इतना कुछ करने के बाद भी लोग इस्लाम के मानी शांति बता रहे हैं! एक बात और है कि हजरत नूह की प्रार्थना पर अल्लाह ने, कश्ती पर आये को छोड़ सब को हलाक कर दिया,जो लोग ईमान नहीं लाये उन सब को।पर मियां जी! यह तो बताएं कि उसमें हलाक हुवे जीव-जंतु की क्या गलती थी जो अल्लाह ने उन्हें मारवा डाला? यह कौन सा इंसाफ है, मनुष्य को मरवा दिया जो बेईमान थे यह तो चलो मान भी लें,कि ईमान ना लाना उनकी गलती! पर उन जीव-जंतु की क्या गलती थी जो अल्लाह ने उन्हें मरवा दिया?यह जीव

हत्या का पाप किसपर लगे गा, हजरत नूह पर! या अल्लाह पर? यह पाप लगा तो पापी बनगया, तो पैग़म्बर पापी है या अल्लाह?और अगर जीव हत्या पाप नहीं,तो आपको प्रमाण देना होगा? भाई आप तो जवाब दे रहे थे,पर सवालों में घिरते जा रहे हैं!!! यहाँ भी आप कुरान से हट कर वेद में आ गये,आपने तो लिखा महेन्द्र पाल के १५ सवालों का जवाब दे रहा हूँ? आपने मेरे सवालों का जवाब दिया है या मुझसे सवाल किया है? रही बात वेद की,**अगर आप को परमात्मा मकर करने वाले दिख रहे हैं जो मकर कुरान में है! तो इसका मतलब यह निकला कि वेदका नक़ल किया है कुरान** नेश्कारण? कुरान से पहले है वेद,जब वेद में धोखा बाज हैं परमात्मा,फिर अल्लाहको धोखेबाज किसलिये बनाया गया? सिर्फ वेद में ही रहने देते?यहाँ भी आप सवालों में घिरे!!! आप को यह पता ही नहीं कि परमात्मा पर कोई दोषलगे तो परमात्मा कहलाना संभव न होगा। आप ने भी सूरा राद का ३१वें आयत का आधा अधूरा अर्थ किया है देखें! मैं पूरा लिख रहा हूं.....

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتَىٰ ۗ بَلْ لِلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۗ أَفَلَمْ يَيْأَسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيعًا ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِنْ دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿٣١﴾

اور اگر کوئی ایسا قرآن ہوتا جس کے ذریعے پہاڑ (اپنی جگہ سے) ہٹادیے جاتے یا اس کے ذریعہ سے زمین جلدی جلدی طے ہو جاتی یا اس کے ذریعہ سے مردوں کے ساتھ کسی کو باتیں کرادی جاتیں تب بھی یہ لوگ ایمان نہ لاتے بلکہ سارا اختیار خاص اللہ ہی کو ہے کیا (یہ سن کر) پھر بھی ایمان والوں کو اس

بات سے دلچسپی نہیں ہوئی کہ اگر خدا تعالیٰ چاہتا تو تمام (دنیا بھر کے) آدمیوں کو ہدایات کر دیتا اور یہ (مکہ کے) کافر تو ہمیشہ (آئے دن) اس حالت میں رہتے ہیں کہ ان کے (بد) کرداروں کے سبب ان پر کوئی نہ کوئی حادثہ پڑا رہتا ہے یا ان کی بستی کے قریب نازل ہوتا رہتا ہے یہاں تک کہ اللہ کا وعدہ آجاوے گا یقیناً اللہ تعالیٰ وعدہ خلافی نہیں کرتے۔(۳۱)

"और क्या हो जाता अगर कोई ऐसा कुरान उतार दिया जाता जिसके जोर से पहाड़ चलने लगते, या जमीन फट जाती,या मुर्दे कब्रसे निकलकर बोलने लगते? (इस तरह की निशानियाँ दिखा देना कुछ मुश्किल नहीं है) बल्कि सारा आधिकार ही अल्लाह के हाथ में है,फिर क्या ईमान वाले,अभी तक इन्कार करने वालों की मांग के जवाब में किसी निशानी के प्रकट होने की आस लगाये बैठे हैं और वह यह जानकर,निराश नहीं होगये कि अगर अल्लाह चाहता तो सारे इंसानों को सीधे मार्ग पर लगा देता। जिन लोगोंने अल्लाह के साथ इंकार की नीति अपना रखी है उनपर उनके करतूतों के कारण कोई न कोई आफत आती ही रहती है या उनके घर के करीब कहीं उतरती है।यह सिलसिला चलता रहेगा यहांतक कि अल्लाह का वादा पूराहो,यकीनन अल्लाह अंपने वादे के विरुद्ध नहीं जाता।"

यह है पूरा अर्थ परआपने लिखा है ***"अल्लाह ने सारे लोगों को मोहोल्लत दी है, एक निर्धारित समय तक"***आपने मेरे सही अर्थ को भी गलत कह दिया! मीयां जी! यह गलत बयानी किसलिए! अगर अल्लाहने सारे लोगों को मोहोल्लत दी!!तो ईमानवालों का क्या मतलब? फिर सारे लोगों में क्या बेईमान भी शामिल हैं? मेरा सवाल ही यही था कि अल्लाहने मानव समाज को ईमानदार और बेईमानो में बांटा है या नहीं? हुजूर!यहाँ अल्लाह ही निरुत्तर हैं, आप कहांसे जवाब दे सकेंगे!!फिर ज्ञान विरुद्ध बात है अल्लाह की!कि***ऐसा कुरान उतार दिया जाता जिससे पहाड़ चलने लगते***, फिर तो यह वाला कुरान भी संदेह के

घेरे में हो गया जिस कुरान की चर्चा हम और आप कर रहे हैं?कारण **वह** कुरान कोई अलग ही है जिससे पहाड़ भी चलने लगे!! या जमीं ही फट जाये!! इस कुरान में वह दम ही नहीं कि पहाड़को चलादे और जमीं को फाड़ दे?और मुर्दे कबर से निकल कर बोलने लगें! तो वह कुरान कहाँ है जिस में यह सभी गुण हैं? मीयां जी! वह कुरान आप लोगों ने कहां छुपा रखी है!!! यहाँ भी सवालों कि फुलझड़ी लगी है।आगे देखें! **अगर अल्लाह चाहता, तो सारे इन्सानों को सीधे मार्ग पर लगा देता**।अब सवाल है कि अल्लाह ही अपने आपमें दोषी है कि वह सारे इंसानों को अगर सीधा मार्ग पर चला सकते हैंफिर ना चला कर मानव समाज को एक दुसरे के दुश्मन बनाने के पीछे कौन सी हिकमत है!? फिर यहाँ सब इंसानों की बात कहीगयी?तोईमान और बेईमान कौन हैं? फिर बताया **जिन लोगों ने अल्लाह के साथ इन्कार की नीति अपना रखी है उनपर उनके करतूतों के कारण कोई न कोई आफ़त आती ही रहती है,या उनके घर के करीब कहीं उत्तरती है।यह सिसिला चलता रहेगा,यहां तक कि अल्लाह का वादा पूरा हो। जिन लोगों ने अल्लाह के साथ इन्कार की नीति अपना रखी है,उनपर अल्लाह कि आफत आती ही रहती है।** देखें! कुरान का अल्लाह बदलेकी भावना रखते हैं,जो इंसानी फितरत है,यह काम अल्लाह का है और यह आफ्त डालने के लिये अल्लाह का वादा हैऔर अल्लाह जो वादा करता है वह पूरा करता है। विचारणीय बात है कि जो अल्लाह सर्व शक्तिमान है और उसकी तरफ से,इंसानों पर आफत ढाई जाये,फिर उस आफत से इन्सान को बचाने वाला कौन होगा भला? यहाँ भी अल्लाह फंसे हैं? अगर अल्लाह आफ्त इन्सान पर डालते हैं तो इन्सान का कर्म कहाँ गया? बिना कर्म के आफत में डालने पर अल्लाह दोषी होगा, बिना इंसाफ वाला होगा, न्यायकारी भी नहीं रहेगा!आपनेइसी कुरान को वेद के साथ जोड़ दिया,जब कि वैदिक मान्यता है कि**अवश्यमेव भोगतव्यं कृतम**

कर्मम् शुभा शुभम अवश्य ही भोगना है किये कर्मों का फल, शुभ और अशुभ। और वैदिक मान्यता है कि मानव कर्म करने में स्वतन्त्रऔर फल भोगने में प्रतंत्र है। मानव कर्म करता है, फलदाता परमात्मा है।किन्तु कुरान में तो अंल्लाह की मर्ज़ी चलती है जिस को चाहे आफत में डालदेऔर आफत डालने में उसका वादा पक्का है।इसी कुरान की तुलना वेद के साथ करके इन्होंने राजा भोज और गंगू तेली जैसी कहावत को पूरी किया है।फिर भी मैं कहना चाहूँगा कि अगर यह दोष वेद में आप को दिखाई दी, तो यही दोष कुरान में न लगने देते तब तो बात थी! और कुरान को दोष मुक्त भी करा सकते थे।किन्तु कुरान को भी दोषी बनाकर कौनसा अकलमन्दी का परिचय दिया भाई!!!

आगे वह जवाब देते लिख रहा है......

"पंडित जी, यह प्रार्थना तो उन पापियों को नष्ट करने के लिए थी जिन का पाप हद से बढ़ गया था और ईमानवालों (अर्थात्त जो भले लोग हों) को बचाने की प्रार्थना है। इसमें आपको स्वार्थ कैसे नज़र आया? यदि अल्लाह उन पापी काफिरों (अल्लाह के भले मार्ग पर न चलने वाले) को नष्ट नहीं करता तो वे दुनिया में पाप को फैलाते जैसा कि आयत से ज़ाहिर है। दुराचारियों को नष्ट करने और सदाचारियों की रक्षा करने की प्राथना करना कोनसी स्वार्थपरता है?"

अरे अकल के दुश्मनों! पापियों को नष्ट करने के लिए इन्सान को दुआ करना पड़ेगा?यानि कुरान के अल्लाह को पता नहीं कि पापी को दण्ड देना है या नहीं?तो पैगमम्बर को अल्लाह इसलिये बनाया कि पापियों को जब दण्ड देना अल्लाह भूल जाएँ तो वह अल्लाह को याद दिलाते रहें? वाह रे अल्लाह! और तेरी कारीगरी?मैं आपसे पूछता हूँ किवह पापी कौन लोग थे? ईमान वाले अथवा बेईमान?वह लोग इन्सान थे या नही? वेद में इस प्रकार दोष पूर्ण बातों के लिये कोई जगह नहीं

और ना ही परमात्मा पर इस प्रकार का कोई दोष लग सकता है। कारण, दोष लगने से परमात्मा का होना संभव ना होगा। वेद के अर्थ को समझने के लिये बुद्धिकी जरूरत है! अंधविश्वास के लिये कोई जगह नहीं। आँख बंद कर किसी भी बात को मानने के लिये मना है।तर्क की कसौटी पर, खरा उतरने पर मानने की बात है। कारण, यहाँ तर्क को ऋषि कहा गया।और कुरान में अल्लाह ने कहा,ज़ालिकलकिताबुलारैबाफि: अर्थ: ***कोई शक व शुबा की गूंजाईश नहीं इस किताब में।***यहाँ तर्क के लिये कोई जगह नहीं सिर्फ मानना है,जानने की कोई बात नहीं और ना तर्क या बुद्धि का कोई काम।मैं ऊपर लिख आया हूँ कि मानव वही जो दिमाग से कामले,अकल से कामले आदि। इंसानों में और जानवरों में यही तो भेद है,यही कारण है कि मानव को उत्कृष्ट प्राणी कहा गया। मानव में और जानवरों में भेद क्या है... मानव विचारशील है, कुछ काम करने से पहले विचारकरता है,फिर उस काम को अंजाम देता है।यह सोचने समझने की ताकत सिर्फ मनुष्य में है, यही कारण बना कि मनुष्य ***अफ़ज़लुलमख्लूकात*** कहलाया।तो मैं लिख रहा था कि परमात्मा के जिम्मे इतना काम है,सृष्टि की रचना करना,उसे स्थिति में लाना, उसका प्रलय करना,मानव मात्र को उनके किये कर्मों का फल देना। इसके अतिरिक्त परमात्मा के जिम्मे में कोई काम ही नहीं है,जब मानव मात्र के कर्मों का फल दाता है, तो किसी मनुष्य के या पैग़म्बर के कहने पर परमात्मा किसी के कर्म फल को बदल देअथवा कमो-बेश करे यह तो समभव ही नहीं। कारण, यह उसके न्याय व्यवस्था में दोष लगेगा।पर कुरान, इस्लाम और इस्लाम के मानने वाले इस तरीके को नहीं मानते।और अल्लाह किसीके कहने पर या सुफारिश पर सजा भी देते हैं और जज़ा भी देते हैं। जो अल्लाह अपने ज्ञान में इन्सान को दखलंदाजी करने का मौका देभला! वह अल्लाह तो हो सकता है किन्तु परमात्मा नहीं

होसकता। यही फर्क है अल्लाह में और परमात्मा में। तथा वेदऔर कुरान में, जो दोष यहाँ कुरान में लग रहा है,वह दोष वेद में लगना सम्भव ही नहीं। आप नाहक ही वेद को बिना समझे दोष लगा रहे हैं।वेद के अर्थ बोध के लिये, उनके स्वर,विनियोग आदि के लिए ऋषियों ने वेदांग नाम से ६ शास्त्रों को तैयार किया,जो

शिक्षा कल्पो व्याकरणं, निरुक्तं छन्दसां चयः।
ज्योतिषामयनं चैव वेदाङ्गनी षडे व तु।।

ये वेदांग ६ विद्यायें हैं, जिनका विभिन्न वेदाङ्गीय ग्रंथों से अभ्यास कराया जाता है।जैसा

छन्दःपादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते ।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरूक्तंश्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

स श्रेयसा चाभ्युदयेन चैव सम्यक् प्रयुक्तः पुरुषं युनक्ति।

यह अच्छे प्रकार से प्रयोग किया शब्द इस संसार के सब सुखों एवं मुक्ति-सुख से मनुष्य को युक्त कर देता है ।

दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो व मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाहः।

अन्यत्र,कहा है,

स्वजनः श्वजनो मा भूत,सकलं शकलं,सकृत् शकृत्।

अर्थात स्वजन(अपना), श्वजन(कुत्तेका बच्चा), सकल(सम्पूर्ण) शकल(टुकड़ा) सकृत्(एकबार) शकृत(बिष्ठा) अश्व(घोड़ा) अस्व(पराया).. ..यह भेद है वेद के उच्चारण करने में,ठीक इसी प्रकार हर जुबान में भेद है बोलने या उच्चारण करने में। तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है,

इसे उच्चारण दोष कहते हैं। और आपने इस प्रकार की गलतियां सब जगह की हैं। अब मेरा प्रश्न था अल्लाहने कुरान में फरमाया कि ***"पति-पत्नी में प्यार मुहब्बत और हमदर्दी मैं ने दिया।"*** सूरा रूम आयत .२१

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

اور اس کی نشانیوں میں سے ایک یہ ہے کہ اس نے تمہارے واسطے تمہاری جنس کی بیبیاں بنائیں تاکہ تم کو ان کے پاس آرام ملے اور تم میاں بیوی میں محبت اور ہمدردی پیدا کی اس میں ان لوگوں کے لیے نشانیاں ہیں جو فکر سے کام لیتے ہیں۔(۲۱)

अर्थ: ***मेरी निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि मैंने औरतों को बनाया मर्दों के आराम के लिए और पति-पत्नी के प्यार मुहब्बत व हमदर्दी को हमने दिया ।***

मैंने पुछा!कि जब अल्लाहने पति-पत्नीके प्यार को दिया हो, और उसे कोई विच्छेद करे तो क्या खुदा के ऊपर खुदकारी नहीं होगी? आपने मेरी हर बात को गलत बताया है जबकि इस में एक भी गलती नहीं।मैंने कुरान को देख कर ही लिखा हूँ फारुख खान के हिंदी अनुवाद से सारा प्रमाण दिया हूँ।किन्तु यह हठ और दुराग्रह से ग्रसित होने के कारण सत्य को स्वीकार करना आप लोगों की आदत नहीं और सत्य को गलत बताने का अभ्यास अल्लाह से लेकर उसके अनुयाइयों तक का है। मैंने लिखा इस आयत के अनुसार तो कुरान में फिर तलाक कि विधि नहीं है?लेकिन कुरान ही कहता है नहीं तलाक की भी गुंजायश है जो,कि सूरा बकर के आयत २२९ से २३१ का हवाला मैंने दिया है।

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٤﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا

كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِّلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِن نِّسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ
أَشْهُرٍ ۖ فَإِن فَاءُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَن يَكْتُمْنَ مَا
خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِن كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ
بِرَدِّهِنَّ فِي ذَٰلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا ۚ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ
وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٨﴾ الطَّلَاقُ مَرَّتَانِ ۖ فَإِمْسَاكٌ
بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ ۗ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَأْخُذُوا مِمَّا آتَيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا
أَن يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا
فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا ۚ وَمَن يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٢٩﴾ فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِن بَعْدُ حَتَّىٰ تَنكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ۗ فَإِن
طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَن يَتَرَاجَعَا إِن ظَنَّا أَن يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۗ وَتِلْكَ حُدُودُ
اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣٠﴾ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ
بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوا ۚ وَمَن يَفْعَلْ
ذَٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ وَمَا أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُم بِهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٣١﴾ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا
تَعْضُلُوهُنَّ أَن يَنكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُم بِالْمَعْرُوفِ ۗ ذَٰلِكَ يُوعَظُ
بِهِ مَن كَانَ مِنكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ ذَٰلِكُمْ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۗ وَاللَّهُ

يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۲﴾ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ
اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ لَا
تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى
الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ
اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۳۳﴾ وَالَّذِيْنَ
يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا
بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۳۴﴾ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ
اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا
اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۚ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ
اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
حَلِيْمٌ ﴿۲۳۵﴾

اور اللہ کو اپنی قسموں کے ذریعہ سے ان امور کا حجاب مت بناؤ کہ تم نیکی کے اور تقویٰ کے اور اصلاح فی مابین خلق کے کام کرو۔ اور اللہ تعالیٰ سب کچھ سنتے جانتے ہیں۔ (۲۲۴) اللہ تعالیٰ تم پر (آخرت) میں دار وگیر نہ فرماویں گے تمھاری قسموں میں (ایسی) بیہودہ قسم پر۔ لیکن دار وگیر فرماویں گے اس (جھوٹی قسم) پر جس میں تمھارے دلوں نے (جھوٹ بولنے کا) ارادہ کیا ہے۔ اور اللہ تعالیٰ غفور ہیں حلیم ہیں۔ (۲۲۵) جو لوگ قسم کھا بیٹھتے ہیں اپنی بیوں (کے پاس جانے) سے ان کے لیے چار مہینے تک کی مہلت ہے سو اگر یہ لوگ (قسم توڑ کر عورت کی طرف) رجوع کر لیں تب تو اللہ تعالیٰ معاف کر دینگے

رحمت فرمادینگے۔ (۲۲۶) اور اگر بالکل چھوڑ ہی دینے کا پختہ ارادہ کر لیا ہے تو اللہ تعالیٰ سنتے ہیں جانتے ہیں۔(۲۲۷) اور طلاق دی ہوئی عورتیں اپنے آپ کو (نکاح سے) روکے رکھیں تین حیض تک اور ان عورتوں کو یہ بات حلال نہیں کہ خدا تعالیٰ نے جو کچھ ان کے رحم میں پیدا کیا ہو (خواہ حمل یا حیض) اس کو پوشیدہ کریں۔ اگر وہ عورتیں اللہ تعالیٰ پر اور یوم قیامت پر یقین رکھتی ہیں اور ان عورتوں کے شوہر ان کے (بلا تجدید نکاح) پھر لوٹا لینے کا حق رکھتے ہیں اس (عدت) کے اندر بشرطیکہ اصلاح کا قصد رکھتے ہوں اور عورتوں کے لیے بھی حقوق ہیں جو کہ مثل ان ہی حقوق کے ہیں جو ان عورتوں پر ہیں قاعدۂ (شرعی) کے موافق اور مردوں کا ان کے مقابلہ میں کچھ درجہ بڑا ہوا ہے اور اللہ تعالیٰ زبردست (حاکم) ہیں حکیم ہیں۔ (۲۲۸) وہ طلاق دو مرتبہ (کی) ہے پھر خواہ رکھ لینا قاعدے کے موافق خواہ چھوڑ دینا خوش عنوانی کے ساتھ اور تمھارے لیے یہ بات حلال نہیں کہ (چھوڑنے کے وقت) کچھ بھی لو (گو) اس میں سے (سہی) جو تم نے ان کو (مہر میں) دیا تھا مگر یہ کہ میاں بیوی دونوں کو احتمال ہو کہ اللہ تعالیٰ کے ضابطوں کو قائم نہ کر سکیں گے سو اگر تم لوگوں کو یہ احتمال ہو کہ وہ دونوں ضوابطِ خداوندی کو قائم نہ کر سکیں گے تو دونوں پر کوئی گناہ نہ ہوگا اُس (مال کے لینے دینے) میں جس کو دے کر عورت اپنی جان چھڑا لے۔ یہ خدائی ضابطے ہیں سو تم ان سے باہر مت نکلنا اور جو شخص خدائی ضابطوں سے بالکل باہر نکل جائے سو ایسے ہی لوگ اپنا نقصان کرنے والے ہیں۔ (۲۲۹) پھر اگر کوئی (تیسری) طلاق دیدے عورت کو تو پھر وہ اُس کے لیے حلال نہ رہے گی اس کے بعد یہاں تک کہ وہ اس کے سوا ایک اور خاوند کے ساتھ (عدت کے بعد) نکاح کرے پھر اگر یہ اس کو طلاق دیدے تو ان دونوں پر اس میں کچھ گناہ نہیں کہ بدستور پھر مل جاویں بشرطیکہ دونوں غالب گمان رکھتے ہوں کہ (آئندہ) خداوندی ضابطوں کو قائم رکھیں گے اور یہ خداوندی ضابطے ہیں حق تعالیٰ ان کو بیان فرماتے ہیں ایسے لوگوں کے لیے جو دانشمند ہیں۔ (۲۳۰) اور جب تم نے عورتوں کو (رجعی) طلاق دی (ہو) پھر وہ اپنی عدت گزرنے کے قریب پہنچ جاویں تو یا تم ان کو قاعدے کے مواقف (رجعت کرکے) نکاح میں رہنے دو یا قاعدے کے مواقف ان کو رہائی دو۔ اور ان کو تکلیف پہنچانے کی غرض سے مت رکھو اور اس ارادہ سے کہ ان پر ظلم کیا کروگے اور جو شخص ایسا (برتاؤ) کرے گا

سو وہ اپنا ہی نقصان کرے گا۔ اور حق تعالیٰ کے احکام کو لہو ولعب (کی طرح بے وقعت) مت سمجھو اور حق تعالیٰ کی جو تم پر نعمتیں ہیں ان کو یاد کرو (خصوصاً) اس کتاب اور (مضامین) حکمت کو جو اللہ تعالیٰ نے تم پر اس حیثیت سے نازل فرمائی ہیں کہ تم کو ان کے ذریعہ سے نصیحت فرماتے ہیں اور اللہ تعالیٰ سے ڈرتے رہو اور یقین رکھو کہ اللہ تعالیٰ ہر چیز کو خوب جانتے ہیں۔ (۲۳۱) اور جب تم (میں ایسے لوگ پائے جائیں کہ وہ) اپنی بیبیوں کو طلاق دیدیں پھر وہ عورتیں اپنی میعاد (عدت) بھی پوری کر چکیں۔ تو تم ان کو اس امر سے مت روکو کہ وہ اپنے شوہروں سے نکاح کر لیں جبکہ باہم سب رضامند ہو جاویں قاعدے کے موافق اس (مضمون) سے نصیحت کی جاتی ہے اس شخص کو جو کہ تم میں سے اللہ تعالیٰ پر اور روزِ قیامت پر یقین رکھتا ہو۔ یہ (اس نصیحت کا قبول کرنا) تمھارے لیے زیادہ صفائی اور زیادہ پاکی کی بات ہے اور اللہ تعالیٰ جانتے ہیں اور تم نہیں جانتے۔ (۲۳۲) اور مائیں اپنے بچوں کو دو سال کامل دودھ پلایا کریں۔ یہ (مدت) اس کے لیے ہے جو کوئی شیر خوارگی کی تکمیل کرنا چاہے اور جس کا بچہ ہے (یعنی باپ) اس کے ذمہ ہے اُن (ماؤں) کا کھانا اور کپڑا قاعدے کے موافق کسی شخص کو حکم نہیں دیا جاتا مگر اس کی برداشت کے موافق کسی ماں کو تکلیف نہ پہنچانا چاہیے اس کے بچہ کی وجہ سے اور نہ کسی باپ کو تکلیف دینی چاہیے اس کے بچہ کی وجہ سے اور مثل طریق مذکور کے اس کے ذمہ ہے جو وارث ہو پھر اگر دونوں دودھ چھڑانا چاہیں اپنی رضامندی اور مشورہ سے تو دونوں پر کسی قسم کا گناہ نہیں اور اگر تم لوگ اپنے بچوں کو (کسی اور انا کا) دودھ پلوانا چاہو تب بھی تم پر کوئی گناہ نہیں جبکہ ان کے حوالہ کردو جو کچھ ان کو دینا کیا ہے قاعدہ کے موافق۔ اور حق تعالیٰ سے ڈرتے رہو اور یقین رکھو کہ حق تعالیٰ تمھارے کیے ہوئے کاموں کو خوب دیکھ رہے ہیں۔ (۲۳۳) اور جو لوگ تم میں سے وفات پا جاتے ہیں اور بیبیاں چھوڑ جاتے ہیں وہ بیبیاں اپنے آپ کو (نکاح وغیرہ سے) روکے رکھیں چار مہینے اور دس دن پھر جب اپنی میعاد (عدت) ختم کر لیں تو تم کو کچھ گناہ نہ ہوگا ایسی بات میں کہ وہ عورتیں اپنی ذات کے لیے کچھ کاروائی (نکاح کی) کریں قاعدے کے موافق اور اللہ تعالیٰ تمھارے تمام افعال کی خبر رکھتے ہیں۔ (۲۳۴) اور تم پر کوئی گناہ نہیں ہوگا جو ان مذکورہ عورتوں کو پیغام (نکاح) دینے کے بارے میں کوئی بات اشارۃً کہو یا اپنے دل میں (ارادۂ نکاح کو) پوشیدہ رکھو اللہ تعالیٰ کو یہ

بات معلام ہے کہ تم ان عورتوں کا (ضرور) زذکر مذکور کرو گے لیکن ان سے نکاح کا وعدہ خفیہ (اور گفتگو) مت کرو مگر یہ کہ کوئی بات قاعدے کے موافق کہو اور تم تعلق نکاح کا (فی الحال) ارادہ بھی مت کرو یہاں تک کہ عدت مقررہ اپنی ختم کو پہنچ جاوے اور یقین رکھو اس کا کہ اللہ تعالیٰ کو تمھارے دلوں کی بات کی اطلاع ہے سو اللہ تعالیٰ سے ڈرتے رہا کرو اور یقین رکھو کہ اللہ تعالیٰ معاف بھی کرنے والے ہیں حلیم بھی ہیں۔(۲۳۵)

जो जवाब लिखा है ***"पंडितजी! आपके इस प्रश्न का न सर है न पैर"*** यह कितने चालाक अपने को दर्शाना चाहते हैं देखें!एक मार्मिक प्रश्न जिनका जवाब इनके पास नहीं है,उसे कह रहे कि यह बिना सर और पैर का सवाल है।मतलब यह निकला,कि यह सर-पैर नहीं बल्कि यह धड़ है। कारण शरीर तो सबको लेकर है मात्र सरऔर पैर को शरीर नहीं कहा जाता।यहाँ साफ लिखा है कि पति-पत्नी के प्यार-मोहब्बत को अल्लाह ने दिया है, तो उसे अलग करे कोई, तो देनेवाले के आदेश का उलंघन नहीं? और वह भी अल्लाह की दी हुई वस्तु।पता लगा यह लोग सुविधावादी हैं, अपना मतलब सिद्ध करना है चाहे अल्लाह के आदेश का उलंघन हो या किसी और के? अब ऊपर वाली आयत से मालूम हुआ कि कुरान में तलाक कि विद्धि नहीं है? ना.. ..ना! अब अल्लाह ने भी अपनी बयाँ बदल दिया,जो सूरा बकर के २२९ से२३१ में बताया गया। यहाँ खूब चटकिला मसला अल्लाहने दर्शाया है पाठक गण ध्यानं से पढ़ें! मैं और थोड़ा पीछे से अल्लाह का बयान कैसा दिक भ्रमित करने वाला है, बतारहा हूँयानिआयत२२४से।

"अल्लाह के नाम को ऐसी शपथ ग्रहण के लिए प्रयोग न करो,जिनका मकसद नेकी और धर्म परायण और लोगों किभलाई के कामों से रुक जाना हो।अल्लाह तुम्हारी सारी बातें सुन रहा है और सब कुछ जानता है। जो निरर्थक कसमें तुम बिना इरादे के खा लिया करते हो,उन पर अल्लाह नहीं पकड़ता,मगर जो कसमें तुम

सच्चे दिलसे खाते हो, उनके बारे मे वह जरुर पूछेगा। अल्लाह बहुत क्षमा करनेवाला और सहनशील है।*

अल्लाह मुसलमानों को कसम खाना सिखा रहे हैं, कि अल्लाह के नाम को ऐसी कसम खाने के लिए प्रयोग ना करो,जिनका मकसद नेकी और धर्म पर चलने वालों की भलाई के काम रुक जायें।यहाँ एक बात खूब स्पष्ट हो गयीकि अल्लाह के नाम से कसम खाने को अल्लाह खुद किसलिए कहेगा भला?अगर यह उपदेश अल्लाह का होता,तो यह कहते **किमेरे नामसे कसम खाने का प्रयोग ऐसे कामों में ना करो जो नेकी और धर्म पर चलने वालों के काम रुक जायें।** पता लगा कि अल्लाह के नाम से कसम खाने की बात कोई और कह रहा है?आने वाला शब्द और भी खोल दिया कि,***जो निरर्थक कसमें तुम बिना इरादे के खाते हो,वह अल्लाह नहीं पकड़ता।मगर जो कसमें तुम सच्चे दिलसे खाते हो उनके बारे अल्लाह जरूर पूछेगा।*** अगर यह बात अल्लाह की होती तो अल्लाह सब कुछ जानने वाला है तो उसे यह किसलिए कहना पड़ता कि निरर्थक कसमेंऔर सच्चे दिलसे कसमें? यह बात किसी और की होने के लिए वह जान नहीं पाया कि कौनसी दिल से और कौनसी कसमें दिखावेकीहैं?यहाँ अल्लाह खुद सवालों के घेरे में आगया?मुश्फिक भाई! आप जवाब कहां से दे सकते हैं?जब कि आप सवालों में ही घिरते जा रहे हैं?यह बकर का आयत २२४, २२५को देखा। अब २२६ को देखें! ...

"जो लोग अपनी औरतों से सम्बन्ध न रखने की कसम खा बैठते हैं उनके लिए चार महीने की मुहलत है।अगर वह पलट आएँ तो अल्लाह क्षमा करने वाला और सहनशील है।*

यहाँ जो समझने कि बात है वह यह है किजो लोग अपनी औरतों से सम्बन्ध न रखने की कसम खा बैठते हैं उनके लिए ४ महीने की छूट हैऔर अगर कसम खाने की पहली दशा में चला जाये तो अल्लाह

माफ़ करदेंगे?यहाँ अल्लाह माफ़ करने के लिए ४ महीनेकी शर्त रख दी।अब कोई पति-पत्नी के सम्बन्ध ना रखने की कसम खाले तो अल्लाह सजा देंगे और जो कसम ना खाए तो अल्लाह उसे माफ़ करदेंगे।अल्लाह ने माफ़ कब किया जब कोई पति-पत्नी को छोड़ने की कसम ना खाए?इस कसम खाने से अल्लाह की दया ख़तम होजाए गी।इस कसम खाने या न खाने से अल्लाह की माफ़ी पर क्या खलल पड़ सकती है भला?२२७ में कहा

"और अगर उनहोंने तलाक हीकी ठान ली हो तो जाने रहें कि अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है ।"

जब अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है! तो कोई अपनी पत्नी को तलाक देगा फिर पहले से अल्लाह किसलिए नहीं जान पाये? फिर २२८में क्या लिखा देखें!

"जिन औरतों को तलाक दीगई हो वह तीन बार मासिक धर्म होने तक़ अपने आप को रोके रखें और उनके लिए यह जायज नहीं कि अल्लाह ने उनके गर्भाशय में जो सृजन किया हो उसे छिपाएं।उन्हें हरगिज ऐसा न करना चाहिये,अगर वह अल्लाह और अंतिम दिनपर ईमान रखती हैं।उनके पति सम्बन्धों को ठीक रखने के लिए तैयार हों तो वह इस इद्दत की अवधि में उन्हें फिर पत्नी के रूप में वापस ले लेने के अधिकारी हैं।"

जिन औरतों को तलाक दीगई,वे तीन मासिक धर्म होने तक अपने को रोक रखें।अल्लाह ने उनके गर्भाशय में जो सृजन किया हो। पढ़े लिखे लोग जरा विचार करें कि गर्भाशय में सृजन पति-पत्नी के मिलने से होता है याउसके बिना होता है? किन्तु कुरान में तो **अल्लाह ने उनके गर्भाशय मे सृजन किया है**, यह कैसी बात है भाई!!! और आगे देखें! २२९ को

"तलाक दो बार है,फिर या तो सीधी तरह औरत को रोक लिया जाए या भले तरीकेसे उसको विदा कर दिया जाए। और विदा करते हुएऐसा करना तुम्हारेलिए जाइज़ नहीं है कि जो कुछ तुम उन्हें दे चुके हो,उसमें से कुछ वापस ले लो।अलबत्ता यह अपवाद है कि पति पत्नी को अल्लाह की निर्धारित सीमाओं पर कायम न रह सकने की आशंका हो। ऐसी दशा में अगर तुम्हें यह भय हो कि वे दोनों अल्लाह की सीमाओं पर कायम न रहेंगे,तो उन दोनों के बीच यह मामला हो जाने में कोई हरज नहीं,कि पत्नीअपनेपति से कुछ मुआवज़ा देकर जुदाई हासिल कर ले। ये अल्लाहकी निर्धारित की हुई सीमाएं हैं,इनका उलंघन न करो और जो लोग अल्लाह की सीमाओं का उलंघन करें वही ज़ालिम है।"

यहाँ भी कई सवाल दीख रहे हैं, यहाँ दो बार तलाक की बात है यानि दो तलाक होजाने पर उस पत्नी को घर रखा जा जासकता है या दूर दराज भी किया जा सकता है? और यह उचित नहीं है कि जोकुछ पत्नी को दिया गया हो उसमें से कुछ वापस लो।अल्लाह की निर्धारित सीमाओं पर कायम न रह सकने की आशंका हो,तो पत्नी को चाहिये कि पति को कुछ मुवाब्जा दे कर उनसे जुदाई हासिल कर लें।यह अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाएं है इनका उलंघन न करो।जो सीमा उलंघन करेगा वही ज़ालिम है। इससे खुलासा हो गया कि यह जो आदेश तलाक का बताया गया, यह सिर्फ मुसलमानों के लिए ही होगया?कारण यह जो तरीका है, इस्लाम को छोड़ मानव समाज में कोई नहीं मानता या मानेगा! तो स्पष्ट होगया कि कुरान का आदेश सिर्फ मुसलमानों के लिए है। जो उपदेश किसी वर्ग विशेष के लिए हो तो वह ईश्वरीय ज्ञान होना संभव ही नहीं। दूसरी बात अल्लाह की है कि जो सीमा उलंघन करेगा वही ज़ालिम है। ज़ालिम का अर्थ क्या है?जुल्म करने वाला,अब कौन जुल्म किसपर कर रहे हैं यह देखना है!

मानव समाज में कई बार पति-पत्नी में मतभेद होजाता है और वह यहाँ तक पहुंचता है कि तलाक तक की नौबत आजाती है,जिसको दो भागों में यहाँ कहा गया,कि अगर दो तलाक दे और गलती का एहसास हो तो उसे अपने पास रखे,अथवा अपने से अलग करदे जो सामान दिया है वापस ना ले। यह दया है,यहाँ शब्द आया है **अवमारू फिन बे अहसान**, उसके ऊपर दया शील हो।पर समझने कि बात है कि जिसको हम अपने से अलग करदेंगे उसके ऊपर दया का क्या मतलब?और यह अल्लाह का आदेश है,जो इस आदेश का उलंघन करे वह ज़ालिम है तो कुरान का आदेश किन लोगों के लिए है?जवाब मुसलमानों के लिए! अब यह तलाक में जो तरीका दिया या बताया गया,वह किनके लिए?वह भी मुसलमानों के लिये! फिर इस तरीके को जिसने नहीं माना वह ज़ालिम है?अब कुरान के अनुसार मुस्लमान ही ज़ालिम हैं,कारण अल्लाह का आदेश न मानना जालिमों का काम है। और अल्लाह का आदेश ही मुसलमानों के लिए ही है। जिस मुसलमान ने अल्लाह का आदेश नहीं माना वह जालिम है। अब २३० न०आयत को देखें!

"फिर अगर दो बार तलाक देने के बाद पति ने पत्नी को तीसरी बार तलाक देदे तो वह औरत फिर उसके लिए हलाल न होगी,सिवाय इसके कि उसका निकाह किसी दुसरे मर्द से हो और वह उसे तलाकदे दे, तब अगर पहला पति और वह औरत दोनों यह समझें कि अल्लाह की सीमाओं पर कायम रहेंगे,तो उनके लिएएक दुसरे की ओर पलटने में कोई हरज नहीं।ये अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाएं है,जिन्हें वह उन लोगों के मार्गदर्शन के लिए स्पष्ट कर रहा है,जो उसकी सीमाओं को तोड़ने का परिणाम जानते हैं।"

अब जरूर पता लग गया होगा कि यह सीमा अल्लाह की बनाई हुई है जिसका उलंघन ना करने की बात कही गई।अब सवाल है कि जब यह आदेश अल्लाह का है और अल्लाह का आदेश मानव मात्र के

लिए है अथवासिर्फ मुसलमानों के लिए?मानलिया जाये कि मानव मात्र के लिए है!तो मुसलमानों को छोड़ इस आदेश को दुनिया के कौन लोग मानेगें भला? वह आयत यह है जो ऊपर दियाहै, यहाँ तो कई सवाल आ गये,कि यह कौन सी मानवता की बात होगी जो अपने पत्नी को तलाक दे कर, पश्चाताप करे?और फिर उसे अपने पास रखे,अगर रखना ही था तो छोड़ा किसलिए?अगर मानलें कि कोई दुर्घटना हो भी गई और गलती का अहसास होगया,कि यह काम मैंने अच्छा नहीं किया,तो उसी पत्नी को दुसरे किसी मर्द से निकाहऔर उसके साथ हम बिस्तर में अल्लाह को कौनसी भलाई देखाई दी,इस हिकमत को पाठक जानना और समझना चाहते हैं?इस्लाम वालों की मान्यता है कि यह उस महिला को सजा है।तो महिला को सजा किसलिए?अगर पुरुष गलती करे तो उन्हें कौन सी सजा दी जाएगी?या उन्हें किस प्रकार की सजा देने दिलाने की कोई बात कहीं कुरान और हदीसों में बताई गयी हो? इस्लाम इसे **हलाला** मानता है अर्थात शुद्धी-करण,तो यह शुद्ध किस बात से होगई? एक महिला अपने पति को छोड़ किसी दुसरे मर्द के लिए बिसतरसाथी, शरीर का साथी बनती है तो क्या उसके सतीत्व पर दोष नहीं है? जिस पत्नी को अपने पास रख कर उसकी इज्ज़त और आबरू को सही सालिम और बरक़रार नहीं रख पाया,तो किसी गैर-मर्द के बिस्तर का साथी हम कैसे बना सकते हैं भला? किसीको जब इज्ज़त नहीं दे सके तो किसीकी इज्ज़त को नीलाम करने के हकदार हम कैसे बनजाते हैं भला?और यही अल्लाह की मर्ज़ी है,कोई भी साधारण इन्सान भी किसीकी पत्नी को यह नहीं कह सकता कि तू किसी पराये पुरुष के साथ रात गुजार!इसमें अल्लाह का क्या स्वार्थ है समझ में नहीं आता! क्या अल्लाह मुस्लिम महिलाओं को व्यभिचारी बनाना चाहते हैं? तो मैं फिर लिख रहा हूँ कि यह आदेश दुनिया के लोग मान लेंगे क्या? तो फिर कुरान मानवमात्र के लिए उपदेश कहाँ है? आगे लिखा

"पंडित जी आप ने हलाला की गैर इस्लामी अवधारणा पर तो प्रश्न किया लेकिन अपने वैदिक धर्म की मूल शिक्षा नियोग को भूल गए। नियोग के नाम पर अपनी पत्नी को अन्य पुरुषों से वे आबरू कराना, यह आपकी वैदिक सभ्यता है जिसे आप इस्लाम पर लादने का प्रयास कर रहे हैं। नियोग प्रथा के अनुसार नारी को न केवल निम्न और भोग की वस्तु और नाश्ते की प्लेट समझा गया है बल्कि बच्चे पैदा करने की मशीन बनाया गया है। और नियोग का कारण भी क्या निराला है! केवल एक पुरुष के संतान उत्पन्न करने के लिए नियोग का घटिया प्रावधान वैदिक धर्म में है। नियोग पर मेरी टिप्पणी के लिए देखियह प्रश्न १५ का उत्तर."

जब कि आपने लिखा कि ***मैं पंडित महेन्द्र पाल के सवालों का जवाब दे रहा हूँ।*** यह मेरा सवाल नहीं था जो कि आपने लिखा है,कारण नियोग को मैंने भली प्रकार समझा है,इसपर सवाल आपकी ना समझी है,कारणइस्लाम समझने का नाम नहीं, सिर्फ मानने का नाम ही इस्लाम है।इस नियोग को समझने के लिए काफी स्वाध्याय करना चाहिये,फिर बातसमझमेंआसकती है। मानव समाज को व्यभिचारी बनने से रोकने के लिए यह तरीका दिया गया,कि मानव इसका शिकार न बने।जैसे शादी में होता है ठीक वैसे ही दोनों तरफ के लोग उसमें गवाह होते हैं सबके सामने यह बात की जाती है।वह उस दशा में है जब कोई पति, संतान उत्पन्न करने में असमर्थ होऔर पत्नी से कहे कि ***"हे सुभगे! तू किसी अन्य पुरुष से संतान एक या दो,जिसकी शर्तें हो बना लो"।*** और अगर पत्नी संतान देने में असमर्थ हो तो पति से कहे यही बात। यहाँ सिर्फ घर चलाने की बात है नाकि दुराचार फ़ैलाने के लिए।हर बात को समझने के लिए समझ दारी चाहिये,वह आपके पास नहीं तो कानून बनाने वाले की गलती नहीं है!ऋषि दयानंद ने इतिहास के अनेक प्रमाण दिये हैं,उसे देख कर, पढ़ कर समझ लेनी थी, पर समझे तो वह जिसके

पास समझदारी हो!यह आपात काल की बात है."**आपात काले मर्यादा नास्ति:**"अर्थात आपात काल में मर्यादा नहीं है,या आपात काल में मर्यादा नहीं होती। फिर जब बात लोकाचार में, समाज में, बताकर किया गया, तो दोष किस बात का, चोरी छुपके तो किया ही नहीं गया तो गुनाह, पाप या नाजायेज कैसे? पर मियां जी आपने **मुत्ता**क्या है यह नहीं बोला?मैं ही बता देता हूं...

نکاح متعہ عربی : نکاح المتعة ... جسے عرف عام میں متعہ کہا جاتا ہے؛ولی (شہادت) کی موجودگی یا غیر موجودگی میں ہونے والا ایک ایسا نکاح ہے جس کی مدت (ایک روز، چند روز، ماہ، سال یا کئی سال) معین ہوتی ہے جو فریقین خود طے کرتے ہیں اور اس مدت کے بعد خود بخود علیحدگی ہو جاتی ہے مگر عدت پوری کرنا پڑتی ہے؛ اگر فریقین چاہیں تو مدتِ اختتامِ متعہ پر علیحدگی کے بجائے اسے جاری (یا مستقل) بھی کر سکتے ہیں۔

http://en.wikipedia.org/wiki/Nikah_mut'ah **نکاح متعہ**

जिसे आमभाषा में **मुत्ता** कहा जाता है, वली (शहादत) की उपस्थिति या गैरमोजूदगी में होने वाला एक शादी है जिसकी अवधि (एक दिन, कुछ दिन, महीने, साल या कई वर्ष) निश्चित होती है जो दोनों पक्ष खुद तय करते हैं और इस अवधि के बाद स्वत: अलग हो जाते हैं लेकिन इदत पूरी करना पड़ती है, यदि पक्ष चाहें तो अवधि समाप्ति **मुत्ता** पर अलगाव के बजाय उसे जारी (या स्थायी) भी कर सकते हैं।

क्या यह इन्सान को चाहिये किसी लड़की को बर्बाद करना?या किसी मासूम जिन्दगी से खेलना? जहाँ कुरानी हुकूमत हो जहाँ चोरी करने पर हाथ काटा जाता हो, ज़न्नाह करने पर संगसार यानि सीनातक मिट्टी में गाढ़ कर, पत्थर मार-मार कर मार दी जाती हो, वहां यह काम आज भी जारी है।कुरान कीएक विचत्र बात और भी देखें! किसी मुस्लिम-मर्द को शक हो कि उसकी पत्नी किसी और मर्द के साथ शारीरिक सम्बंध बनाई हुई है या व्यभीचार करती है,तो अल्लाह का

कहना है कि *"चार गवाह पेश करो या अल्लाह की क़सम खा कर कहो तो अलबत्ता वह सच माना जायेगा"*

यह आयत तब उतरी जब हज़रत मुहम्मद साहब की पत्नी आयशा पर व्यभीचार का शक हुवा तो अल्लाह ने यह आयत उतारी।जो कुरान में सूरा नूर आयत ६ को देखलें.....

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

اور جو لوگ اپنی (منکوحہ) بیبیوں کو (زنا کی) تہمت لگائیں اور ان کے پاس بجز اپنے (ہی دعوے کے) اور کوئی گواہ نہ ہوں (جن کا عدد میں چار ہونا چاہیے) تو ان کی شہادت (جو کہ دافع حبس یا حد قذف ہو) یہی ہے کہ چار بار اللہ کی قسم کھا کر یہ کہہ دے کہ بے شک میں سچا ہوں۔(۶)

अर्थ: मैं ऊपर बता चुका हूँ, फिरभी.....

"और जो लोग अपनी बीवियों पर दोषारोपण करें उनके पास अपने सिवा और कोई गवाह न हो, तो वह चार बार अल्लाह की क़सम खाकर कहे तो अपने आरोप में वह सच्चा है।"

यह आयत उतरने का कारण जिसे **शाने नुजूल** कहते हैं मैं बता दिया।लेकिन सवाल उठता है कि अगर **आयेशा** नबी की पत्नी पर यह आरोप न लगता तो कुरान की यह आयत ही नहीं उतरती।तो कुरान का अल्लाह ज्ञानी है या ज्ञानसे परे है?.. विचारें!!!

दूसरी बात कुरान का कलामुल्लाह न होनेका यह प्रमाण है कि जब यह मनुष्य मात्र के लिए है तो एक महिला जो हजरत मोहम्मद की सबसे कम आयु वाली तीसरी नम्बर की पत्नी थी वह बदचलन हैया नहीं?इसेसत्य प्रमाणित करने केलिए अगर कुरान की आयत अल्लाह को उतारनी पड़ेतो फिर वह कल्लामुल्लाह मनुष्यमात्रके लिए क्यों और कैसे? यह तो हजरत साहब की घरकी बात हो रही है,इसे कलामुल्लाह

कहना तो अल्लाह पर इलज़ाम लगना हो जायेगा।क्या अल्लाह के पास ज्ञान की कमी है जो जरूरत पड़ने पर उतारा करते हैं?पहले से अल्लाह को मालूम नहीं कि इस की ज़रूरत पड़ सकती है? यही वह कारण है जो अल्लाह को ज्ञान बदल-बदल कर देना पड़ गया? अगला जो मेरा सवाल था कि कुरान में बहुत सी आयात हैं,*जो इस्लाम को कुबूल नहीं करते उन्हें मौत कीघाट उतारो,जब तक पूरी दुनिया में अल्लाह का दीन न फ़ैल जाये,*ऐसी अनेक आयतें हैं कुरान में। जैसा सुरा बकर आयत १९१-१९३, सूरा अलइमरान आयत १४१, यही आयत सूरा अनफल आयत १२, सूरा तौबा आयत ५.......और भी अनेक प्रमाण हैं. ......

सुरा बकर आयत १९१-१९३

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ۗ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۗ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝

اور (جس حالت میں وہ خود عہد شکنی کریں اس وقت) ان کو قتل کرو جہاں ان کو پاؤ اور ان کو نکال باہر کرو جہاں سے انہوں نے تم کو نکلنے پر مجبور کیا ہے اور شرارت قتل سے (بھی) سخت تر ہے اور ان کے ساتھ مسجدِ حرام کے قرب (ونواح) میں (کہ حرم کہلاتا ہے) قتال مت کرو جب تک کہ وہ لوگ وہاں تم سے خود نہ لڑیں ہاں اگر وہ (کفار) خود ہی لڑنے کا سامان کرنے لگیں تو تم (بھی) ان کو مارو ایسے کافروں کی (جو حرم میں لڑنے لگیں) ایسی ہی سزا ہے۔ (۱۹۱) پھر اگر وہ لوگ (اپنے کفر سے) باز آجاویں (اور اسلام قبول کرلیں) تو اللہ تعالی بخش دینگے اور مہربانی فرمادینگے۔ (۱۹۲) اور ان کے ساتھ اس حد تک لڑو

کہ فساد عقیدہ (شرک) نہ رہے اور دین (خالص) اللہ ہی کا ہو جاوے ۔ اور اگر وہ لوگ (کفر سے)
باز آجاویں تو سختی کسی پر نہیں ہوا کرتی بجز بے انصافی کرنے والوں کے۔(۱۹۳)

सूराअलइमरान आयत १४१

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۱﴾

اور تا کہ میل کچیل سے صاف کردے اللہ ایمان والوں کو اور مٹا دیوے کافروں کو۔(۱۴۱)

सूरा तौबा आयत ५

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ
وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵﴾

سو جب اشہر حرم گزر جائیں تو (اس وقت) ان مشرکین کو جہاں پاؤ مارو اور پکڑو اور باندھو اور داؤ گھات
کے موقعوں پر ان کی تاک میں بیٹھو پھر اگر (کفر سے) توبہ کرلیں اور نماز پڑھنے لگیں اور زکوٰۃ دینے لگیں
تو ان کا رستہ چھوڑ دو۔ واقعی اللہ تعالیٰ بڑی مغفرت کرنے والے بڑی رحمت کرنے والے ہیں۔(۵)

सूरा अनफल आयत १२-३९

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰۗىِٕكَةِ اَنِّىْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ
الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿۱۲﴾

اُس وقت کو یاد کرو) جب کہ آپ کا رب (اُن) فرشتوں کو حکم دیتا تھا کہ میں تمہارا ساتھی (مددگار)
ہوں سو (مجھ کو مددگار سمجھ کر) تم ایمان والوں کی ہمت بڑھاؤ۔ میں ابھی کفار کے قلاب میں رُعب ڈالے
دیتا ہوں سو تم (کفار کی) گردنوں پر مارو اور ان کے پور پور کو مارو۔(۱۲)

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ
اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۳۹﴾

اور تم ان (کفارِ عرب) سے اس حد تک لڑو کہ ان میں فساد عقیدہ (یعنی شرک) نہ رہے اور دین (خالص) اللہ ہی کا ہو جاوے پھر اگر کفر سے باز آجاویں تو اللہ تعالیٰ ان کے اعمال کو خوب دیکھتے ہیں۔

(٣٩)

इसका उत्तर मुश्फिक ने क्या दिया है देखें,

"यहाँ आप काफिरों को कत्ल करने पर आपत्ति कर रहे हैं, लेकिन आपने तो उन आयातों का ऐतिहासिक संदर्भ समझा ही नहीं। जो आयत आप पेश कर रहे हैं उसका आपने अनुवाद गलत किया है और हवाला भी गलत है। सही हवाला सूरह बकरह की आयत १९३ है जिसका सही अनुवाद यह है,

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۭ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝

अर्थात तुम उनसे लड़ो यहाँ तक कि फितना शेष न रह जाए और दीन (धर्म) अल्लाह के लिए हो जाए। अत: यदि वे बाज आ जाएँ तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी के विरुद्ध कोई क़दम उठाना ठीक नहीं रसूरह बकरहय आयत १९३ और सूरह अन्फालय आयत ३९,

पंडित जी, उस व्यक्ति को क्या कहें जो एक वाक्य को उसके प्रसंग में न देखे? इस आयत का सही अर्थ जानने के लिए आयत १९१ से पढ़िए

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ۭ كَذٰلِكَ جَزَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝

और अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो तुमसे लड़े, किन्तु ज़्यादती न करो। निस्संदेह अल्लाह ज़्यादती करनेवालो को पसन्द नहीं करता"

विचार करने योग्य बात है कि किसी एक आयत को समझने के लिए अगर किसी दूसरी आयत की जरूरत हो,तो पहली आयत की आवश्यक्ता खत्म!अगर किसी आयत को समझने के लिए दूसरी आयत को देखना होगा तो पहली वाली की मानी क्या है?पहली आयत का जो अर्थ है,उसे कहाँ घटाएंगेया उसकी सार्थकता क्या है?चलो उसे भी देख लेते हैं। अब अर्थ को देखें और "अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो तुमसे लड़े,किन्तु ज्यादती न करो।निसंदेहअल्लाह ज्यादती करने वालों को पसन्द नहीं करता"। कुरान की पहली आयत को अगर गौर से देखा होगा तो यह मालूम हुवा।***तुम उनसे लड़ो जबतक फितना शेष न रह जाये और सब अल्लाह का दीन न हो जाये***। मुसलमानों को इस्लाम फ़ैलाने के लिए औरों से लड़नेकी प्रेरणा कौन देरहे हैं?.. अल्लाह!!! मुसल्मानोंको याद रहे कि तुम उस वक़्त तक लड़ो जब तक चारों तरफ अल्लाह का दीन न फ़ैल जावे। इस आदेश को अगर अल्लाह दे रहे हों, तो भारतीय सेनाओं के या सैनिकोंके सिर पाकिस्तानी मुस्लमान क्यों न काटें? हिन्दुओं को किसलिए न मारें? गैर कौम के लोगों को क्यों न मारें?अल्लाह खुद जिनको मारने को कहें भला उसका बचाने वाला कौन है? पर पाठको सुनलो! फिरभी हम बचे हैं और बचेही रहेंगे भले ही अल्लाह ने आपको, हमें मारने का आदेश दिया होगा, पहले भी आये, हमें नहीं मिटा सके और न तुम मिटा पाओगे! सिकन्दर,सलुकसमिटाने को आये खुद ही मिट गए पर मिटाने न पाए। इतिहास गवाह है,तो यहाँ अल्लाह खुद कुरान में उपदेश दे रहे हैं कि पूरी दुनिया में एक ही अल्लाह का दीन हो जाये और इन्हों ने ***धर्म*** को कोष्टक में लिखा है यानि यह स्वीकार किया है कि दीन का अर्थ धर्म नहीं है। दीन का अर्थ

है मज़हब। जो किसीभी व्यक्ति विशेष के द्वारा चलाया गया या चलाया जाता हो।धर्म समस्त मानव मात्र के लिए होता है,जिसका दुनिया के किसी भी मजहब वालों को पता ही नहीं।कारण धर्म ईश्वर प्रदत्त होता है,ईश्वरकी बनाई वस्तु, मानव मात्र के लिए है,जो आदि सृष्टि से है और अंत तक रहना है।सूरज मानव मात्र के लिए है,आकाश मानव मात्र के लिए है,धरती,पानी, हवा,चंद्रमा, तारे, नदी, सागर,पहाड़जितना जो कुछ भी है यह सब परमात्मा के बनाये हुए हैं।ध्यान रखना अगर अल्लाह का बनाया होता तो!! जैसा अल्लाह ने कहा पूरी धरती पर अल्लाह का दीन हो जाये,ठीक इसी प्रकार अल्लाह कहते कि यह मेरी बनाई सामान है बेदीनों को हाथ लगाने न देना!इस प्रमाण से भी कुरान ईश्वरीय ज्ञान नहीं है। कुरान की आयत से ही सिद्ध हो गया। मुश्फिक मियां!अब भी बोलने को कुछ रह गया हो तो बोलें! यहाँ अल्लाह और ईश्वर का भेद भी खुल गया,कि अल्लाह सिर्फ इस्लाम,मुस्लमान,ईमानदार,कुरान,मोहम्मदके सिवा मानवता की बात नहीं जानताऔर ना मानवता की बात करता है। इसी लिए अल्लाहने ही कहा **किअल्लाह के मार्ग में उनलोगों से लड़ो जो तुमसे लड़े,किन्तु ज्यादती न करो**, अल्लाह का रास्ता क्या है? यही ना कि अल्लाह के दीन को फैलाना?मानवता को फैलाना अल्लाह का रास्ता नहीं है?इस्लाम को फैलाना अल्लाह का रास्ता है। मुश्फिक ने जो हमें बताना चाहा वह है कि अल्लाह ने किस से लड़ने को कहा...

"तो अल्लाहने फरमाया और जहाँ कहीं उन पर काबू पाव कत्ल करो और उन्हें निकालो जहाँ से उन्हों ने तुम्हे निकला है,इस लिए कि फितना (उत्पीड़न) क़त्ल से भी बढ़कर गम्भीर है। लेकिन मस्जिदे हराम (काबा) के निकट तुम उनसे न लड़ो,जब तक कि वे स्वयं तुमसे वहां युद्ध न करें। अत: यदि वे तुमसे युद्ध करें तो उनको कत्ल करो ऐसे इन्कारियों का ही बदला है। इन आयातों से पता

चलता है कि यह युद्ध धार्मिक अत्याचार का अंत करने के लिए लड़ा जा रहा था,क्यों कि आयत १९१ और १९२ में स्पष्ट लिखा है कि यह लड़ाई केवल उनसे थी जो मुस्लमानों पर उनके धर्म के कारण अत्याचार कर रहे थे,मक्का में १३वर्षतक मुस्लमान,मूर्ति पूजकों का अत्याचार सहते रहेऔर उसके बाद उन्हें वहां से निकल कर मदीना जाना पड़ा,मदीना में आने के बाद भी मूर्ति पूजकों ने उन्हे शांति से बैठने नहीं दियाऔर युद्ध के लिए मजबूर किया।इसी प्रसंग में आयत १९३ को देखना चाहिये,इस आयत अरबी शब्द फितना का अर्थ धार्मिक अत्याचार है,जिसका अंत इस्लाम ने किया,अल्लाह के लिए दीन हो जाने का अर्थ यह है कि मजहबी आजादी (धार्मिक स्वतंत्रता) हो जाये तो इस आयत पर आपके आक्षेप का कोई आधार नहीं है ।"

यह कितनी विचित्रता कि बात है देखें! यह सवालों में घिर गए तो कह रहे हैं कि आप के आक्षेप का कोई आधार नहीं है? क्या कहा है इन,आयतों से पता चलता है कि***यह युद्ध धार्मिक अत्याचार का अंत करने लिये लड़ा जा रहा था।यह लड़ाई केवल उनसे थी जो मुसलमानों पर उनके धर्म के कारण अत्याचार कर रहे थे।*** इन बेचारों को आजतक पता नहीं लगा कि धर्म का काम झगड़ा करने कराने का नहीं,धर्म का काम है एक के साथ दुसरे को मिलाना। जब इस्लाम अपने को छोड़ किसी को धर्म मानता ही नहीं तो यहाँ धार्मिक युद्ध का मतलब क्या है?यह कह रहे कि धार्मिक अत्याचार का अंत इस्लाम ने किया। इस आयत से पता तो यह चला कि धार्मिक अत्याचार का अंत किया या उन धर्म पर कुठाराघात कर इस्लाम स्वीकार करवाया? उनके ऊपर इस्लाम स्वीकार न करने के लिये अत्याचार किया, उनपर ज्यादती की, इस्लामने बलपूर्वक लोगों का क़त्ले आम किया। फिरभी कहरहे हैं धार्मिक सवतंत्रता दिलाने के लिये लड़ाई

की,इसमें स्वतंत्रता की बात कहाँ थी? फिर लड़ाई किस बात के लिएकर रहे थे? इनहों ने इसी बात को वेद से सिद्ध करने का प्रयास करते हुए लिखा...

"क्या आपके ईश्वर के जिम्मे यही काम रह गया है कि लोगों को एक दुसरे से लड़ने का आदेश देता रहे? तो उस ईश्वर का भक्त कैसा होगा? प्रमाण है बोद्धों, जैनियों और अन्य नास्तिक समुदायों पर हिन्दुओं के अत्याचार जो इतिहास से साबित होते हैं। इन अत्याचारों के बारे में स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपनी पुस्तक श्सत्यार्थ प्रकाश में आदि शंकराचार्य के सन्दर्भ में संक्षेप में लिखा है.

दस वर्ष के भीतर सर्वत्र आर्यावर्त में शंकराचार्य ने घूम कर जैनियों का खंडन और वेदों का मण्डन किया। परन्तु शंकराचार्य के समय में जैन विध्वंस अर्थात जितनी मूर्तियाँ जैनियों की निकलती हैं। वे शंकराचार्य के समय में टूटी थीं और जो बिना टूटी निकलती हैं वे जैनियों ने भूमि में गाड दी थीं की तोड़ी न जाएँ। वे अब तक कहीं भूमि में से निकलती है। सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास ११,

पंडित जी देखिए जैनियों पर कितना अत्याचार किया था हिन्दुओं ने। उनकी मूर्तियाँ भी तोड़ डाली थीं।"

नोट: यहाँ बात चल रही है अल्लाह, कुरान और इस्लाम की.... आप उससे हट कर, किसने क्या किया, कहाँ कीया यह बताने लगे! यह किसने पूछा था आपसे कि शंकराचार्य ने क्या कीया यह बताएं आप? फिर भी मैं पूछुंगा कि आप यह बताएं कि शंकराचार्यहो या दयानंद अथवा जितने भी ऋषिमुनिगण....किसने बोला कि मस्जिदों को तोड़ो, या मस्जिद में नमाज पढ़ने वालों को मारो?या मुसलमानों को मारो यह कहीं कहा गया हो? आप कहीं भी नहीं दिखा पाएंगे और ना दिखा पाना संभव है। फिर आप से यहाँ किस बात पर मेरा सवाल था? अल्लाह ने कुरान में फरमाया...

इन्नससालता तनहा अनिल फह्शाये वल मूनकर

إِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ

अर्थ: ***नमाज एक ऐसी चीज है जो तमाम बुराईयों को दूर कर देती है*** तो नमाज पढ़ने वाले ही बुराई क्यों करते हैं?क्या कुरान का कहना सही नहीं,या नमाज पढ़नेवाले सही नहीं,दोनों में से ठीक या सही कौन है? मुश्फिक ने उत्तर क्या दिया है देखें!.....

"निस्संदेह नमाज अश्लीलता और बुराई से रोकती है। स्रूरह अन्कबूत २९य आयत ४५,

आप यह प्रश्न कर रहे हैं कि यदि नमाज बुराई से रोकती है तो नमाज पढने वाले ही बुराई क्यों कर रहे हैं? नमाज से यहाँ केवल उसका प्रकट रूप तात्पर्य नहीं है। बल्कि नमाज की आंतरिक भावना तात्पर्य है। जो व्यक्ति हकीकी नमाज पढ़ रहा हो, जिस में वह पूरे ध्यान के साथ अपने आप को अल्लाह के सामने महसूस कर रहा हो, वही वास्तविक नमाज होगी। जो व्यक्ति नमाज ध्यान में नहीं पढ़ते उनके बारे में तो कुरआन स्पष्ट कहता है कि वह नमाज अल्लाह स्वीकार नहीं करते। सुनिए-

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝

अत: तबाही है उन नमाजियों के लिए,

जो अपनी नमाज से गाफिल (असावधान) हैं, (सूरह माऊन १०७य आयत ४-५,)

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝

इस से सिद्ध होता है कि जो व्यक्ति नमाज पढ़ के भी बुराई करे वह वास्तव में केवल प्रकट रूप से नमाज पढता है, आतंरिक भावना से नहीं.”

नोट:मुश्फिक ने यहांयह मानकर इस्लाम को ही फंसालिया है कि मुसलमान हकीकी नमाज नहीं पढ़ते ।और कुरान भी कहरहा है इस बात को,***तबाही है उन नमाजियों के लिए, जो अपनी नमाज से गाफ़िल हैं।***

मुश्फिक जी अब आप ही बताएं फिर दुनिया में नमाज़ी कौन है? **और कुरान के मुताबिक कौन** मुसलमान हैं जो नमाज़ी हैं? फिर आप **लोग जो नमाज पढ़ रहे हैं,**वह अगर हकीकी नहीं फिर यह तमाशा किसलिए? **यह दिखावा,**छलावाऔर कपटाचार का काम किसलिए कर रहे **हैं?दुनिया को तो दिखा रहे हैं** कि नामालूम कितना अल्लाह वाले हैं, **सीधा अल्लाह का एजेंट हैं,** सिर्फ यह दुनिया को धोखा देने के लिए यह **सारा काम चल रहा है,तो सच्चे** और असली नमाजी की पहचान **क्या है? जो आप ने खुद लिखा है,**इस से सिद्ध होता है कि जो व्यक्ति नमाज **पढ़के भी बुराई करे** वह वास्तव में केवल प्रकट रूपसे नमाज पढ़ता है,आंतरिक **भावना से** नहीं।आप तो हमें जवाब दे रहे थे पर यह क्या **होरहा है खुद सवालों में फंसते जारहे हैं** और इस्लाम को भी फंसाते जा **रहे हैं**..........**आपने महेन्द्र पाल को क्या** और कैसा जवाब दिया !!!

फिर मेरा सवाल था... कुरान में अल्लाह ने फरमाया

فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ﴿٤٢﴾ وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ﴿٤٤﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُتْرَفِينَ ﴿٤٥﴾

وہ لوگ آگ میں ہونگے اور کھولتے ہوئے پانی میں۔ (۴۲) اور سیاہ دھوئیں کے سائے میں۔ (۴۳) جو نہ ٹھنڈا ہوگا اور نہ فرحت بخش ہوگا۔ (۴۴) وہ لوگ اس کے قبل (دنیا میں) بڑی خوشحالی میں رہتے تھے۔ (۴۵)

अर्थ:उन्हें खौलते हए पानी में डाला जायेगा,जलती हुई आग में डाला जायेगा, जोकि दुनिया में ऐश व आराम के साथ जिन्दगी बसर करेंगे।

अगर कुरान का कहना सही है तो सबसे पहले अरब वालों को ही जहन्नुम की उसी आग में जाना है,व भारत वालोंमे अब्दुल्ला बुखारी को स-परिवार ही जाना पड़ेगा,क्यों कि अरब वाले पेट्रोल बेच कर ऐश कर रहे हैं और भारत का अब्दुल्ला बुखारी भारत वासियों को बुद्धू बनाकर ऐश कर रहा है।

फिर कुरान में अल्लाहने कैसे कहदिया कि मुसलमानों पर जहन्नुम की आग हराम है?यह दोनों आयातों में कौन सही है?आपने उत्तर में क्या लिखा देख लें.....

"यह एक आपका निराला प्रश्न है। मुझे तो इसका उत्तर देते हुए भी शर्मिंदगी हो रही है। कुरआन में नरक से मुक्ति और स्वर्ग की प्राप्ति के ४ सिद्धांत बतायह गए हैं। जो व्यक्ति इस मापदंड पर पूरा उतरे गा, वही नरक से बच जाए गा। कुरआन में आता है-

وَالْعَصْرِ

गवाह है गुजरता समय

إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۲

कि वास्तव में मनुष्य घाटे में है

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۳

सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए और एक-दूसरे को सत्य की ताकीद की, और एक-दूसरे को धैर्य की ताकीद की।(सूरह अल-असर १०३य आयत १-४)

जो व्यक्ति भी इस कसौटी पर पूरा उतरे गा वह नरक से बच्च कर स्वर्ग प्राप्त करेगा। आपको अरब वालों की खुशहाली से क्यों जलन हो रही है? इस खुशहाली को ऐश कहना आपकी मूर्खता है। यदि कोई अरबी हकीकत में ऐश और विलासिता में अल्लाह से गाफिल होगया हो तो वह निश्चित रूप से उसका दण्ड भोगे गा। मगर सारी अरबी जनता को एक ही लाठी से हांकना आपकी नस्लवादी मानसिकता को व्यक्त करता है।..........इसके अतिरिक्त आपका यह कहना कि कुरआन में अल्लाह ने कहा कि मुसलमानों पर जहन्नुम की आग हराम है, इसका प्रमाण दिखाइए? कुरआन में केवल नाम के मुसलमान को जहन्नुम से मुक्ति नहीं दी गयी है, बल्कि एक सच्चे मुसलमान को, जो अच्छे कर्म करता हो और दूसरों को सत्य की ताकीद करता हो, और दूसरों को धैर्य की ताकीद करता हो। इन बातों में कोई विरोध नहीं।"

भाई मुश्फिक मियां! आपने बिलकुल सत्य लिखा,किन्तु सत्य को कुबूल नहीं करना चाहाऔर ना ही इस्लाम वाले सत्य को कुबूल किया,यही सत्य को स्वीकार न करने से दुनिया में सारा अनर्थ हुवा है और हो रहा है। आपने लिखा, खुद देख लें,***यदि कोई अरबी हकीकत में ऐश और विलासिता में अल्लाह से गाफिल हो गया तो वह निश्चित रूपसे उसका दण्ड भोगेगा!***मेरे बरखुरदार! यह तो बताएं कि आप के पास वह मीटर कौन सी है जिससे आप नापेंगे?कि हकीकी इबादत कौन कर रहा हैऔर गैर हकीकी किसकी है?और अगर जहन्नुम में जाना ही है तो वह इस्लाम स्वीकार किसलिए करेगा भला?आपने तो मेरी मूर्खता लिखा है, किन्तु बात आप मूर्खता वाली कर रहे हैं! यह विचार अब पढ़े

लिखे लोग ही करेंगे और निर्णय लेंगे कौन मूर्ख है? क्या आप अल्लाह से पूछने जायेंगे कि असली मुसलमान कौन है और नकली कौन?उसके माप दण्ड किसके पास हैं?

नोट: मुसलमानों को भी पता नहीं कि जन्नत का असली हकदार कौन है?९९% मुसलमान कहलाने वालों को ६ कलमा ही याद नहींऔर कयामत तक ७२ फिरके होंगे जिसमें से जन्नती होंगे एक ओर सभी दोजखी?जब आज तक मुसलमान खुद ही नहीं जान पाएकि वह कौन है जो जन्नत में जाने का हक दार होगा?

फिर मियां जी! आप को यह भी तो याद रखना चाहिये था कि,अल्लाह वह है जो किसी बंदगी करने वाले की ६हज़ार वर्ष की इबादत को मिटटीमें मिला सकता है तो आपकी औकात ही क्या!!! जो इतनी इबादत करोगे?पर आप लोगों को क्या कहा जाये,जवाब नहीं बन रहा है, तो सवाल सुनकर शर्म आने लगी....वाहरे! अकलमंद कहलाने वालो!पर अकलमन्द का अर्थ भी तो यही है **जिसकी अकल मंद यानी अकलकमहो!...**

मेरा सवाल था कुरान शुरू होता है बिस्मिल्ला हिर रहमा निररहीम से......

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अर्थ: ***शुरू अल्लाह के नाम से जो दया करने वाला महरबान है***.... यह वाक्य अल्लाह का है,तो अल्लाह ने किस अल्लाह के नाम शुरू किया? और यह कलामुल्लाह है,यानि अल्लाह की कलाम है,तो जाहिर सी बात है किएक अल्लाह दूसरे अल्लाह के नाम शुरू कर रहे हैं और यह शब्द पूरी कुरान में ११४ बार आया है,११३ सूरा के प्रथम में, व सूरा नमल की आयत.३० में है अर्थात यह आयते करीमा है,यह सिद्ध होगया । (**नोट:** यहां पर यह बात विचारणीय है कि सूरा नमल कुरान उतरने

के क्रम के ४८वें नम्बर पर है) तो अल्लाह ने जब शुरू किया तो किस अल्लाह के नाम शुरू किया?यानि एक अल्लाह ने दूसरे अल्लाह के नाम शुरू किया... तो कुरान का बिस्मिल्ला ही गलत है!!

इन्होंने इसी दोष को वेद में दिखनाया दिखाना चाहा,उत्तर में लिखा....

"पंडित जी, यदि आप ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र को देख लेते तो यह बेजा आपत्ति नहीं करते। ध्यान से सुनिए-

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवं रत्वीजम ।
होतारं रत्नधातमम ।।

"हम लोग उस अग्नि की प्रशंसा करते हैं जो पुरोहित है, यज्ञ का देवता, समस्त तत्वों का पैदा करने वाला, और याजकों को रत्नों से विभूषित करने वाला है"

बताइए, यदि अग्नि से, आपके के अनुसार, ईश्वर ही तात्पर्य है और वेद भी ईश्वर की वाणी है, तो इस वाक्य का बोलने वाला कोन है?

आप असल में ईश्वरीय पुस्तकों कि जुबानध्भाषा से अपरिचित हैं। ईश्वरीय किताबों का मुहावरा और कलाम (भाषा) कि शैली कई प्रकार की होती है। कभी तो ईश्वर स्वयं बात कहने के रूप में अपना आदेश स्पष्ट करता है (संस्कृत का उत्तम पुरुष/**first person**) और कभी गायब से (संस्कृत का प्रथम पुरुष/**third person**)। कभी कोई ऐसे वाक्य जो दुआ, स्तुति या प्राथना के रूप में बन्दों को सिखाना अपेक्षित हो उसे बन्दे की जुबान से व्यक्त कराया जाता है।

सूरह फातिहा या बिस्मिल्लाह भी इसी प्रकार है। अर्थात यह ऐसे शब्द हैं जो ईश्वर बन्दों को सिखातें हैं। तो कुरआन कलामुल्लाह ही है। आप कलाम कि शैली को न समझने के कारण ऐसी आपत्ति कर रहे हैं। इस प्रश्न का निर्णायक उत्तर मैं पंडित जी

के गुरु के घर से ही दिखा देता हूँ ताकि सारी दुनिया इनके दोहरे मापदंड देख लें। स्वामी दयानन्द के शास्त्रार्थ और विभिन व्याख्यानों पर आधारित एक पुस्तक है जिसका नाम है 'दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह तथा विशेष शंका समाधान'। यह पुस्तक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट देहली ने प्रकाशित की है। इस पुस्तक के अध्याय ३८ में पंडित ब्रिजलाल साहब के स्वामी दयानन्द जी से किए गए प्रश्न मिलते हैं। पंडित ब्रिजलाल के स्वामी जी से किए गए कई प्रश्नों में से एक प्रश्न यह है।

प्रश्न २१- वेद में परमेश्वर की स्तुति है तो क्या उसने अपनी प्रशंसा लिखी?

उत्तर- जैसे माता पिता अपने पुत्र को सिखाते हैं कि माता, पिता और गुरु की सेवा करो, उनका कहना मानो। उसी प्रकार भगवान ने सिखाने के लिए वेद में लिखा। ख्दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह तथा विशेष शंका समाधान', आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट देहली, पृष्ट ७९, जून २०१० प्रकाशन,

यह देखिए कैसे स्वामी दयानन्द जी स्वयं पंडित महेंद्रपाल आर्य के प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं। जब यह लोग वेद पढते हैं तो समाधान की ऐनक लगाते हैं, लेकिन कुरआन पढ़ते समय शंका की ऐनक लगाते हैं। ऐसे हठधर्मी लोगों को इनही उदाहरणों से समझाना पढता है।

आर्य समाज का यह दावा कि वेद ईश्वर की वाणी है, या एक इल्हामी ग्रन्थ है, पूरी तरह से गलत है। वेदों का अध्यन करने से पता चलता है कि वे ऋषियों द्वारा बनायह गए हैं।"

जवाब सुनें हुजुर! भागना मत मैदान छोड़कर!पहली बात तो आपने ऋग्वेद के मन्त्र को ही गलत लिखा है। दूसरी बात है,कि कलामुल्लाह होने की कसौटी क्या है?इसे बिना जाने ही किस्सा और

कहानी की किताब को कलामुल्लाह कहना या मानना सबसे बड़ी मूर्खता हैऔर मानवता विरोधी भी। कुरान का कलामुल्लाह होना इसलिये संभव नहीं,कि कुरान उतरता है जरूरत होने पर,इसकी जरूरत होगी या नहीं यह ज्ञान अल्लाह को नहीं है, फिर कुरान डायरेक्ट नहीं वाया मीडियम होकर आया! लाने वाले ने भी अपनी तरफ से मिलादिया... होसकता है!!!और कुरान भी गवाह है किअसली कुरान **लौहे महफूज** में है। "बल हुवा कुरानुम मज़िदुम फी **लौहे** महफूज" अर्थात कुरान तो लौहे महफूज पर सुरक्षित है...(सूरा अलबरूज २१-२२)

بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿٢١﴾ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿٢٢﴾

بلکہ وہ ایک باعظمت قرآن ہے۔(۲۱) جو لوح محفوظ میں لکھا ہوا ہے۔(۲۲)

फिर असली कुरान कहाँ है ?

कुरान ईश्वरीय न होने का पहले प्रमाण सुनलें। ईश्वरीय ज्ञान की जो कसौटी है वह यह है कि परमात्मा का दिया ज्ञान आदि सृष्टी से है,किसी मुल्कवालों की भाषा में नहीं है,उसमें किसीकी वंशावली नहीं है, व्यक्ति विशेष के नाम नहीं है, विज्ञान विरुद्ध बातें नहीं हैं,सृष्टी नियम विरुद्ध बातें नहीं है,मानव मात्र की भाषा में है,वाया मीडियम नहीं,कि किसी ने किसी को सुनाया और किसीने किसीको?परमात्मा का ज्ञान बार-बार बदलता नहीं और ना परमात्मा के ज्ञान में कोई मिलावट करसकता है! न परमात्मा किसी मुल्क वालों की भाषा में अपना ज्ञान देता है। अब जरा इसी बिंदुओंसे कुरान को मिला कर देखें,कहीं पर भी खरा नहीं उतरता।कुरान एक बार में नहीं आया, जब-जब जरूरत हुई तो अल्लाह ने जिब्रील के माध्यम से फ़ौरन नाज़िल कर दिया,अल्लाह को पहले से पता नहीं कि इसकी जरूरत हो सकती है।जैसाअल्लाह ने कहा.. ***."ला तकरबुस्सलाता व अन्तुम सुकारावो" अर्थात नमाज के करीब न जाओ जब तुम नशे के हालत में हो यानि शराब पीकर नमाज नहीं पढ़ो।*** मैं पूछता हूँ कि इस आयत को अल्लाह ने कब उतारी? जब एक

सहाबी शराब पीकर इमामत कर रहे थे (नमाज पढ़ा रहे थे), तो शराब के नशे में कुरान को बेतरतीब पढ़ने लगे,दूसरे साथी ने हजरत मोहम्मद साहब से कहदीया,तो फ़ौरन अल्लाह ने यह आयत नाज़िल करदी!अगर उसने नमाज में आयत को ठीक-ठीक पढ़ी होती तो इस आयत की जरूरत ही न होती?क्या शराब पीनेसे नशा होता है यह इल्म, अल्लाह को नहीं था? फिर तो शराब पहले से ही हराम होना था?पूरी कुरान भरी है,पहले तो आप यह बताएं कि कुरान जिसको आप कलामुल्लाह कहते हैं वह धरती पर आई कैसे?अल्लाह ने जिब्राइल को सुनायाऔर जिब्राइल गारे-हिरा (एक गुफा का नाम) में आकर, पहले तो हजरत का सीना चाक किया,यानि मोहम्मद साहब का दिल को निकाला,फिर आबे ज़मज़म से धोया,फिर उस को मोहम्मद साहब के शरीर में रख कर सिल दिया।

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ ۙ

اے پیغمبر ﷺ آپ پر (جو) قرآن (نازل ہوا کرے گا) اپنے رب کا نام لے کر پڑھا کیجیے (یعنی جب پڑھیے بسم اللہ الرحمٰن الرحیم کہہ کر پڑھا کیجیے)۔(۱) جس نے مخلوقات کو پیدا کیا جس نے انسان کو خون کے لوتھڑے سے پیدا کیا۔(۲) آپ قرآن پڑھا کیجیے اور آپ کا رب بڑا کریم ہے (جو چاہتا ہے عطا فرماتا ہے اور ایسا ہے)۔(۳) جس نے (لکھے پڑھوں کو) قلم سے تعلیم دی۔(۴) اور عموماً انسان کو (دوسرے ذرائع سے) ان چیزوں کی تعلیم دی جن کو وہ نہ جانتا تھا۔(۵)

जिब्राइलसबसे पहले यही ५ आयत लेकर आये, **अर्थ:**

" १.पढ़ो अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया,
२.जमे हुए खून के एक लोथड़े से इनसान कि रचना की,
३. पढ़ो,और तुम्हारा रब बड़ा उदार है,
४. जिसने कलम के द्वारा ज्ञान कि शिक्षा दी,

५.इन्सानको वह ज्ञान दिया जिसे वह न जानता था।"

अब सवाल यह है कि यह जो आयत है,जिब्राइल ने मोहम्मद साहब को पढ़ाया, इसे पढ़ाने के लिए उस बेचारे का सीनाचीर कर दिलको निकाला,यह काम किसी होसपिटल,या नर्सिंग-होम के बिना कैसे हो पाया? जिब्राइल सर्जिकल किस कालेज या होस्पिटल में पढ़े थे? इस आपरेशन में कौन-कौन यंत्र से कामलिया गया? एक पहाड़ की गुफा के अन्दर यह सब काम होना कैसे संभव होसका?जब हजरत मोहम्मद साहब को पढ़ाने के लिये यह सब करना पड़ गया तो अल्लाहने जब जिब्राइल को पढ़ाया,तो बिना आप्रेशन के कैसे पढ़ा दिया?यह भी तो हो सकता है कि जिब्राइल ने अपने मनसे ही पढ़ाया हो?यह तो प्रमाणित हो गया कि जिब्रांइल ने गारे-हिरामें आकर हुजूर को पढ़ाया,पर यह प्रमाण कहाँ हैकि अल्लाह ने जिब्राइल को यह आयत कब पढ़ाया?तो इसे अल्लाह का कलाम माना जाये,या जिब्राइल का?

इस प्रकार कुरान तो सवालों के घेरे में है। कलामुल्लाह की कसौटी क्या है,इसे जाने बिना किसीभी पुस्तक को कलामुल्लाह कहना अनुचित है,और मानव समाज को दिकभ्रमित करने की बात है,जो आज दुनिया में हो रही है या मानव समाज को कलामुल्लाह के नाम से लड़ाया जा रहा है।जैसा आप ने खुद लिखा हैकि......

"जब अरब के मूर्ति पूजक मुसलमानों को मार रहे थे,उनको घर से निकाल रहे थे उस वक्त अल्लाहने यह आयत उतारी कि तुम भी उनके साथ लड़ो ..."

तो कुरान की आयत कारण पर उतारी गई। उनदिनों अगर मूर्ति पूजक मुसलमानों को ना मारते तो यह आयत न उतरती?अब तो अरब में मुसलमानों को कोई नहीं मार रहा है, और न कोई उनको उनके घर से निकाल रहा है,तो अब उस आयत की क्या जरूरत?और फिर वह अल्लाह ही क्या जो यह नहीं जान पाएकि आगे,चलकर इस

आयत की आवश्यकता नहीं रहेगी? आप लोगों के कुरान का कलामुल्लाह होने की जो मान्यता है,वह प्रश्नों के घेरेमें है? और कुरान को उतरने में भी पूरे २३ वर्ष लगे। कुरान अवतरित होने की जोपरिपाटी है वह देख लिया,अब वेद के नाजिल होने के तरीके को देखें।

वेद का अर्थ है **ज्ञान**,परमात्मा ने मनुष्य मात्र को अपना ज्ञान दिया। ज्ञान वह चीज है जिसमे किसीभी प्रकार का दोष ना हो,जो मानव मात्र के कल्याण के लिए हो,जिसमें मानव समाज को बाँटने वाली बातें न हो, जो आदेश और निषेध,सिर्फ दो प्रकार का उपदेश हो, यानि क्या करनाऔर क्या नहीं करना,यही उपदेश हो।

अब यह उपदेश मनुष्यों को सुनाया कौन? वह थे ऋषि,ऋषि उनको कहा गया जो मन्त्रों के साक्षातकार करने वाला, पवित्र आत्मा शुद्ध-बुद्ध,मुक्तकिसी भी प्रकार का लेश मात्र भी दोष जिनमें न हो।अगर दोष हो तो,हजरत मोहम्मद जैसाजिब्राइल हो या कोई और नाम देकर उनके दिल को निकालना पड़ता या सर्जरी करनी होती!यहाँ एक बात मैं और भी स्पष्ट करना चाहता हूँ कि समग्र इस्लाम जगत को यह मानना होगाकि हजरत मोहम्मद साहब की आत्मा शुद्ध नहीं थी,इसलिये उनके दिलको जिब्राइल ने आबे ज़मज़म से धो कर शुद्ध किया,तब जाकर, उन्होंने वह पांच आयात सुनाईं!ऋषियों के साथ यह होना संभव नहीं,कारण वे दोष पूर्ण हैं, पर इस्लाम ने इसे जानने और समझने का प्रयास ही नहीं किया। और नाहक अपने दोषको छुपाने के लिये वेद में दोष देखने का प्रयास किया।तो प्रथम में यह चार मुक्त आत्मा हुए जिनको ऋषि कहा गया,१. **अग्नि ऋषि** २.**वायु ऋषि** ३.**आदित्य ऋषि,और** ४. **अंगिरा ऋषि**।इन चारों ऋषियों के मुखारविंदसेपरमात्मा की प्रेरणा से ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान, बिना भेद भाव के,(यानि ईमान्दारऔर बेईमानोंमें न बाँट कर) समस्त मानव मात्र के कल्याण के लिए जो उपदेश सुनाया उसी का ही नाम वेद है।यह प्रमाण मैं पहले दे

चुका हूँ वेद मन्त्रों के साथ। परमात्मा ने उनमें कैसे प्रेरणा दी,इसे समझने के लिए हम लोकाचारसे भी लेसकते हैं,देख भी सकते हैं,जैसा हम आपसमें किसी के साथ हार्दिक मेल रखते हैंऔर मैं उससे कुछ कहना चाहता हूँ, किन्तु मेरे कहने से पहले ही वह कहने लग जाता है। ठीक इसी प्रकार परमात्मा ने उन ऋषियों के द्वारा मनुष्य मात्र को अपना ज्ञान पहुँचाया।

इस परिपाटी को आप किसी भी मजहबी किताब में देख या पा नहीं सकते।(नोट: यहां एक बात विचारणीय है कि कुरान में मोहम्मद को अल्लाह का दोस्त माना गया है, फिर भी कुरान देने के लिए जिब्राइल की मदद लेनी पड़ी!!!) कारण जिस कुरान की चर्चा हम कर रहे थे,उसमें अल्लाह ने जिब्राइल को भेजा हजरत मोहम्मद साहब को पढ़ाने या सुनाने,किन्तु यह किसी जगह नहीं मिल पाया कि अल्लाहने जिब्राइल को कहां और कब पढ़ाया। मियां जी!इस्लाम को आजतक यह भी नहीं पता कि आत्मा की शुद्धी किस प्रकार से होती है?क्या किसीके आत्मा को निकाल कर पानी से धो कर शुद्धी कि जाती है!!! अथवा कोई और तरीका है?अगर आबे ज़मज़म के पानी से धोने पर आत्मा शुद्ध हो जाये,तो उस कुँए में मेंडक,सांप और जलीय जीव जितने भी हैं,सबकी आत्मा को शुद्ध हो जाना चाहिये,कारण वह भी तो उसी जल में दिन-रात डुबकी लगा रहे हैं? दूसरी बात दुनिया वालों को यह भी पता लगाकि हजरत मोहम्मद साहब की आत्मा शुद्ध नहीं थी!!! यही कारण है कि हजरत जिब्राइल अलाई हिस्सलातो वस्सलाम,को उसे निकाल कर धोना पड़ गयाक्या इस्लाम इसको अस्वीकार करसकता है? मुश्फिक साहब मैं पहले से कह रहा हूँ,और खुली चुनौती भी दे रखा हूँ कि कुरान कोआपलोग कलामुल्लाह सिद्ध करें! इसी विषय पर हम शास्त्रार्थ करेंऔर दुनिया वालों को भी बता देंकि सत्य क्या है और असत्य क्या है?पर २००४ सेमैंचुनौति पर चुनौति दे रहा हूँ, आप लोग आजतक

सामने नहीं आये, सिर्फ हवाई बातें कर रहे हैं। मानव समाज मेंएक स्वस्थ परम्पराको जनता जनार्दन के बीच ला कर हम मानव समाज के कल्याण का काम कर सकते हैं, मानव समाज में हो रहे धर्म के नाम से खून-खराबा से छुटकारा दिला सकते हैं। यह काम तभी हो पाए गा जब,निष्पक्ष हो कर, हठ और दुराग्रह से निकल कर मानव समाज के लिए अपने को उत्सर्ग करेंगे, तभी हमारा और मानव समाज का कल्याण हो सकता है।कारण हमारा लक्ष्य और ध्येय है मानव समाज काउत्थान,**संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है,**आर्य समाज ने अपने जन्म काल से यही काम किया है, या करता आया है। तो आत्मा कि शुद्धी कैसी होती है मैं पहले लिख चुका हूँ,**मनःसत्येन शुद्ध्यति**अर्थातमन की शुद्धी होती है सत्य से, जिसको **इस्लाम** ने कभी सत्य माना हीनहीं।

आप अपने इस्लाम को इस तर्क के तराजू पर रख कर देखें। पहले नाहक ही वेद पर दोष लगाने लगे,आप को वेद विषय पर चर्चा करनी है तो शौक से करेंगे, समझ दारी के साथ करेंगे। पर मेरी तरफ से उठाये गए सवालों का तो जवाब पहले दे दें।आप जवाब के अन्दर मेंही दूसरे प्रसंग को ला कर विषयान्तर करना चाह रहे हैं, और अपने को वेद विषय का ज्ञाता सिद्ध करना चाह रहे हैं, जिस वेद के"व" को ही नहीं जानते। वेद परमात्मा का ज्ञान नहीं है,इसे सिद्ध करने के लिए आप ने लिखा,**"इसलिये वेद सर्वज्ञ परमात्मा कि रचना सिद्ध नहीं होते"** ।अर्थात आपने वेद के परमात्मा को **सर्वज्ञ** माना है,तो आप ठीक इसी प्रकार कुरान के अल्लाह के सर्वज्ञ होने का कोई सा प्रमाण दें? क्या कुरान का अल्लाह सर्वज्ञ हैं?मैं कुरान से अनेक प्रमाण दे चुका हूँ कि अल्लाह सर्वज्ञ नहीं ।

जो मैंने पूछा उसका जवाब आप कहाँ दे रहे हैं? और इसी सवाल को ही झूठ बताने का प्रयास किया है देखें! मेरा प्रश्नहदीस **बुखारी किताबुल जिहाद,बाब:४६ हदीस: न०५१**

حدثنا الحسن بن صباح حدثنا محمد بن سابق حدثنا مالك بن مغول قال سمعت الوليد بن العيزار ذكر عن أبي عمرو الشيباني قال قال عبد الله بن مسعود رضي الله عنه سألت رسول الله صلى الله عليه وسلم قلت يا رسول الله أي العمل أفضل قال الصلاة على ميقاتها قلت ثم أي قال ثم بر الوالدين قلت ثم أي قال الجهاد في سبيل الله فسكت عن رسول الله صلى الله عليه وسلم ولو استزدته لزادني

حسن بن صباح، محمد بن سابق، مالک بن مغول، ولید بن عیزار ابو عمرو شیبانی حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ میں نے رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے پوچھا کہ یارسول اللہ کون سا عمل سب سے افضل ہے آپ نے فرمایا کہ اپنے وقت پر نماز پڑھنا میں نے عرض کیا پھر کون سا فرمایا اپنے والدین کی خدمت کرنا میں نے عرض کیا کہ پھر کون سا فرمایا اللہ کی راہ میں جہاد کرنا اس کے بعد میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے نہیں پوچھا اگر میں آپ سے زیادہ پوچھتا تو آپ اور زیادہ مجھے بتادیتے۔

अब्दुल्लाह इब्ने मसउद ने पूछा हुजूर सल्लल्लाहुअलइहे वसल्लम से "हमारे लिये अच्छा काम क्या है,जवाब मिला वक्त पर नमाज पढ़नाफिर, पूछा दुसरी बार और अच्छा काम क्या है? जवाब मिला माँ-बाप की खिदमत करना,तीसरी बार पूछाकि और अच्छा काम क्या है?तो जवाब मिलाकि अल्लाह के रास्ते में जिहाद करनेसे बढ़कर और कोई अच्छा काम नहीं है।

मुश्फिक मियां!आप मेरे इन सवालों का जवाब नहीं दे सके तो सवालों को ही गलत कह दिया क्या लिखा है.... देखें!

"आपने जो हदीस पेश की है उसमें तो लड़ाई की कोई बात ही नहीं कही गयी है। आपने इस बड़ी स्पष्ट हदीस पर अनावश्यक आपत्ति की है। शायद इसमें 'जिहाद' का शब्द देखकर आपने यह समझ् लिया कि यहाँ दुसरे लोगों से लड़ाई को सब मे बड़ा काम कहा गया है। यह केवल आपकी अज्ञानता है कि आप जिहाद के सही अर्थ को नहीं समझे।

जिहाद का शाब्दिक अर्थ "संघर्ष" है। इस अर्थ को यदि आपकी दी हुई हदीस में अपनाएं तो हदीस का अर्थ यह हुआ कि अल्लाह की राह में संघर्ष करना सबसे बड़ा काम है। इस पर आपको क्या आपत्ति है? क्या आप अपने धर्म के प्रचार में संघर्ष नहीं करते? क्या आप अपनी सोच के अनुसार ईश्वर के मार्ग में संघर्ष नहीं करते? अल्लाह का मार्ग तो एक पवित्र मार्ग है। इस मार्ग के प्रचार में और बुरे मार्ग की निंदा में तो हर जमाने में संघर्ष करना पड़ता है। क्या आपको यह भी मालूम नहीं, जो आपने इसकी तुलना लड़ाई से की? इसकी तुलना आप श्री कृष्ण के उस उपदेश से कीजिये जब उन्होंने अर्जुन से कहा–

"हे पार्थ, भाग्यवान क्षत्रियगण ही स्वर्ग के खुले द्वार के सामने ऐसे युद्ध के अवसरको अनायास प्राप्त करते हैं। दूसरी ओर, यदि तुम धर्मयुद्ध नहीं करोगे, तो स्वधर्म एवं कीर्ति को खोकर पाप का अर्जन करोगे." (श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय २:३२ श्लोक)

कहिए पंडित जी, क्याकृष्ण लड़ाकू हैं, जो दुनिया वालों को लड़ाना चाहते हैं? आदरणीय पाठको, नीचे मेने महेंद्रपाल जी का एक विडियो लिंक रखा है, जिस में वे हिन्दुओं को श्री कृष्ण के यही वाक्य सुना कर लड़ने पर उकसा रहे हैं। आप ही फेसला कीजिए कि कोन लडाकू है।"

जो महाभारत में अर्जुन को उपदेश दिया गया,यह उपदेश,उस समयका है जब अर्जुन ने युद्ध करने से मना किया था,इस प्रकरण पर मेरी बनी DVDजो १ घंटे से भी ज्यादा है इस मूढ़ ने उसमें से ५ मिनट का दिखा कर देखने,सुनने और पढने वालों को भड़काने का प्रयास किया है जिस का जवाब मैं अपनी फेसबुक और अपनी वैदिकज्ञान साईट में दे चुका हूँ। अब उसने किस प्रकार मुर्खता की बातें की हैं देखें।

जो इस्लाम को भी ले डूबने वाली बात है, कुरान का उपदेश अल्लाह का है और गीता का उपदेश श्री कृष्ण का है, तो क्या यह मूर्ख अल्लाह को और श्री कृष्ण को बराबर या समान मान रहे हैं? अगर हाँ तो कैसे?अगर नहीं तो यह दोनों की तुलना किसलिए?दूसरी बात... श्री कृष्ण का उपदेश लड़ने का अपने परिवार वालों के लिये है,और अल्लाह का उपदेश गैर मुस्लिमों को मारने के लिए है,इस अकल के दुश्मनों को यह पता नहीं लगा किश्रीं कृष्ण माता-पिता के गर्भ से जन्म लिया,जो परमात्मा नहीं है, तो क्या अल्लाह भी कृष्ण जैसे माता पिता के गर्भ से जन्म लिया फिर इनदोनों के उपदेश को किस मकसद से तुलना की गयी? रही बात हदीस की, मैंने जो प्रमाण दिया वह सत प्रतिशत सही है क्योंकि मुश्फिक अरबी जानता ही नहीं, यही तो कारण है कि आमने सामने,शास्त्रार्थ के लिये आज तक हिम्मत नहीं दिखा पा रहे हैं।जब यह सामने बैठेंगे तो इसीको मैं सही क्याऔर गलत क्या है.. जनता के सामने दिखा दूंगा। जिहाद का अर्थ अल्लाह के रास्ते में लड़ना, अल्लाह के दीन को फ़ैलाने के लिए गैर इस्लामिओं से लड़ने कानाम ही जिहाद है।किताब खोल कर देखो,मिसबाहुल्लुग़ात

[illegible]

मैं ने अपने सवाल नामा में लिखा! इस्लाम जगत के विद्वानों से कतीपय प्रश्नयानि मेरा प्रश्न किसी विद्वानों से था।सवाल को देख कर इस्लाम के विद्वान तो मौन हैं पर कुछ मनचलों ने माथा पच्चि करने को उतारू हो गये,जिसमें से यह मुश्फिक सुल्तान को देखें! ना तो अरबी को जानता और न हीं इस्लाम कि जानकारी? तो जो मूर्ख होता है वही हठी होताहैऔर उन्हें आलिमों का दुश्मन माना गया है।अपनी मूर्खता को मेरे ऊपर किस प्रकार लादना चाहा देखें! मेरी सही बात को उसने गलत बताया, मेरा सवाल था,हदीस में आया है,किताबुल ईमान में गैर-मुस्लिमों के जनाजे को देखनेपरमुसलमानों को कहना है **फी नारे जहान्नमा खालेदिना फिहा** अर्थ: **ये यक़ीनन जहन्नुम कि आग में जायेंगे और हमेशा उसमें रहेंगे।**सिर्फ इतनाही नहीं अपितु किसी काफिरका जनाज़ा देख कर अगर मुस्लमान कहे कि यह बैकुंठ वासी है,तो उस मुसलमान को भी ईमान से हाथ धोना पड़ेगा। यह लिखा है **किताब कानूने शरियत,बेहेशती जेवर,बहारेशरियत**आदि में। किन्तु मुश्फ़िक ने कहा कि यह झूठ है,आपने हदीस का हवाला नहीं दिया यह बे बुनियाद है।कुरान से ही प्रमाणदे रहा हूँ कारण कुरान ही सबसे बड़ा प्रमाण है। सूरा बैयेनाह आयत ६ कोदेखें ।

اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِیْنَ فِیْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ
اُولٰٓىِٕكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِیَّةِ ۝۶

بے شک جو لوگ اہل کتاب اور مشرکین میں سے کافر ہوئے وہ آتش دوزخ میں جاویں گے جہاں ہمیشہ ہمیشہ رہیں گے (اور)
یہ لوگ بدترین خلائق ہیں۔(۶)

قانون شریعت

جائے تو بھی اس کو جنت ملے گی۔ گناہ کی سزا بھگت کر یا معافی پا کر۔ اور یہ معافی اللہ تعالیٰ محض
اپنی مہربانی سے دے یا حضور علیہ السلام کی شفاعت سے

مسئلہ کافر کیلئے دعائے مغفرت کا حکم: جو کسی مرے ہوئے کافر کیلئے مغفرت کی دعا کرے یا کسی کافر مرتد کو مرحوم یا مغفور یا بہشتی کہے یا کسی ہندو مردہ کو بیکنٹھ باشی کہے وہ خود کافر ہے (عقیدہ) مسلمان کو مسلمان جاننا اور کافر کو کافر جاننا ضروری ہے۔ البتہ کسی خاص آدمی کے کافر ہونے کا یا مسلمان ہونے کا یقین اس وقت تک نہیں کیا جا سکتا جب تک کہ شرعی دلیل سے خاتمہ کا حال معلوم نہ ہو جائے کہ کفر پر مرا یا اسلام پر مرا لیکن اس کے یہ معنی نہیں کہ جس نے یقیناً کفر کیا ہو اس کے کافر ہونے میں شک کیا جائے اس لئے کہ یقینی کافر کے کفر میں شک کرنا خود کافر ہونا ہے۔ اس لئے کہ شریعت کا حکم ظاہر کے لحاظ سے ہوتا ہے البتہ قیامت میں فیصلہ حقیقت کے اعتبار سے ہوگا۔ اس کو یوں سمجھو کہ کوئی کافر یہودی نصرانی ہندو مر گیا تو یہ یقین کے ساتھ نہیں کہا جا سکتا کہ کفر پر مرا مگر ہم کو اللہ و رسول کا حکم یہی ہے کہ اسے کافر ہی جانیں اور کافر ہی کا سا برتاؤ اس کے ساتھ کریں جس طرح جو ظاہراً مسلمان ہے اور اس کا کوئی قول و فعل اسلام کے خلاف نہیں ہے تو فرض ہے کہ ہم اسے مسلمان ہی سمجھیں۔ اگرچہ ہمیں اس کے خاتمہ

ع قال العلامة التفتازاني الاشراک هو اثبات الشريک في الالوهية بمعنی وجوب الوجود کما للمجوس او استحقاق العبادة کما لعبدة الاصنام (شرح عقائد نسفی)

मियां जी! क्या आप अब भी बताएं गे कि यह झूठ है? हाँ यह तो बात ठीक है,कि कुरान हो या हदीस,सब जगह परस्पर विरोधी बातें है।कहीं कुछ तो कहीं कुछ मौका देखकर बात बदली गयी है,अनेकों प्रमाण हैं।वह आगे और लिखता है कुरान का हवाला देकर सूराहुजुरात आयत १३

يَاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۳﴾

اے لوگو ہم نے تم کو ایک مرد اور ایک عورت سے پیدا کیا ہے اور تم کو مختلف خاندان بنایا ہے تاکہ ایک دوسرے کو شناخت کر سکو اللہ کے نزدیک تم سب میں بڑا شریف وہی ہے جو سب سے زیادہ پرہیزگار ہو اللہ خوب جاننے والا پورا خبردار ہے۔ (۱۳)

"ऐ लोगो! हमने तुम्हें पुरुष और स्त्री से पैदा किया और तुम्हें कई दलों तथा वंशों में विभाजित कर दिया है, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचान सको। वास्तव में तुममें से अल्लाह के निकट सत्कार के

अधिक योग्य वही है, जो सबसे बढकर संयमी है। निश्चय ही अल्लाह सबकुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है." (सूरह हुजुरात ४९य आयत १३)

इस आयत से यह सिद्ध होता है कि जातियां एवं संतति केवल परिचय के लिए हैं। जो व्यक्ति उन्हें गर्व तथा स्वाभिमान का साधन बनाता है, वह इस्लाम के विरुद्ध आचरण करता है."

अब अल्लाह,कुरान व कुरान के मानने वाले कैसे फंसे हैं ध्यान से देखें! जिस आयत को इन्हों ने प्रस्तुत किया,कि अल्लाहनेकहा "ऐ **लोगो! हमने तुम्हें पुरुष और स्त्री से पैदा किया"(नोट:** यहां पर पाठको! देखें कि अर्थ को कैसे गलत कर के लिखा है मुश्फिक ने! सहीह अर्थ उर्दू में मौलाना अशर्फ अली थानवीका ऊपर दिया है जो है ऐ **लोगो! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया**) तो हजरत आदम की पत्नी को बिना मर्दऔर बिना औरत के कैसे पैदा किया?और हजरत ईसा को बिना मर्द के कैसे बनाया? कुरान ने जो कहा, वह ठीक है या मैं जो तथ्य देरहा हूँ वह ठीक है? यही तो कारण है कि मैं कयामत तक वक्त दिया हूँ जवाब देने के लिये... अगर अल्लाह खुद आ-जाएँ तो भी जवाब नहीं दे पाएंगे! मियां मुश्फिक! आप हो किस दुनिया में? मैने पहले ही बताया कि कुरान में परस्पर विरोधी बातें हैं।जैसा यहाँ कहा **किमैं तुम लोगोंको एक स्त्री और एक पुरुष से बनाया हूँ।**सूरा अल इमरान.आयत ४७ में देखें........!

قَالَتْ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكِ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾

(حضرت مریمؑ) بولیں اے میرے پروردگار کس طرح ہوگا میرے بچہ حالانکہ مجھکو کسی بشر نے ہاتھ نہیں لگایا۔ اللہ تعالی نے فرمایا کہ ویسے ہی (بلا مرد کے) ہوگا (کیونکہ) اللہ تعالی جو چاہیں پیدا کردیتے ہیں۔ جب کسی چیز کو پورا کرنا چاہتے ہیں تو اس کو کہدیتے ہیں کہ ہو جا بس وہ چیز ہو جاتی ہے۔ (۴۷)

अर्थ: यह सुनकर मरियम बोली,पालनहार!मेरे यहाँ बच्चा कहाँ से होगा,मुझे तो किसी मर्द ने हाथ तक नहीं लगाया।उत्तर मिला ऐसा ही होगा,अल्लाह जो चाहता है पैदा करते हैं।वह जब किसी काम के करने का फैसला करता है तो बस,कहता है कि होजा और वह होजाता है। यह देखो साहब! तुम्हारे अल्लाह ने क्या कहा?किएक स्त्री और एक पुरुषसे पैदा किया, अब मरियम कहरही है कोई किसी मर्द ने हाथ नहीं लगाया?तो जनाब यह बताएं कि अल्लाह की कौन सी कहनी सही है?मर्द के बिना जो बच्चा पैदा हुवा वह सही है! या मर्दऔर औरत मिल कर पैदा किया वह सही है? इसे कहते हैं ऊंट पर टांग।कुरान में ऐसी अनेक बातें हैं जो आप जानते तक नहीं... मैं तो यही कहूँगा कि जो सार्वभौम सत्य है वह एक ही हैऔर उसी सत्य को अपनाना यह मानवता है।आयेए मत-पंथ के चंगुल से बाहर निकलें मानव बनकर मानवता का परिचय दें।आगे उसने लिखा है...

"वैदिक ईश्वर का भेद भाव।विश्व के धर्मों में हिन्दू धर्म ही एक ऐसा धर्म है जिस में सामाजिक भेद-भाव के बीज शुरू से ही विद्यमान रहे हैं। हिन्दू धर्म सामाजिक भेद भाव को न केवल धर्म द्वारा अनुमोदित करता है, बल्कि इस धर्म का प्रारंभ ही भेद भाव के पाठ से होता है। हिन्दू धर्म ने शुरू से ही मानव मानव के बीच भेद किया। ऋग्वेद के पुरुषसूक्त ने स्पष्ट कहा कि ब्राह्मण परमात्मा के मुख से, क्षत्रिय उस कि भुजाओं से, वैश्य उस के उरू से तथा शूद्र उस के पैरों से पैदा हुए,

बराह्मणो.अस्य मुखमासीद ब्राहू राजन्य: कर्त: ।
ऊरूतदस्य यद वैश्य: पद्भ्यां शूद्रो अजायत ।।
(ऋग्वेद १०-९०-१२) "

अब इस मूढ़ को कौन समझाए? वेद के भेद को समझने के लिए, गुरू परम्परा से पढ़ना पड़ता है और आप जैसे अकल से पैदल

चलने वाले इतने जल्द कैसे समझेंगे भला?वेद को समझने के लिए अनेक ग्रंथों को पढ़ना होगा तब इसके भेद को कोई जान सकता है।आपने मन्त्र ही गलत बोला, वहां शब्द है **ब्राह्मणस्य मुखम आसीत**अर्थात ब्राह्मण समाज का मुख हैं,यहाँ मुख का अर्थ मुँह नहीं है जनाब!मुख मानी अगवाह,पथ प्रदर्शक,रास्ता दिखाने वाला,ज्ञान देने वाला,इल्म देनेवाला। पर इन सब को जानने के लिए स्वाध्याय की आवश्क्ता होती है, जो आप के पास नहीं है। यहाँ मुरारी जी का हीरो बनने से बात नहीं जमेगी साहब! कुछ इल्म हासिल करना होगा,तभी आप जान सकते हैं इस भेद को।आपने लिखा....."**विश्व के धर्मो में हिन्दू धर्म ही एक ऐसा धर्म है जिस में सामाजिक भेद-भाव के बीज शुरू से ही विद्यमान रहे हैं।**"यह वाक्य ही आपके गलत है अनभिज्ञता के हैं,मुर्खता पूर्ण हैं हिन्दू कोई धर्म का नाम ही नहीं है,और ना आपही जानते हैं कि धर्म क्या है, किसको धर्म कहा जाता है? धर्म की परिभाषा समग्र इस्लाम को भी नहीं मालूम! अगर जानते होते तो न इस्लाम को धर्म कहते और न ईसाईयत को धर्म कहते, यह जितने भी मत-पंथ, मज़हब-रिलीजन हैं, इनमें से कोई भी धर्म नहीं है। रही बात वेद मन्त्र की जो ब्राह्मण,क्षत्रीय,वैश्यऔर शुद्रकी, तो आप इसे जिन्दगी भर भी नहीं जान सकते, जो शरीर की उपमा दी गयी है, वह यह है कि शरीर का चार हिस्सा है सिर सेगले तक ब्राह्मण, बाजू है क्षत्रिय,पेट है वैश्यऔर पांव हैं शूद्र। दिशा निर्देश करने वाला ब्राह्मण, सर को बचाने वालाक्षत्रिय,पेट है वैश्य, सब कुछ सबको पहुँचाने वाला,अगर यह लालाजी किसीको देने लेने में रूकावट करदेतोसर में दर्द,गए हकीम के पास हकीम साहब का हाथ जायेगा पेट में, सर पर नहीं! हकीम साहब जानते हैं सर में दर्द होने का कारण,कि लालाजीने लेनी देनी में कुछ कमोबेश की होगी, पांव है सेवक। पंडित जी को लेजाने से पहले,रामदास को ही भेजना पड़ेगा वरना आगे कोई नहीं जा सकता। शूद्र ही पता

लगाने को पहले क़दम रखेंगे कि हमारे साथी संगी को लेकर जा सकते हैं या नहीं?यह है उस वेद मन्त्र का भावआदि।जहाँ तक समाज में भेद भाव की बात है,वह सत्य सनातन वैदिक धर्म में भेद नहीं है।यह आप जैसे अपढ़ लोगों का काम है जो समाज में भेद पैदा किया है।वैदिक मान्यता है **किसमान प्रसवात्मिका स:जाती:** अर्थात प्रसव करने का तरीका जिनका एक है वह सब एक ही जाती के हैं,तो मानव मात्र का प्रसव करने का तरीका एक ही है,इसलिये मानव मात्र का एक ही जाती है। वैदिक मान्यता है**जन्मना जायते शूद्र:संस्कारात द्विज उच्चते**अर्थात जन्म से हर कोई शुद्र पैदा होता है,और संसकारसे,ऊपर उठता है।जिसको यह अज्ञानी-समाज जाती कह रही है, उनहोंने जाती और वर्ण के भेद को नहीं जाना और नहीं समझा है। यह चार वर्ण हैं,**चतुर्वर्ण मयासृष्टम् गुणकर्म विभागसौ** यह चार वर्ण है नाकि जाती,राजा राममोहन राय,पण्डित परिवारमें जन्म लेकर,**जन्म से जाती नहीं होती** का प्रचार किया। पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने यही किया। स्वामीदयानन्द ने किया भी यही,मुझ जैसे मुस्लिम परिवार में जन्म लेने वाले को,समाज में पण्डित बनाकर, वेद पाठी बनाकर, आज समाज में प्रस्तुत करने वाले का नाम महर्षि दयानन्द ही तो था। क्या मुझे मालूम नहीं कि इस्लाम में चार वर्ण इसी प्रकार हैं? शेख़,सैयद,मुग़ल,पठान किन्तु इस्लाम के नामसे सब एक ही हैं। हिन्दुओं का अज्ञान है कि उनकी यही गलती का फायदा इस्लाम और ईसाइयत ने उठाया। भारत में मुसलमान कोई आकाश से नहीं गिरे और ना ज़मीं के अन्दर से निकले! ईसाई भी भारत में हिन्दू से ही बने हैं।जब आप चर्चा वेद की कर रहे हैं तो आपको पता किसलिए नहींकि वैदिक धर्म में जातियताकी बीमारी नहीं है?सवाल करने के लिए भी इल्म चाहिये,बुद्धि चाहिये, जो आप के पास नहीं है।मनुस्मृति का हवाला भी आपने गलत

दिया,शूद्र के अर्थ हैं...अंजान,कोरा,जिसे कुछ भी जानकारी ना हो।पाठको! वह आगे लिखता है......

"पंडित जी, जिस घटना पर आप इतना आश्चर्य कर रहे हैं, वह केवल हजरत मुहम्मद (सल्ल.) के माध्यम से अल्लाह का एक चमत्कार था। हमने यह दावा कभी नहीं किया कि किसी मनुष्य के लिए चाँद के दो टुकड़े करना संभव था। यदि आप ईश्वर को सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ मानते हैं तो ईश्वर अपनी रचित सृष्टि का हमसे कहीं अधिक ज्ञान रखते हैं। अल्लाह के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं कि चाँद के दो टुकड़े करदे और दुनिया में उथल पुथल भी न हो। यह चमत्कार मक्का के मूर्ति पूजकों के आग्रह पर दिखाया गया। उन्हों ने हजरत मुहम्मद (सल्ल.) से अनुरोध किया कि यदि वह अल्लाह के सच्चे ईशदूत हैं तो चाँद के दो टुकड़े करें, और यदि वह ऐसा करदें तो सारे मूर्तिपूजक उनके सच्चे ईशदूत होने पर विशवास करें गे। लेकिन यह चमत्कार देखने के बाद भी उन्हों ने विशवास नहीं किया.

आप पूछते हैं कि चाँद को फिर जोड़ा किसने? जिसने तोडा उसी सर्वशक्तिमान अल्लाह ने जोड़ भी दिया।

हनुमान जी के बारे में उत्तर पढ़ने से पहले यह समझ लीजियह कि वर्तमान रामयाण की ऐतिहासिकता की पुष्टि कुरआन नहीं करता। हमारी यह मान्यता है कि एक अल्लाह के ईशदूत (पैगम्बर) के बगैर कोई ऐसे विशाल चमत्कार नहीं दिखा सकता। हनुमान जी के जिस चमत्कार के बारे में आप पूछ रहे हैं वह जिस सन्दर्भ में हमें मिलता है, उसमें उस का विशवास नहीं किया जा सकता। हनुमान जी ने सूर्य को फल समझ के निगल दिया था। अब हम ऐसे चमत्कारों में विश्वास नहीं रखते जो व्यर्थ हों या जिन से

कोई लाभ नहीं। चाँद के दो टुकड़े करने में और हनुमान जी का सूर्य को फल समझ के निगलने में कोई तुलना ही नहीं।"

मेरा सवाल था हजरत मोहम्मद साहब की ऊँगली के इशारे से चाँद का टुकड़ा होना! क्या ईश्वराधीन चाँद को कोई टुकड़ा करे तो दुनिया में उथल पुथल नहीं मचेगी?क्या कुछ लोगों के कहने मात्र से अल्लाह अपने निज़ाम को बदल सकता है? फिर टूटे चाँद को जोड़ा किसने?क्या हनुमान के सूरज को निगल जाना आप सत्य मानते हैं? हाँ तो कैसे? नहीं तो क्यों? फिर चाँद का टुकड़ा होना कैसे संभव हुवा?

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۝ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ
۝۲ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ۝۳ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ
مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ۝۴ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ۝۵ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ
الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝۶ خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ
مُّنْتَشِرٌ ۝۷ مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝۸ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ۝۹ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ
مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝۱۰ فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝۱۱ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ
عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝۱۲ وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۝۱۳ تَجْرِيْ
بِاَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝۱۴ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝۱۵ فَكَيْفَ
كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝۱۶ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝۱۷ كَذَّبَتْ عَادٌ
فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝۱۸ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ
مُّسْتَمِرٍّ ۝۱۹ تَنْزِعُ النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ۝۲۰ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ
۝۲۱ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝۲۲ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ۝۲۳ فَقَالُوْٓا

اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿۲۴﴾ ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿۲۵﴾ سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿۲۶﴾ اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿۲۷﴾ وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿۲۸﴾ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿۲۹﴾

قیامت نزدیک آپہنچی اور چاند شق ہو گیا۔(۱) اور یہ لوگ اگر کوئی معجزہ دیکھتے ہیں تو ٹال دیتے ہیں اور کہتے ہیں کہ یہ جادو ہے جو ابھی ختم ہوا جاتا ہے۔(۲) ان لوگوں نے جھٹلایا اور اپنی نفسانی خواہشوں کی پیروی کی اور ہر بات کو قرار آجاتا ہے۔(۳) اور ان لوگوں کے پاس (تو امم ماضیہ کی بھی) خبریں اتنی پہنچ چکی ہیں کہ ان میں (کافی) عبرت ہو۔(۴) یعنی اعلیٰ درجہ کی دانشمندی (حاصل ہو سکتی) ہے سو خوف دلانے والی چیزیں انکو کچھ فائدہ ہی نہیں دیتیں۔(۵) تو آپ انکی طرف سے کچھ خیال نہ کیجئے جس دن ایک بلانے والا فرشتہ ایک ناگوار چیز کی طرف بلاوے گا۔(۶) ان کی آنکھیں (مارے ذلت کے) جھکی ہوئی ہونگی (اور) قبروں سے اس طرح نکل رہے ہونگے جیسے ٹڈی پھیل جاتی ہے۔(۷) (اور پھر نکل کر) بلانے والے کی طرف دوڑے چلے جارہے ہوں گے کافر کہتے ہونگے کہ یہ دن بڑا سخت ہے۔(۸) ان لوگوں سے پہلے قوم نوحؑ نے تکذیب کی یعنی ہمارے بندے (خاص نوحؑ) کی تکذیب کی اور کہا کہ یہ مجنون ہے اور نوحؑ کو دھمکی دی گئی۔(۹) تو نوحؑ نے اپنے رب سے دعا کی کہ میں درماندہ ہوں سو آپ (ان سے) انتقام لے لیجئے۔(۱۰) پس ہم نے کثرت سے برسنے والے پانی سے آسمان کے دروازے کھول دئے۔(۱۱) اور زمین سے چشمے جاری کر دئے۔ پھر (آسمان اور زمین کا) پانی اس کام کے (پورا ہونے کے) لئے مل گیا جو (علم الٰہی میں) تجویز ہو چکا تھا۔(۱۲) اور ہم نے نوحؑ کو تختوں اور میخوں والی کشتی پر جو کہ ہماری نگرانی میں رواں تھی (مع مومنین کے) سوار کیا۔(۱۳) یہ سب کچھ اُس شخص کا بدلہ لینے کے لئے کیا جس کی بیقدری کی گئی تھی۔(۱۴) اور ہم نے اس واقعہ کو عبرت کے واسطے رہنے دیا کیا کوئی نصیحت حاصل کرنے والا ہے۔(۱۵) پھر (دیکھو) کہ میرا عذاب اور میرا ڈرانا کیسا ہوا۔(۱۶) اور ہم نے قرآن کو نصیحت حاصل کرنے کے لیے آسان کر دیا ہے سو کیا کوئی نصیحت حاصل کرنے والا ہے۔(۱۷) عاد نے (بھی اپنے پیغمبر کی) تکذیب کی (سو اس کا قصہ سنو کہ) میرا عذاب اور ڈرانا کیسا ہوا۔(۱۸) ہم نے ان پر ایک تند ہوا بھیجی ایک دوامی نحوست کے دن میں۔(۱۹) وہ ہوا لوگوں کو اس طرح اکھاڑ اکھاڑ کر پھینکتی تھی کہ گویا وہ اکھڑی ہوئی کھجوروں کے تنے ہیں۔(۲۰) سو (دیکھو) میرا عذاب اور ڈرانا کیسا (ہولناک) ہوا۔(۲۱) اور ہم نے قرآن کو نصیحت حاصل کرنے کیلئے آسان کر دیا ہے سو کیا کوئی نصیحت حاصل کرنے والا ہے۔(۲۲) ثمود نے (بھی) پیغمبروں کی تکذیب کی۔(۲۳) اور کہنے لگے کیا ہم ایسے شخص کا اتباع کرینگے جو ہماری جنس

کاآدمی ہےاوراکیلا ہے تواس صورت میں ہم بڑی غلطی اور (بلکہ) جنون میں پڑ جاویں۔(۲۴) کیاہم سب میں سے اسی پر وحی نازل ہوئی ہے (ہرگز ایسا نہیں) بلکہ یہ بڑا جھوٹا اور بڑا شیخی باز ہے۔(۲۵) ان کو عنقریب (مرتے ہی) معلوم ہو جائے گا کہ جھوٹا شیخی باز کون تھا۔(۲۶) ہم اونٹنی کو نکالنے والے ہیں ان کی آزمائش کے لئے سو ان کو دیکھتے بھالتے رہنا اور صبر سے بیٹھے رہنا۔(۲۷) اوران لوگوں کو یہ بتلادینا کہ پانی (کنویں کا) ان میں بانٹ دیا گیا ہے ہر ایک باری پر باری والا حاضر ہوا کرے گا۔(۲۸) سوانہوں نے اپنے رفیق (قدار) کو بلایا سو اس نے (اونٹنی پر) وار کیا اور مار ڈالا۔(۲۹)

حدثنا عبد الله بن محمد حدثنا يونس حدثنا شيبان عن قتادة عن أنس بن مالك ح و قال لي خليفة حدثنا يزيد بن زريع حدثنا سعيد عن قتادة عن أنس بن مالك رضي الله عنه أنه حدثهم أن أهل مكة سألوا رسول الله صلى الله عليه وسلم أن يريهم آية فأراهم انشقاق القمر

عبداللہ بن محمد یونس شیبان قتادہ حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ مکہ کے کافروں نے رسالت مآب صلی اللہ علیہ وسلم سے کہا (اگر تم نبی ہو تو) کوئی معجزہ دکھاؤ تو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کو چاند کے دو ٹکڑے کرکے دکھلائے۔

صحیح بخاری: جلد دوم: حدیث نمبر 855

حدثني زهير بن حرب وعبد بن حميد قالا حدثنا يونس بن محمد حدثنا شيبان حدثنا قتادة عن أنس أن أهل مكة سألوا رسول الله صلى الله عليه وسلم أن يريهم آية فأراهم انشقاق القمر مرتين

زہیر بن حرب، عبد بن حمید یونس بن محمد شیبان قتادہ رضی اللہ تعالی عنہ، حضرت انس رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت ہے کہ اہل مکہ نے رسول اللہ سے سوال کیا کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم انہیں کوئی نشانی دکھائیں تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے انہیں دو مرتبہ چاند کا پھٹنا دکھایا۔

صحیح مسلم: جلد سوم: حدیث نمبر 2576

मियां जी! अब इसका जवाब सुनलें मानव अकलमंद होने हेतु हर काम को करने से पहले दिमाग लगाता है।यह इंसानी फितरत है और परमात्मा ने मनुष्य को दिमाग दिया भी उससे कामलेने केलिए।अगर

हम उससे काम ना लें तो परमात्मा की क्या गलती? लेकिन हमारा नाम मानव इसलिए पड़ा कि हम विचार वाले हैं,बुद्धि से काम लेने वाले हैं।किन्तु मनुष्य में जब इस्लाम या ईसाइयत अन्दर होती है तो बुद्धि बाहर हो जाती है।इस्लाम की मान्यता भी यही है,बिना छानबीन किये मान लेने का नाम ईमान है। नीचे देख लो कि तुम्हारा ईमान क्या है और चाँद के टुकड़ा होना आप उसी ईमान के दायरे में ही मान रहे है

سوال۔ مسلمانوں کو کتنی چیزوں پر ایمان لانا ضروری ہے؟
جواب سات چیزوں پر جن کا ذکر اس ایمان مفصل میں ہے۔
اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ
وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ۔
اس کے معنی یہ ہیں کہ ایمان لایا میں اللہ تعالیٰ پر اور اسکے فرشتوں پر اور اس کی کتابوں پر
اور اس کے رسولوں پیغمبروں پر اور قیامت کے دن پر اور اس بات پر کہ دنیا میں
جو کچھ اچھا یا برا ہوتا ہے سب تقدیر سے ہوتا ہے اور اس بات پر کہ مرنے کے بعد پھر
زندہ ہونا ہے۔

यह है तालीमुल्इस्लाम की शिक्षा! यही कारण है कि अपनेझूठ को सत्य मानने में मजबूर हैं।ईश्वराधीन चाँद को कोई टुकड़ा करे, यहदुनिया का कोई भी पढ़ा लिखा आदमी नहीं मानेगा।पर मज़हबी लोगों को मानना ही पड़ेगा। कारण इसीका नाम ईमान है,अगर नहीं माना तो फ़ौरन ईमान से खारिज। यही कारण है कि यह आप नहीं मान रहे हैं आपका ईमान् मनवा रही है! यही तो आपने बोला, नाकि यह काम सिर्फ अल्लाह के हबीब, रसूले खुदा हजरत मोहम्मद ही कर सकते हैं इस काम को और कोई नहीं।बस इसी का ही नाम मज़हब है, अंध-विश्वास है,आपने यह भी माना,**मक्का के मूर्ति पूजकों के आग्रह पर दिखाया गया**। अब यह बात कोई समझदार पढ़े लिखों का मानना संभव है

क्या?अल्लाह पूरी दुनिया को लेकर नहीं है बात साफ हो गई कि सिर्फ अरब वालों को लेकर अल्लाह है! यही पक्षपात है यह **अल्लाह** के लिए हो सकता है किन्तु **परमात्मा** के लिये कदापि नहीं। दूसरी बात होगी कि मक्का के मूर्ति पूजकों के कहने से अगर हजरत मोहम्मद ने यह कर दिखाया,तो इच्छा पूर्ण किसकी हुई मूर्ति पुजकोंकी।फिर रसूल कि मर्यादा कहाँ है? फिरतो मूर्ति पूजकों की ईच्छा पूर्ति हो रही है।यही काम अकल पर पर्दा डालने वाला है। चाँद अरब वालों का नहीं है अपितु समग्र दुनिया वालों का है।यह बात लिखने में आप को लज्जा नहीं आई,या संकोच भी नहीं हुवा,कि अल्लाह सर्वशक्तिमान है, इस कारण वह जो चाहे सो करे या करदे! यह कदापि सर्व शक्तिमान की पहचान नहींहै और न इस्लाम जानता है कि सर्वशक्तिमान किसे कहा जाता है? **सर्वशक्तिमान** का मतलब है अपने काम को अंजाम देने में जिसको किसी का **सहयोग**,सहारा या मददकी आवश्यकता ना हो।और आप ने यहां पर **भी इस्लाम को कैसे** फंसा दिया। देखिए! "यह चमत्कार मक्का के मूर्ति पूजकों के आग्रह पर दिखाया गया। उन्हों ने हजरत मुहम्मद (सल्ल) से अनुरोध किया कि यदि वह अल्लाह के सच्चे ईशदूत हैं तो चाँद के दो टुकड़े करें, और यदि वह ऐसा करदें तो सारे मूर्तिपूजक उनके सच्चे ईशदूत होने पर विशवास करें गे। **लेकिन यह चमत्कार देखने के बाद भी उन्हों ने विशवास नहीं किया."** जिस अल्लाह को आप सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ कह रहे हैं, क्या वह यह भी नहीं जानता था कि अवैज्ञानिक चमत्कार जो मैं दिखाने जा रहा हूं... उस को मूर्ति-पूजक नहीं मानेंगे!!! यहां पर भी आपने **आलिमुलग़ैब** को भी न-जानने वाला बना दिया...कुरान में भी लिखा है सूरा: राद ९, मोमिनून ९२, सिजदा ६, सबा ३, फातिर ३८, जुमर ४६, हशर २२, जुमा ८, तग़ाउन १८, जिन्न २६ आदि आयाते करीमा से पता लगा... अल्लाह अदृश्य के बातों

को जानता है, किन्तु आप के लिखित प्रमाणों ने कुरान की इन आयतों को भी सवालों के घेरे में डाल दिया।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ⑨

आप अपने को कितने अकलमन्द मानते है!दिखें! हनुमान ने फल समझा सूरज को तो वहगलतहै और जो मोहम्मद साहब ने थाली समझ कर चाँद को तोड़ा था क्या!!!?**अकलबड़ीया भेंस**वाली बात है।अब जवाबदे रहा हूँलिखा, किन्तु पूछ रहे हैं सवाल! उसनेलिखा...

"पंडित जी, आप लोगों को समझाने का कष्ट करें गे कि सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य जवान जवान कैसे पैदा हुए थे जैसा कि आपके गुरु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास ८ में लिखा है? इस बात को आप किस विज्ञान के आधार पर सिद्ध करें गे?"

पाठको! पहले स्वामी दयानन्दजी द्वारा दिये गए प्रकरण को पढ़ लीजिए, ताकि आप सत्य को पूर्ण-रूपेण जान सकें...

" (प्रश्न) मनुष्य की सृष्टि प्रथम हुई या पृथिवी आदि की?

(उत्तर) पृथिवी आदि की।क्योंकि पृथिव्यादि एक विना मनुष्य की स्थितिऔर पालन नहीं हो सकता।

(प्रश्न) सृष्टि की आदि में एक वा अनेक मनुष्य उत्पन्न किये थे वाक्या?

(उत्तर) अनेक।क्योंकि जिन जीवों एक कर्म ऐश्वरी सृष्टि में उत्पन्न होनेएक थे उन का जन्म सृष्टि की आदि में ईश्वर देता है।क्योंकि 'मनुष्या ऋषयश्चये।ततो मनुष्या अजायन्त' यह यजुर्वेद में लिखा है।इस प्रमाण से यही निश्चयहै कि आदि में अनेक अर्थात् सैकड़ों, सहस्रों मनुष्य उत्पन्न हुए । और सृष्टि मेंदेखने से भी निश्चित होता है कि मनुष्य अनेक मां-बाप एक सन्तान हैं।

(प्रश्न) आदि सृष्टि में मनुष्य आदि की बाल्य, युवा वा वृणवस्था मेंसृष्टि हुई थी अथवा तीनों में?

(उत्तर) युवावस्था में।क्योंकि जो बालक उत्पन्न करता तो उनएक पालनएक लिए दूसरे मनुष्य आवश्यक होते और वृणवस्था में बनाता तो मैथुनी सृष्टिन होती।इसलिये युवावस्था में सृष्टि की है।

(प्रश्न) कभी सृष्टि का प्रारम्भ है वा नहीं?

(उत्तर) नहीं।जैसे दिन एक पूर्व रात और रात एक पूर्व दिन तथा दिनएक पीछे रात और रात एक पीछे दिन बराबर चला आता है, इसी प्रकार सृष्टि एकपूर्व प्रलय और प्रलय एक पूर्व सृष्टि तथा सृष्टि एक पीछे प्रलय और प्रलय एक आगेसृष्टि; अनादि काल से चक्र चला आता है।इस का आदि वा अन्त नहीं किन्तुजैसे दिन वा रात का आरम्भ और अन्त देखने में आता है उसी प्रकार सृष्टि औरप्रलय का आदि अन्त होता रहता है।क्योंकि जैसे परमात्मा, जीव, जगत् का कारणतीन स्वरूप से अनादि हैं वैसे जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय प्रवाह से अनादिहैं।जैसे नदी का प्रवाह वैसा ही दीखता है, कभी सूख जाता, कभी कभी नहींदीखता फिर बरसात में दीखता और उष्णकाल में नहीं दीखता।ऐसे व्यवहारों को**प्रवाहरूप** जानना चाहिए।जैसे परमेश्वर एक गुण, कर्म, स्वभाव अनादि हैं वैसे ही उसएक जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करना भी अनादि हैं।जैसे कभी ईश्वरएक गुण, कर्म, स्वभाव का आरम्भ और अन्त नहीं इसी प्रकार उस एक कर्तव्य कर्मों का भी आरम्भ और अन्त नहीं।

(प्रश्न) ईश्वर ने किन्हीं जीवों को मनुष्य जन्म; किन्हीं को सिंहादि क्रूर जन्म; किन्हीं को हरिण, गाय आदि पशु किन्हीं को वृक्षादि, कृमि, कीट, पतंगादिजन्म दिये हैं।इस से परमात्मा में पक्षपात आता है।

(उत्तर) पक्षपात नहीं आता।क्योंकि उन जीवों एक पूर्व सृष्टि में किये हुए कर्मानुसार व्यवस्था करने से।जो कर्म एक विना जन्म देता तो पक्षपात आता।"

पाठको! अब आप नीचे दिये गए वैदिक एवं इस्लाम की सृष्टि-रचना का तुलनात्मिक अध्ययन करें....

इस्लाम मजहब की मान्यता	वैदिक मान्यता
(वही) आसमान व ज़मीन का मोजिद है और जब किसी काम का करना ठान लेता है तो उसकी निसबत सिर्फ कह देता है कि "हो जा" पस वह (खुद ब खुद) हो जाता है (२:११७)	रचना से पूर्व अन्धकार से आच्छादित प्रकृति थी। यह अनुभव न हो सकने वाली सलिल अवस्था में थी। अनुभव में न आ सकने वाली थी। तब तपस से एक महान प्रकाश प्रकट होता है।(ऋग्वेद: १०:१२९:३)
ख़ुदा ही तो है जिसने सारे आसमान और ज़मीन और जितनी चीज़े इन दोनो के दरम्यिान हैं छह: दिन में पैदा की फिर अर्श (के बनाने) पर आमादा हुआ उसके सिवा न कोई तुम्हारा सरपरस्त है न कोई सिफारिशी तो क्या तुम (इससे भी) नसीहत व इबरत हासिल नहीं करते (३२:४) आसमान से ज़मीन तक के हर अम्र का वही मुद्बबिर (व मुन्तज़िम) है फिर ये बन्दोबस्त उस दिन जिस की मिक्दार तुम्हारे शुमार से हज़ार बरस से होगी उसी की बारगाह में पेश होगा (३२:५) वही (मुदब्बिर) पोशीदा और ज़ाहिर का	प्राकृतिक नियमों और जगत के प्राकृतिक स्वरूप के तपने से यह जगत प्रकट होता है।जब अन्तरिक्ष शक्ति रहित हो जाता है तब रात्रि आ जाती है। शक्ति रहित अन्तरिक्ष से ही संवतसर का आरम्भ होता है अर्थात मध्य रात्रि में ही अगला ब्रह्म दिन आरम्भ होता है। सब को बश में रखने वाला काल(ईश्वर) संवत्सर का आरम्भ कर लेता है. फिर सूर्य चन्द्रादि पुन: वैसे ही बन जाते हैं. द्युलोक, पृथ्वी और अन्तरिक्ष आदि बन जाते हैं। (ऋग्वेद: १०:१९०:१-३-) आकाश (space) के पश्चात्

जानने वाला (सब पर) ग़ालिब मेहरबान है (६) वह (क़ादिर) जिसने जो चीज़ बनाई (निख सुख से) ख़ूब (दुरुस्त) बनाई और इन्सान की इबतेदाई ख़िलक़त मिट्टी से की (३२:७) उसकी नस्ल (इन्सानी जिस्म के) ख़ुलासा यानी (नुत्फे के से) ज़लील पानी से बनाई (३२:८) फिर उस (के पुतले) को दुरुस्त किया और उसमें अपनी तरफ से रुह फूँकी और तुम लोगों के (सुनने के) लिए कान और (देखने के लिए) आँखें और (समझने के लिए) दिल बनाएँ (इस पर भी) तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो (३२:९)

ऐ लोगों अपने पालने वाले से डरो जिसने तुम सबको (सिर्फ) एक रूह से पैदा किया और उसीमें से उनकी बीवी (हव्वा) को पैदा किया और (सिर्फ़) उन्हीं दो (मियाँ बीवी) से बहुत से मर्द और औरतें दुनिया में फैला दिये(४:१)
(अनुवाद: **मौलाना मुहम्मद** जूनागढ़ही व सभी आलिमों ने यही अर्थ किया है।)

वायु, वायु के पश्चात् अग्नि, अग्नि के पश्चात् जल, जल के पश्चात् पृथिवी, पृथिवी से ओषधि, ओषधियों से अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से पुरुष अर्थात् शरीर उत्पन्न होता है। (तैत्तिरीय उपनिषत् २:१)

नोट: पाठको यहां पर मैं आपको कुरान की अंतरविरोध बातों पर ध्यान दिलाना चाहता हूं।
दिये संदर्भो में तो आप पढ़ चुके हैं कि अल्लाह ने आदम को मिट्टी से बनाया, मगर २१:९१ में मरियम का बिना पुरूष के बच्चा जनना, ९६:२ में खून के लोथड़े से और ७६:२ में फिर वीर्य से पैदा करना आदि संदर्भ अपने आप में अंतरविरोधी हैं। और फिर एक ही स्त्री-पुरूष से पैदा हुए बच्चों का आपस में शादी करवाना कौन सी सभ्यता है?

जनाब मुश्फिक साहब! आपने अपनेझूठ को छुपाने के लिए दूसरों पर आरोप लगाने का प्रयास किया। यही सवाल मैं आपसे करता हूँ,कि अल्लाहने आदम को जवान पैदा किया था या बच्चा?अगर जवान पैदा किया तो क्या आसमान से टपका दिया था अल्लाह ने? फिर आदम-पत्नी को कैसे पैदा किया?यह जवाब तो आपके पास भी था,फिर आपने यह सवाल किसलिए किया?जब अल्लाह एक पुरुष और एक ही स्त्री से दुनिया बना सकते हैं,तो परमात्मा अनेक क्यूं नहीं बना सकते? अल्लाह ने पुतला बनाकर उसमे रूह डाला,तो अल्लाह यहाँ मोहताज होगया मिटटी लाने वाले का,तो अल्लाहने जब आदम पत्नी को बिना मिटटी से कैसे बना दिया?आदम में अल्लाह ने रूह डाली,किन्तु आदम पत्नी को रूह अल्लाह ने डाली या नहीं इसकी चर्चा कहीं नहीं। सृष्टि विज्ञान को जब आप जानने का प्रयास करेंगे तो बात समझ में आएगी,पर समझने के लिए समझदारी चाहिये, वह आप लोगों में नहीं! सृष्टि रचना को जो मैं दर्शा दिया हूं, उसे ध्यान से पढ़कर समझने का प्रयास भी करें। ऋषि दयानन्द के बातों को पढ़ने व समझने के लिये दिमाग के साथ साथ कलेजा भी चाहिये वरना लोग सत्य को जान नहीं पाएंगे। गुरुदत्त विद्यार्थी जैसों ने १७ बार पढ़ा सत्यार्थ प्रकाश को, उसके बाद भी कहा कि जब-जब मैं इस सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ा, हर बार कुछ ना कुछ नई बातें हमें मिली हैं।मैं अगर अपनी पूरी संपत्ति बेच कर भी यह सत्यार्थ प्रकाश खरीदता तो भी इस पुस्तक का मूल्य ज्यादा है।इस ग्रन्थ के बारे में इस भारत के गुलामी काल में अपने देश के जितने भी बड़े-बड़े विद्वान हुए, सब ने भूरी भूरी प्रशंसा की है और विदेशी विद्वानोंने भी इस पुस्तक का गुण-बखान किया है।सत्यार्थप्रकाश वह ग्रन्थ है न मालूम कितनों की काया कल्प किया है,लोगों को अंधकार से प्रकाश में ला खड़ा किया है, कितने भटकों को रास्ता दिखाया है इस एक ग्रन्थ को पढ़ने सेतीन सौ से भी ज्यादा ग्रंथों का पढ़ना हो जाता

है। इस ग्रन्थ के पढ़ने से बुद्धि का ताला खुल जाता है, आंखों पर से काला चश्मा उतर जाता है। इस किताब के पढ़ने वाले हर प्रकार के अंध-विश्वासों से मुक्ति पाए हैं।सही-सही परमात्मा का ज्ञान इस पुस्तक के पढ़ने से ही हुवा है।जिस परमात्मा के बारेमें लोगों ने दुकानदारी की,इस पुस्तकने लोगों को परमात्मा का सही और सच्चा पता बताया। सभी प्रकार के गुरुडम से दुनिया वालों को मुक्ति दिलाई,जिस पुस्तक ने सत्य और असत्य का बोध कराया। क्या पढ़ना,क्या नहीं पढ़ना, कब पढ़ना कब नहीं पढ़ना, किसके पास पढ़ना, किसके पास नहीं पढ़ना। क्या पहनना क्या नहीं पहनना,कैसा पहनना कैसा नहीं पहनना, कब पहनना, कब नहीं पहनना, क्या खाना,क्या नहीं खाना, कैसा ख़ाना,कैसा नहीं खाना,किसके हाथका खाना और किसके हाथ का नहीं खाना,किसके घर खाना, किसके घर नहीं खाना,इस प्रकार जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त,क्या करना क्या नहीं करना कोई विषय उस पुस्तक में खाली नहीं जो जीवन में काम आने वाली न हो,हर बात पर प्रकाश डालने के बाद,धरती पर फैले मत-पंथ को भली भांति दर्शाया।मानव समाज को तर्क की कसौटी पर खड़ा होने का बोध कराया। इस पुस्तक ने दीन दुखियों को जीने का सहारा दिया। मत-मतान्तरों के मकड़ जाल में फंसे,दुनिया वालों को निकाल कर धर्म का बोध कराया।उसी सत्यार्थ प्रकाश पर आप टिप्पणी कर रहे हैं,दर असल जिनकी बुद्धि द्वेशसे भरी होगी,वह वैसा ही सोच पाएंगे। इसलिए तो ऋषि दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में ही जना दियां किं

"बहुत से हठी, दुराग्रही मनुष्य होते हैं कि जो वक्ता के अभिप्राय से विरुद्ध कल्पना किया करते हैं, विशेष कर मत वाले लोग क्योंकि मत के आग्रह से उनकी बुद्धि अन्धकार में फँस के नष्ट हो जाती है इसलिए जैसा मैं पुराण, जैनियों के ग्रन्थ, बायबिल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देखकर उन में से गुणों का

ग्रहण और दोषों का त्याग तथा अन्य मनुष्य जाति की उन्नति के लिए प्रयत्न करता हूं, वैसा सबको करना योग्य है। इन मतों के थोड़े-थोड़े ही दोष प्रकाशित किए हैं, जिनको देखकर मनुष्य लोग सत्या सत्य मत का निर्णय कर सकें और सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करने कराने में समर्थ होवें, क्योंकि एक मनुष्य जाति में बहका कर, विरुद्ध बुद्धि कराके, एक दूसरे को शत्रु बना, लड़ा मारना विद्वानों के स्वभाव से बहि:है।"

मीयां जी! इस प्रकार की बात केवल ऋषि ही कर सकता है।

प्राय: लोगों से सुनता हूँ कि ऋषि दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश में केवल खंडन ही किया है।किन्तु मैं इससे सहमत नहीं हूँ, कारण खंडन का अर्थ है तोड़ना, चूर-चूर करदेना। पर उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं किया। सिर्फ दर्शाया,आप इस किताब को मानते हो मैं उसी पर ही सवाल कर रहा हूं,जवाब दें! फिर भी कोई कहे कि खंडन किया,तो उनके लिए क्या कहा जा सकता है,पर विचार तो हम करही सकते हैं?देखें वेद में मूर्ति पूजा नहीं है,स्वामीजी ने सारा प्रमाण वेद से ही दिया है,तो जिनलोगों ने मूर्ति पूजा की, खंडन उन्हों ने किया या दयानन्द ने?तो ठीक इसी प्रकार की बातें हर मत मतान्तरों की पुस्तक से की हैं। तो उन्हें भी अपनी पुस्तक पर की गई टिप्पणी पर विचार करना चाहिये। उस गलती को ना देख कर सत्यार्थ प्रकाश पर दोष लगाना युक्ति युक्त नहीं,अपितु स्वामी जी को धन्यवाद देकर उनका शुक्रिया अदा करना चाहिये।कि **महाराज आपने मेरे ज्ञान-चक्षु खोल दिये मैं आप का आभारी हूँ।** अईना का काम है चेहरे को जूं का तूं दिखा देना किसी के चेहरे पे दाग लागा है आईना उसे दिखादे तो क्या उस आईनेकी गलती है? उसका काम तो हू-बहू दिखाना ही है, तो उसआईने को दोषी बताना कोई बुद्धि मानी नहीं!

अईना चेहरे का हर दाग दिखा देता है,

यह उसकीफितरत का तकाज़ा है,यह शिकवा कैसा।
आप सत्यार्थ कि तनकीदसे नाराज न हों,
अपने चेहरे को ही धो डालिए, और यह गुस्सा कैसा।।

आपने सत्य को सोचने समझने के बजाये, सत्य को मानने से इंकार करदिया,हाँ यहतो है कि सत्य को स्वीकार करने के लिए कलेजा चाहिये,हर कोई सत्यको सुन भी नहीं सकता,मानने की तो बात ही क्या है,सुनने के लिये भी लोग प्रस्तुत नहीं रहते,अनेको प्रमाण मैं दे सकता हूँ।आपने जो वेद का प्रमाण दिया उसमें बहुत गलतियां हैं,आपने मन्त्र भी सही नहीं लिखा,वह आपकी गलती नहीं, प्रायः लोग ऐसी गलती कर ही बैठते हैं, कारण जो जिस चीज को नहीं जानते और करने लगें! तो गलती का होना स्वाभाविक है, आपकी गलती को मैं ठीक करके लिखा हूँ।आपने ***अग्निमीळे***जो मन्त्र लिखा था वह गलत था मैं सुधार कर लिखा हूँ देख लेना। सब जगह इसी प्रकार की गलती आपने की हैं,इसलिये मैंने पहले ही कहा कि वेद पर चर्चा बाद में करलेंगे जिस कुरान को लेकर हम बैठे हैं पहले आप इसीसे अपना पिंड छुड़ायें।आपने अपनेझूठ को सत्य प्रमाणित करने के लिए मनमानी वैदिक मान्यता पर दोषारोपण करने का प्रयास किया है। वाम मार्गियों के अनुवाद का ही प्रमाण दिया है जिसकी हमारे यहाँ कोई मान्यता नहीं है। मैं पहले ही प्रमाण दे चुका हूँ ***ब्राह्मणस्य...***को आपने लिखा है, कैसे गलत है.... मैं दिखा चुका हूँ।आप मेरे सवालों का जवाब देने के बजाय खुद सवालों में उलझ गए! आप को जवाब देना था और आपने लिखा भी कि जवाब दे रहा हूँ,तो जवाब कौन सा है ? मेरा सवाल था ...आपकी मान्यता है तौरेत, जबूर,इंजील व कुरान यह चार ईश्वरीय ग्रन्थ हैं, पहली,दूसरीव तीसरी में क्या कमी रह गयी थी,जो चौथी में पूरी की गई ?और अगर कमी रह गई तो अल्लाह का ज्ञान अधूरा था क्या? उत्तर क्या दिया देखें!

"कुरआन मानता है कि पहले ईश्वरीय पुस्तकें आई हैं मगर इसी के साथ यह भी कहता है कि बेईमान लोगों ने उन में कई परिवर्तन कर दिए हैं। इसलिए अब उनमें जिन बातों की पुष्टि कुरआन करता है, वे सत्य हैं और जो बातें कुरआन के विरुद्ध हैं वे किसी ने मिला दी हैं। अल्लाह फरमाते हैं-

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ

हम (अल्लाह) ने आपकी ओर (ऐ नबी) कुरआन उतारा है जो अपने से पहली पुस्तकों की पुष्टि करता है और उनका संरक्षक है (अर्थात गलत को सही से अलग करता है)(सूरह माइदा ५य आयात ४८)

तो पिछली किताबों में जो गलत शिक्षाएं मिला दी गयी थीं, उनका खंडन कुरआन ने किया। उदाहरण के लिए देवता पूजा, अवतार पूजा, हजरत ईसा की पूजा, पुनर्जनम, स्त्री का अपमान, सती प्रथा, मनुष्य बलि, सन्यास, वर्णाश्रिम, आदि

इस प्रमाण से आपके प्रश्न का कोई आधार नहीं है, अल्लाह का ज्ञान अधूरा नहीं और ना ही पिछली किताबों में कोई कमी थी।"

मुशिफकजी! वाकईमें आप ने कितने सहज भाव से लिख दिया,शायद आप के पास अकल नामकी कोई चीज ही नहीं है।आप के अल्लाह का कलाम कैसा! जो इन्सान उसमें मिलावट करदे?और मिलाया भी तो क्या अल्लाह के खिलाफ बातें!! वाहरे! अकल के बटलोई! मतलब साफ हो गया कि अल्लाह की और इन्सान की बात या ज्ञान मिलता जुलता है तभी तो उसमें मिलावट की। हाँ! ध्यान रखनाभाई! आप ने अल्लाहके ज्ञान में भी दोष लगा दिया,अगर अल्लाह के ज्ञान में इन्सान ने मिलावटकी, तो क्या अल्लाह को पहले से यह इल्म नहीं था कि इसमें

मिलावट इन्सान कर सकता है? आपने जो हवाला दिया सूरा मायदा का तो जरूर आपने देखा होगा कि अल्लाह ने कहा ***"मैं अगर चाहता तो, तुम सब को एक उम्मत भी बना सकता था"***अब अल्लाह से कोई पूछे कि आप के सब को एक ना बनाने में कौन सा स्वार्थ था?क्या आप यह देखना चाहते थे कि मुश्फिक मियां में और महेंद्र पाल में किसतरह बहस मुबाहेसा होगा?वाह रे खुदा! तू और तेरी खुदाई! दुनिया वालों को किसलिए लड़ने में आमादा करवा दिया,***आबुहुम आदामो वल उम्मो हवाऊ:***जब इस्लाम की मान्यता है सब इन्सान का बाप आदम और माँ हवा है?

नोट: इस से बड़ी मुर्खता की बात और क्या होगी!अल्लाह की दी हुई पुस्तकों में बेईमान लोगों ने मिला दिया! कितनी अज्ञानता की बात है?न मालूम परमात्मा इनको बुद्धि कब देंगे?अरे! अकल से पैदल चलने वालो! तुम्हारे अल्लाह कीवह किताब कैसी? जिसमें इन्सान ही मिलावट कर दे?अकल के अंधों को मालूम ही नहीं वेद एक ही है।चार कांड हैं, जिसे ऋषियों ने अलग कर के दिया। ज्ञान कांड, कर्म कांड, उपासना कांड और विज्ञान कांड जो चार ऋषि ने अलग-अलग बताया।वेद मूलत:एक ही है।अगर वेद चार हों तो एक ऋषि दुसरे वेद से वंचित रह जायेंगे!यही कारण है किवेद ***एक वचन में ही आया है।*** ***वेद सब सत्य विद्याओंकी पुस्तक है।*** आपने सोचा कि जैसे तौरैत, जबूर,इंजील और कुरान यह चार है अलग-अलग, तो वेद भी ठीक ऐसाही होगा और आपने लिख दिया।मैं तो बार बार इसलिये आपसे कहरहा हूँ कि आमने-सामने बैठ कर हम बात करें और सही क्या है,गलत क्या है इसे खुद जाने... औरों को भी जान कारी दें। आप आज तक तैयार ही नहीं हो रहेऔर अनाप-शनाप बोलना भी बंद नहीं कर रहे हैं! यह कौन सा तरीका है भाई?

अब मेरे सवालों को देखें, किसी कुंवारी लड़की से, संतान ईसा का पैदा होना, विज्ञान व मानवता विरुद्ध नहीं? अगर कुरान ज्ञान का भंडार है! फिर यह अज्ञान-भरी बातें क्योंऔर कैसे! कौन सा तरीका है जो अल्लाहने मरियम के शर्मगाहमें फूंक मारकर गर्भवती बना दिया!सूराअम्बिया ९१ को देखें!

وَالَّتِيٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾

اور ان بی بی (مریمؑ) کا تذکرہ کیجیے جنہوں نے اپنے ناموس کو بچایا پھر ہم نے ان میں اپنی روح پھونک دی اور ہم نے ان کو اور ان کے فرزند (عیسیٰؑ) کو دنیا جہان والوں کے لیے (اپنی قدرت کاملہ کی) نشانی بنا دی۔ (۹۱)

अर्थ ऊपर लिख चुका हूँ।अब यह अल्लाह काकौन सा आविष्कार है कि किसी महिला कोफूंक मार या किसी और से मरवा कर गर्भवती बना दे?और फिर सूरा दहर आयत २ को पढ़ें!

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿٢﴾

ہم نے انسان کو (مرد اور عورت کے) مخلوط نطفہ سے پیدا کیا جسے ہم الٹ پلٹ کرتے رہے پھر اسے سننے اور دیکھنے والا بنا دیا۔

मुश्फिक मीयां! यहां तो कुरान अल्लाह ही का परदाफाश कर रहा है। अब आप ही बताओ कि अल्लाह की कौनसी बात सही है!!? अगर पहली आयत को माने... जो अल्लाह निराकार है वह फूंक किस प्रकार मारेगा भला? अकल के दुश्मन ने जवाब दिया!

"हजरत मरियम से बिन पति के संतान का पैदा होना सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ ईश्वर के लिए कोई बड़ी बात नहीं।"

भाई! आपने फिर मुर्खता पूर्ण बात लिखदी। आपने ईश्वर के लिएलिखा कि *कोई बड़ी बात नहीं,* तो यह काम ईश्वर का है ही नहीं!इतना प्रमाण मैं दे चुका हूँ कि ईश्वर और अल्लाह एक नहीं हैं।कारण, ईश्वर का काम सिस्टम से है, नियमानुसार है, हिसाब से

है।ईश्वर कभी किसी महिला में फूंक नहीं मार सकता,जो अल्लाह ने कुरान में बताया। सर्वशक्तिमान का यह अर्थ नहीं कि किसी महिला में फूंक मारे। भाई! इसको तो अल्लाह तक ही रहने दें! ईश्वर के पास मत भेजना इस काम को!!! इस जनाब ने इस बात को सही सिद्ध करने के लिए कैसी-कैसीअटकलें लगाई, देखें!

"यहाँ पर अरबी शब्द "अह्सनत फर्जहा" का अर्थ होता है अपनी पवित्रता (अर्थात इज्जत) की सुरक्षा। हजरत मरयम की एक खूबी यहाँ यह बतायी गयी कि उन्हों ने अपनी शेह्वत (वासना) को काबू में रखा।"

इस बेचारे ने सोचा यह जवाब ही अकाट्य है, पर उनकी चालाकी ने ही उसे फंसा दिया!

भाई मुश्फिक जी ऊपर के चित्र में ***आसान कुरानिक कोश जो अब्दुल करीम पारीख*** क्या अर्थ बता रहा है फरूजा: का वह भी देख लें।***अब ऐ मुश्फिक! तू मेरे दियेगए किस-किस प्रमाण को झुठलाओ गे!***यह ध्यानसे देखें,वह नारी जिसने अपनी स्वतित्व की रक्षा की,तो सिर्फ मरियम ही किसलिए अपनी पवित्रता कि हिफाजत करेगी भला, वह तो हर महिला ही करती है!पता लगा कि अल्लाह की नजर में सिर्फ मरियम ने ही अपनी पवित्रता कि हिफाजत की थी कोई और नहीं?दूसरी बात है कि अल्लाह ने रूह फूंकी?वह रूह कौन सी थी जो अल्लाह ने फूंकी? वह आई कहांसे और वह बनी कैसे और किस चीज से वह रूह बनी थी? फिर इन्होंने कहा वह **विशेष मामला था**,तो क्या अल्लाह ने इन्सान बनाने में सबके साथ अलग अलग मामला रखा **है**?या मनुष्य

बनाने की परिपाटी सब एक ही है? फिर कहा इस बात को सारे मनुष्यों पर लागू नहीं कर सकते। मतलब वही हुवा जो मैं लिखा हूँ। यानि अल्लाह ने हर एक को अलग अलग ढंग से बनाया। यह काम परमात्मा का नहीं है। यह किस प्रकार अपनी गलती को छुपाने के लिए मनमानी बातें कर रहे हैं..... देखें!***विशेष कारण थे,हजरत ईसा के साथ एक विशेष मामला था,*** ईसा को बिना बाप का पैदा करके अल्लाह क्या बताना चाहते हैं जो विशेष मामला बताया जा रहा है?पर वह भी तो बताना चाहिये ना,कि वह मामला क्या था, अल्लाह इससे दुनिया वालों को क्या शिक्षा देना चाहते हैं?हर वेद मन्त्र को इन्हों ने गलत लिखा और अपने लिये मनमानी अर्थ, जो अवैदिक हैं, उसी को लिखा।

अब मेरा सवाल था क्या पैगम्बरे इस्लाम हजरत मुहम्मद साहब ने अपने पालक पुत्र ज़ैद की पत्नी ज़ैनब से निकाह किये बिना अपनी पत्नी बना कर घर नहीं रखा? फिर अल्लाह को गवाही देनी पड़ी और कहना पड़ा"हमने आसमान में निकाह करा दिया"।निकाह गवाही के बिना होता नहीं,आसमान में गवाह कौन थे? किस काज़ी व मुफ़्ती ने निकाह कराया?मेहर कितना रखा गया? सभी प्रश्नों का सही जवाब मिलने पर इस्लाम स्वीकार करने पर विचार किया जा सकता है,अगर जवाब न मिले तो वैदिक धर्मी, बनने हेतु निमंत्रण है।उसका उत्तर क्या दिया देखें......

"पंडित जी आपका अंतिम प्रश्न तो झूट का भंडार घर है,पैगम्बरे इस्लाम हजरत मोहम्मद सल्ल ने हजरत जैनब से इस्लामी नियम के अनुसार निकाह किया,आपने अपने दावे का कोई प्रमाणिक हवाला नहीं दिया,आसमान में निकाह हुवा यह आपने कहाँ पढ़ा है पया कुछ ठोस प्रमाण प्रस्तुत किजये उसके बाद ही मै उत्तर देने का विचार करूँगा "

अरे भाई आपतो इस्लाम के दावेदार हैं और अपने को ज्ञाता मान रहे थे,वह भी सिर्फ कुरान के जानकार नहीं अपितु वेद के भी जानकार महा पंडित अपने को दर्शाने को आतुर थे। इस्लाम जगत के मौलवी सना उल्लाह जैसों से भी अपने को बड़ा आलिम मान कर नए तत्थों के साथ जवाब दे रहा हूँ लिखा,फिर कुरान कि जानकारी मेरे से पूछ रहे हैं? जनाब!एक बात जरूर ध्यान रखना जानकारी ली जाती है,जानकारों से,आलिमों से,अपनों से जो बड़ा है उन से और उस्तादों से।अब तक तो दुनिया को उस्ताद बन कर बातें कर रहे थे,अब" आगये असलियत पर! याद रखना उस्ताद उस्ताद ही होता है, जो आपने मुझे मानलिया।ठीक है, मैं आपको कुरान से ही जानकारी दे रहा हूँ,कि जैनब को निकाह किये बगैर,रसूले खुदा ने अपने घर रख लियाऔर अल्लाह ने किस प्रकार इसका समर्थन करते हुवे कहा कि मैंनेनिकाह करादी,तो खुदा असमान में है या धरती पर? अल्लाह जिस जगह हैं निकाह भी वहीं हुई इस में कौन सा प्रमाण चाहिये भाई?

आप सूरा अहज़ाब की आयत ३७व ५० ही पढ़लें!तो उसी मेंही आप पा जायें गे बहुत सारा भेद.....

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِیْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَیْهِ اَمْسِكْ عَلَیْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِیْ فِیْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِیْهِ وَتَخْشَی النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰی زَیْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَیْ لَا یَكُوْنَ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ حَرَجٌ فِیْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِیَآىِٕهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۳۷﴾

اور جب اس شخص سے فرمارہے تھے جس پر اللہ نے بھی انعام کیا اور آپ نے بھی انعام کیا کہ اپنی بی بی (زینبؓ) کو اپنی زوجیت میں رہنے دے اور خدا سے ڈر اور آپ اپنے دل میں وہ (بات بھی) چھپائے ہوئے تھے جس کو اللہ تعالیٰ (آخر میں) ظاہر کرنے والا تھا اور آپ لوگوں (کے طعن) سے اندیشہ کرتے تھے اور ڈرنا تو آپ کو خدا ہی سے سزاوار ہے پھر جب زید کا

اس سے جی بھر گیا ہم نے آپ سے اس کا نکاح کر دیا تاکہ مسلمانوں پر اپنے منہ بولے بیٹوں کی بی بیوں کے (نکاح کے)
بارے میں کچھ تنگی نہ رہے جب وہ (منہ بولے بیٹے) ان سے اپنا جی بھر چکیں اور خدا کا یہ حکم تو ہونے والا تھا ہی۔(۳۷)

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْٓ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّآ اَفَآءَ
اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ
مَعَكَ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً
لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝۵۰

اے نبی ﷺ ہم نے آپ کے لیے آپ کی یہ بیبیاں جن کو آپ ان کے مہر دے چکے ہیں حلال کی ہیں اور وہ عورتیں بھی جو
تمہاری مملوکہ ہیں اور جو اللہ تعالیٰ نے غنیمت میں آپ کو دلوادی ہیں اور آپ کے چچا کی بیٹیاں اور آپ کی پھوپیوں کی
بیٹیاں اور آپکے ماموں کی بیٹیاں اور آپ کے خالاؤں کی بیٹیاں بھی جنہوں نے آپ کے ساتھ ہجرت کی ہو اور اس
مسلمان عورت کو بھی جو بلا عوض اپنے کو پیغمبر کو دے دے بشرطیکہ پیغمبر اسکو نکاح میں لانا چا ہیں یہ سب آپ کے لیے
مخصوص کیے گئے ہیں نہ اور مومنین کے لیے ہم کو وہ احکام معلوم ہیں جو ہم نے ان پر ان کی بیبیوں اور لونڈیوں کے بارے
میں مقرر کیے ہیں تاکہ آپ پر کسی قسم کی تنگی (واقع) نہ ہو اور اللہ تعالیٰ غفور رحیم ہے۔(۵۰)

मैं आपके साथ-साथ दुनिया के लोगों को भी बता देता हूँ कि इस्लाम का पैग़म्बरऔर क़ुरान का अल्लाह और साथ उसमें विश्वास या सत्य मानने वाले लोगों को भी कि क्या यह काबिले क़ुबूल है?(३७) ऐ नबी! याद करो वह अवसर जब तुम उस व्यक्ति से कह रहे थे,जिसपर अल्लाहने और तुमने उपकार किया था। अपनी पत्नी को ना छोड़ और अल्लाह से डर। उस समय तुम अपने दिलमें यह बात छिपाए हुए थे,जिसे अल्लाह खोलना चाहता था, तुम लोगों से डर रहे थे, हालां कि अल्लाह इस का ज्यादा हक़ रखता है,कि तुम उस से डरो। फिर जब जैद उस से अपनी जरूरत पुरी कर चुका तो हमने उस (तलाक पाई हुई) औरत का तुमसे निकाह कर दिया,ताकि ईमान वालों पर अपने मुंह बोले बेटों कि पत्नियों के मामले में कोई तंगी ना रहे,जबकिवह उनसे

अपनी जरूरत पूरी कर चुके हों।और अल्लाह का आदेश तो कार्यान्वित होना ही चाहिये था।

(३८).नबी पर किसी ऐसे काम में कोई रुकावट नहीं है जो अल्लाह ने उसके लिए नियत कर दिया हो।यही अल्लाह का दस्तूर (सुन्नत) उन सब नबियों के मामले में रहा है जो पहले गुजर चुके हैं और अल्लाह का आदेश एक अकाट्य निश्चित फैसला होता है।(यह अल्लाह का दस्तूर है उन लोगों के लिए)जो अल्लाह के सन्देश पँहुचाते हैं और उसी से डरते हैं और एक अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते और हिसाब लेने के लिए बस अल्लाह ही काफी हैं।

(५०)को देखें!ऐ नबी! हमने तुम्हारे लिए हलाल करदी तुम्हारी वे बीवियाँ जिनके मेहर तुमने अदा किये हैं,और वे औरतें जो अल्लाह की प्रदान की हुई दासिओं में से तुम्हारी मिलकियत में आएंऔर तुम्हारी चचा जादऔर फूफी जादऔर मामुजाद और खाला जादबहने जिन्हों ने तुम्हारे साथ हिजरत की है और वह ईमान वाली औरतें, जिसने अपने आपको नबी के लिए हिवां किया हो अगर नबी उसे निकाह में लेना चाहे।यह छूट सिर्फ तुम्हारे लिए हैदुसरे ईमान वालों के लिए नहीं है।हमको मालूम है कि सामान्य ईमानवालों के लिए उनकी पत्नियों और दासियों के बारे में हमने क्या सीमाएं निर्धारित की हैं (तुम्हें उन सीमायों से हमने इसलिये मुक्त किया है) ताकि तुम्हारे ऊपर कोई तंगी न रहे, अल्लाह अत्तयंत क्षमा शील और दयावान है।

भाई जी ध्यान से पढ़ना! क्या कहा अल्लाह ने, ***“नबी याद करो वह अवसर,जब तुम उस व्यक्ति से कुछ कह रहे थे,जिस पर अल्लाह ने और तुमने उपकार किया था”*** यहाँ सवाल होता है कि अल्लाहने और तुमने,क्या अल्लाह इन्सान के साथ मिलकर उपकार करने लगते हैं?या इन्सान का और अल्लाह का उपकार एक जैसा होता है?जो इन्सान और अल्लाह दोनों मिलकर किसी मानव का उपकार कर रहे

है?उस आदमी से क्या कहा ***"अपनी पत्नी को न छोड़ और अल्लाह से डर"*** अल्लाह का सुझाव किसी की पत्नी को न छोड़ने से क्या मतलब? यहाँ जो सोचने और समझने की बात है वह यह कि, अल्लाह और नबी दोनों ने मिल कर उपकार किया जैद पर,नबी का उपकार अपनी बहन से निकाह किया है,पर अल्लाह का उपकार क्या है? यह आयत का शानेनुजूल (उतरना) क्या है देखें! नबी ने एक गुलाम को खरीदा था,जिसका नाम था ***जैद बिन हारिस***। उसे नबी ने अपना मुँह बोला बेटा कहा यानि गोदि लिया,दत्तख पुत्र, लोग उन्हें ***जैद बिन मोहम्मद*** ही कहते रहे,यानि मोहम्मद का पुत्र जैद। उस की शादी अपनी फूफी (बुवा) की लड़की, जो नबी की फुफेरी बहन थी, से शादी की,यानि नबी के बहनोई थे,उसकी बात चल रही है,कि अपनी पत्नी को न छोड़ ।और अल्लाह से डर,बात यह है कि उसी जैनब से नबी ने शादीकी ।तो अल्लाह यह दर्शाना चाहते हैं कि मुँह बोला बेटे की तलाक-शुदा पत्नी को निकाह करना जायेज है,यही कारण है इस आयत के उतरने का।***"उस समय तुम अपने दिलमें यह बात छिपाए हुए थे,जिसको अल्लाह खोलना चाहता था,तुमलोगों सेडर रहे थे"***। दिलमें कौन सी बात कौन छिपाए हुए थे? तो जवाब है नबी जैनब से शादी करने की बात दिल में छिपाए हुए थे!लेगोंसे डर रहे थे,यह अल्लाह कह रहे हैं!

भाई! डर इन्सान को कब लगता है?जब कोई गलत काम करे,मानवता के विपरीत काम करे! जब मानवता विरुद्ध कोई काम मानव करने लगता है, तो मानव मात्र के मन में भय, लज्जा,शंका उत्पन्न होते हैं। और यह हिन्दू, मुस्लिम,ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध, बहाई किसी वर्ग विशेष में नहीं अपितु समग्र मानव मात्र में यही भय, लज्जा, शंका,उत्पन्न करने वाले का नाम परमात्मा है। अब अल्लाह का काम देखें ***नबी इस बात को ज़ाहिर करने में डर रहे थे*** यानि जैनब से शादी करने की बात मन में थी, लोक लाज से डर रहे थे,अल्लाहने उसे

खोल दिया,यानि उस डरको ख़तम कर दिया। इसमें बहुत ही गम्भीर **बातें** हैं हमें विचार करना चाहियें,कि जो भय,गलत काम करने से होता है,उसी भय को अल्लाह ख़तम करदे! तो अल्लाह गलत काम करवाना चाहते हैं?हाय रे! इन्सान कहलाने वाले तेरी बुद्धि कब खुलेगी, कब तू इन्सान कहलाये गा? कारण यही बुद्धि रखने वाले का नाम ही इन्सान है,मगर हम इन्सान कहलाने वाली बात ही भूल गए ! ! ! !आगे चलें! ***"अल्लाहने उस बातको खोला जिसे नबी खोलना नहीं चाहते थे"***यहाँ अल्लाह और नबी के बारे में इस्लाम की मान्यता है,कि अल्लाह के दोस्त थे हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम। यह बात कैसी हो रही है किएक दोस्त लोक-लाज से डरकर कुछ बात छुपाना चाह रहे हैं,और उसीका ही दोस्त उस बात को लोगों में खोलना चाहते हैं?तो क्या यह कोई दोस्त का काम है,कि कोई गलत बात जो मन में है उसे दूसरा दोस्त लोगों में बता दे? मुश्फिक मियां! अगली बात पर ध्यान देना,***"फिर जब जैद उससे अपनी जरूरत पूरी कर चुका तो हमने उस(तलाक पाई हुई औरत) का तुमसेनिकाह करदिया"*** ।मैंजानना चाहता हूँ निकाह कहाँ हुई?***"ताकि ईमानवालों पर अपने मुँह बोले बेटों की पत्नियों के मामले में कोई तंगी न रहे जबकि वह उनसे अपनी जरूरत पूरीकर चुके हों । और अल्लाह का आदेश तो कार्यान्वित होना ही चाहिये था "।*** आपने लिखा आसमान में निकाह हुवा, यह आपने कहाँ पढ़ा है?मुझे लगा कि आप ने कुरान को आँखें बंद कर पढ़ी होगी!! कि निकाह कराने वाला अल्लाह है जो अल्लाह सातवें असमान पर हैं,तो क्या अल्लाह अपनी दोस्त की शादी कराने को काजी बने,तो क्या वह धरती पर, आकर निकाह कराई या असमान में? यही तो मैंने पुछा कि गवाह कौन-कौन थेऔर **मेहर** कितना तय किया गया था?कारण यहीं आयत ५० में अल्लाहने कहा ***"मेहर दिए बिना उस पत्नी से हमबिस्तरी ज़ायेज नहीं ऐ नबी! हमने तुम्हारे लिए हलाल***

करदी तुम्हारी वे पत्नियाँ जिनके मेहर तूमने अदा किये हैं।क्या इससे भी कोई और ठोस प्रमाणकि जरूरत है, इनसान बताने वालोंको।" आपने यह भी लिखा कि कोई ठोस प्रमाण प्रस्तुत किजीये,यह प्रमाण मैंने कुरान से ही दिया है, यह हिन्दी अनुवाद मौलाना फारुख खान का किया है, इन मौलाना फारुख खान से मेरी मुबाहिसा २००४ के १ अगस्त में आर्यसमाज खारी बावली दिल्ली में हुवा था। मैंने कुरान की भाषा में जो अल्लाहने कही है उसे लिखा। गौर से सबजने पढ़ना।एक बात यहाँ यह भी है कि यह आयत एक जरूरी मसले को लेकर उतरी,यानि इस से पहले अपने मुँह बोला बेटे की तलाक शुदा पत्नी से लोग निकाह नहीं करते थे,अल्लाह ने इस को इस्लाम वालों के लिए जायज कर दिया।सवाल यह है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहवसल्लमअगर अपने मनमें यह बात न छुपाते तो अल्लाह को यह आयत खोलना नहीं पढ़ता, या नाजिल न करनी पड़ती।तो क्या किसी व्यक्ति विशेष के जीवन में क्या घटना घटेगीऔर उसके आधार पर अल्लाह अपनी आयत उतारें उसे कलामुल्लाह तो कहा जा सकता है,किन्तु परमात्मा का मानव मात्र को दिया ज्ञान मानना कैसे संभव हो सकता है भला !!?

यही कारण है कि परमात्मा का दिया ज्ञान मानव मात्र के लिए, सृष्टी के आदि में ही मानव मात्र की भाषा में दिया है जिसका नाम वेद है,अनेक प्रमाण पहले मैं दे चुका हूँ। इस कसौटी को कुरान के साथ मिला कर देखना कहीं भी मेल खाता हो..... यानि पूरी कुरान हजरत मोहम्मद साहब को सामने रखकर अरब देश कीघटना,मक्का, मदीना आसपास के देशों का नाम, उनकी दिनचर्या, उसी काल की कुछ किस्सा कहानी को ही मनोरम तरीके से दर्शया गया है ।

कुछ भी हो कहने का तात्पर्य यह है किकुरान की आयत को अल्लाहने जरूरत होने पर ही हजरत जिब्राइल नामी फ़रिश्ते के माध्यम से उतार दिया, जिस में हजरत साहब के जीवन की कुछ घटनाएँ,उनकी

पारिवारिक जीवन जिसमें शादी भी शामिल हैं, जो अभी दर्शाया गया। तो एक व्यक्ति विशेष के जीवन कीघटना को ईश ग्रन्थ कहना यह इस्लाम वालों के लिए तो मानना संभव है,किन्तु पूरी दुनिया वालों के लिए कैसे संभव होगा?जैसा ऊपर दिखाया गया कुरान जो कलामुल्लालह है,जिस में अल्लाहने यह हुकुम मुसलमानों को दिया कि अपने मुँह बोला बेटे की तलाक शुदा पत्नी से निकाह कर सकते हैं।क्या यह आदेश हर मानव के लिए मान्य है? इस्लाम वालों को छोड़ यह काम हिन्दू (आर्य) लोगों में संभव ही नहीं,अब बताएं कि कुरान को ईश वाणी मानना कैसे युक्ति युक्त हो सकता है ?

आपने अंत में लिखा कि स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि जैसे विधवा स्त्री देवर के साथ संतानुत्पत्ति करती है, वैसे ही तुम करो।आपने इसको ठीक ही तो लिखा है कि स्वामीजी ने देवर का अर्थ लिखा, दूसरा वर (पति)। इसमें क्या गलत देखाई पड़ी आपको?दूसरी बात मैं नियोग प्रकरण को पहले लिख चुका हूँ।आपने लिखा...

"इसी के साथ पंडित महेन्द्रपाल आर्य के १५ प्रश्नों के इस्लाम और हिन्दू धर्मशास्त्र की रौशनी में विस्तृत व सही उत्तर समाप्त हुए। हम आशा करते हैं कि पंडित महेन्द्रपाल सत्य को स्वीकार करेंगे,और इस्लाम की पवित्र छाया में लौट आयें गे।"

जनाब मैं यह दुनिया वालों पर छोड़ रहा हूँ कि पढ़े लिखे लोग विचार करें कि इस्लाम ही पवित्र क्यों और कैसे? जिस समाज के लोग अपने मुँहबोला बेटे की तलाक शुदा पत्नी से, शादी ससुर करे भला!ओह! पवित्र कैसे हो सकता है?हुजूर मैं तो आपसे यही अर्ज़ करूँगा कि इस जंजालसे, अंध परम्पराऔर व्यक्तिपूजा से मुक्त हो कर मुझ जैसे,सत्यसनातन वैदिकधर्म की गोदमें आजायेंऔर इन हिन्दू मुस्लमान के पचड़े से बाहर निकलें। हम मानव बन कर ही जीना सीखें औरों को सुखी बनायें,जिसमें अपना भी सुख है। क्यों कि दुःख का कारण है

अविद्या, हम विद्वान बनकर ही उस दु:ख का निवारण कर सकते हैं । धरतीपर जबतक जीओ पेड़ बनकर जीओ,प्राणी मात्र को शीतल छाया देकर उन्हें लाभ पहुँचाओउन से धन्यवाद लो।और जाते वक्त ऐसा बीज बोकर जाओ कि वह वृक्ष बनकर औरों को शीतल छाया प्रदान करें,कि तुम्हारे न रहने पर भी औरों को वह छाया मिलती रहे। यही है मानवता की पहचान और अगर कहीं कांटे बनगए!तो जीते जी गाली सुनते रहोगेऔर मरने के बाद भी गाली हीमिलेगी। मेरे अच्छे मुश्फिक भाई! आपने मुझे उस्ताद मान कर कुछ पूछा था मैंने अपनी सुझाव आपके लिए और इस पुस्तक को सभी पढने और सुनने वालों को दी है,अब आप पर निर्भर है आप क्या करें गे?

मनुष्य मात्र को चाहिये सत्य को धारण करना और असत्य को छोड़ देना इसी का नाम मानवता है,तो आपका स्वागत है अगर आप मानवता को अपनाना चाहतेहैं तो आप को पुन: निमंत्रण है...

मैं पंडित महेन्द्र पाल आर्य धरती के सभी मत पंथ वालों को यही सुचना देना चाहता हूँ कि मानव मात्र का धर्म एक है,धर्म ईश्वर प्रदत्त होता है,मत पंथ किसी मनुष्य के द्वारा ही जन्म दिया जाता है। जिसका नियम,कानून उसके बाद बनाया जाता है,उससे पहले नहीं था,पहले जो मानव थे तो क्या उनके लिए कोई कानून नहीं रहा होगा! इसमें सृष्टि कर्ता पर दोष लगेगा।

हम इसको दुनिया से भी सीख सकते हैं,देख सकते हैं,ले सकते हैं,जैसा सरकार किसी रुट पर बस या ट्रेन चलाती है,तो पहले उसका रुट तैय होता है, बिना लाइन या रुट के कोई गाड़ी नहींचलती। तो जो विश्व के रचनाकार हैं जिन्हों ने मानव बनाया, तो उसे चलने के लिए कोई नियम कानून न दे, कैसे संभव होगा भला? फिर वह नियम मानव मात्र के लिए न हो तो उसपर दोष लगेगा, मानव का चलना संभव भी नहीं होगा, और बार-बार ज्ञान दे तो भी दोष लगेगा,कारण पहले वाले

कहेंगे उसका दिया ज्ञान हमारे पास है।दुसरे बोलेंगे कि हमारे पास असली ज्ञान है फिर तीसरे और चौथा भी यही कहेगा इस प्रकार मानव-जाति में आपस में मत भेद पैदा हो जाएंगे। झगड़े का घर बनता रहेगा,अपनी पुस्तक और किताब मे ही लोग उलझ कर रहेंगे,*जो आजहो रहा है... पूरी दुनिया के सामने है, यह सभी दोष उस दुनिया के बनाने वाले पर ही लगेगा।*

यही कारण बना कि आदि सृष्टि में परमात्मा ने मानव मात्र को अपना ज्ञान दिया,जैसा हम जो मोबाईल से काम लेते हैं खरीदते समय उसके साथ एक किताब हर कम्पनी वालों ने दी है और वह मोबाईल खरीदते वक्त ही दिया है।अगर बाद में देता तो उसे चलाना संभव न था ठीक इसी प्रकार ज्ञान के बिना कर्म का करना कैसे संभव होगा?जब हमारे पास किसी का फोन आता है, तो ऊपर निचे दो बटन लगे हैं,हम निचे वाली बटन को दबाते हैं तो,फोन करने वाले के साथ जुड़ जाते हैं और अगर ऊपर वाली बटन को दबाएँ तो फोन करने वाले के साथ जुडने के बजाये जुदा हो जायेंगे।तो यह बटन को दबाने के लिए चाहिये ज्ञान, और फिर उस बटन को दबाना है कर्म, तो ज्ञान के बिना कर्म का करना संभव नहीं हो सकता। भूख का अहसास करना ज्ञान है,भूख को भोजन के द्वारा शांत करना कर्म है। यहाँ भी ज्ञान के बिना कर्म का करना संभव न होगा? अब मैं दुनिया वालों से पूछना चाहता हूँ कि मानव मात्र को भूख, मानव के जन्म कालसे है,या आजसे है। भले ही लोग आगसे बनाये बिना खाते हों,कच्चे ही सही, खाना तो कर्म है भूख का अहसास होना तो ज्ञान है,तो यह कबसे हैऔर किनके लिए है?क्या यह कोई बता सकता है कि यह भूख सिर्फ हिन्दुओं को,मुसलमानों को, सिख, ईसाई, जैनी, बौधिस्ट लोगों को ही है?या यह सभी मानव मात्र के लिये है? फिर उस बनाने वाले ने ज्ञान सब को बराबर दिया या अलग अलग दिया?यह आजसे दिया अथवा दुनिया के बनने के साथ साथ दिया?

जब हम इन सभी बातों में मतभेद नहीं रखते,तो फिर परमात्मा के दिये हुए ज्ञान में मतभेद क्यों? ठीक इसी प्रकार दुनिया बनाने वाले बिना पक्षपात के मानव मात्र को अपना ज्ञान प्रथम से न देते तो मानव मात्र का एक कदम भी चलना नहीं होता। आयें उस ज्ञान को पहचानें! तदनुसार उसपर चल कर ही प्राणी मात्र का कल्याण हम कर सकते हैं, इसमें आनेका स्वागत है।

मेरा संदेश

कोई यह न समझे कि मैं सत्य से अलग हट रहा हूँ. मैं आज भी उसी बात पर टिका हूँ, जो मैंने पत्रक में लिखा है, इस्लाम एंड हिंदूइस्म के मुश्फिक ने लिखा, "मेरे दिए हुए जवाब से संतुष्ट होकर सीधा इस्लाम को स्वीकारें गे." विचार क्या करना है ! मैं उसके जवाब में दुनिया वालों को वह निर्णायक जज बनाता हूँ कि आज आप लोग ही फैसला करें कि मैं सीधा इस्लाम स्वीकार करूँ या मुश्फिक अपने पूर्वजों के सत्य सनातन वैदिक धर्म में लौटें? आज हम सही जगह पर खड़े हैं. कि धर्म और मत-पंथ जो मानव निर्मित हैं उसे धर्म जाने? या ईश्वर प्रदत मानव मात्र का धर्म एक है, हमें उसे स्वीकार करना चाहिए? मेरे द्वारा सत्य को प्रमाणित करने पर कुछ मतान्ध लोग तिलमिला कर मारने की धमकियां देने लगे. मोबाइल तथा नेट के माध्यम से गाली गलोच पर उतर आये.

मैं तो सहज भाव से उन मतान्धों को यही कहूँ गा...कि अगर मैं इस्लाम की दृष्टिमें गुमराह हो गया, तो ***कुरान अनुसार गुमराह करने वाला अल्लाह ही तो है!***अगर आप लोग चाहते हैं कि मैं इस्लाम में वापिस आ जाऊं, तो प्यारो! वह भी अल्लाह के हाथ में ही है. कारण, हिदायत देने वाला भी वही है. जो मैं पुस्तक में विस्तार से लिख चुका हूँ। आप इस्लाम वालों का अल्लाह अगर आप लोगों की फरियाद नहीं

सुनता है तो आप वैदिक धर्म को अपना लें, और दुनिया में मानव समाज को परमात्मा का अमृत पुत्र होने का परिचय दें। तथा सत्य को स्वीकार कर, मानव समाज में हिन्दू-मुस्लिम के भेद-भाव को मिटा कर धरती को स्वर्ग बनाने का संकल्प लें.